"मैं तो एक
विनम्र सत्य-शोधक
हूँ। मै अधीर हूँ, इसी
जन्ममें आत्म-साक्षात्कार कर
लेना चाहता हूँ। मुझे नाशवान
ऐहिक राज्यकी कोई अभिलाषा नहीं
है। मैं तो ईश्वरीय राज्य पानेका प्रयत्न
कर रहा हूँ। वह है मोक्ष। मेरे लिए तो मुक्तिका मार्ग है,
अपने देशकी और उसके द्वारा मनुष्य-जातिकी
सेवा करनेके लिए सतत परिश्रम करना
और ऐसी सेवाएँ करते हुए मृत्यु
की गोदमें जाना पसन्द करूँगा।
मैं संसारके भूतमात्रसे अपना
तादात्म्य कर लेना
चाहता हूँ।"

—गाधीजी

गांधीजी

श्रद्धाञ्जलियाँ

१

सूची

❀

चित्र-सूची

❀

प्रकाशकका वक्तव्य

जिस समय भारतमें नवीन जागरणका उदय हुआ और देशको स्वतन्त्र करनेका स्वप्न साकार करनेका प्रयत्न देशके कर्णधारोंने आरम्भ किया उस समय बापूकी प्रेरणासे काशी विद्यापीठकी स्थापना हुई। समय समयपर वह इसे सञ्जीवनी शक्ति प्रदान करते रहे। उनके आशीर्वादके फलस्वरूप विद्यापीठने देशके स्वातन्त्र्य संग्राममें पूर्ण सहयोग किया। यहाके अध्यापक तथा विद्यार्थी इस महान यज्ञमे योगदान करते रहे। आज इसके अनेक अध्यापक तथा स्नातक विभिन्न रूपसे राष्ट्रके निर्माण कार्यमे संलग्न है।

बापूके अनाशकित निधनके पश्चात् विद्यापीठने अपना कर्त्तव्य समझा कि बापूके चरणोमे श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर अपनेको गौरवान्वित करे। सोच विचार करनेके पश्चात् यह निश्चय किया गया कि श्रद्धाञ्जलिका समुचित स्वरूप बापूके विचारोको कमसे कम व्ययमे भारतके कोने कोनेमे पहुंचा दिया जाय। आज जब वे हमारे सम्मुख नहीं है, उनका संदेश देशकी प्रत्येक झोपड़ीतक पहुचा देना उनका सबसे बडा समादर है। इस हेतु यह आयोजन किया गया कि इस अवसरपर श्रद्धाञ्जलि स्वरूप पचीस खण्डोंमे एक ग्रथमाला प्रकाशित किया जाय जिसके प्रथम कुछ खण्डोमे देश विदेशके महान व्यक्तियो तथा सस्थाओंकी श्रद्धांजलियां हों तथा अन्य खण्डोंमे बापूके लेख, प्रवचन, भाषण इत्यादिका समावेश किया जाय। प्रत्येक खण्ड बापूके विभिन्न चित्रोंसे सुसज्जित रहे।

इस आयोजनमे व्यापारिक दृष्टिकोण स्वभावतः नहीं हो सकता था। कमसे कम मूल्यसे, सुंदर रूपमे, जो सामग्री प्रस्तुत की जा सकती हे, वही प्रयत्न किया गया हे। प्रकाशनके लिए काशी विद्यापीठ तथा भार्गव भूषण प्रेसका सहयोग है।

इस मालाके लिए देशके सभी भागोंसे सामग्री एकत्र की गयी है और महात्माजीसे संपर्क रखनेवाले अनेक सज्जन सहायता दे रहे है ओर अनेकने

सहायता देनेका वचन दिया है। सबका आभार अंतिम खंडमें स्वीकार किया जायगा। प्रांतीय तथा केन्द्रीय सरकारने कागजकी व्यवस्था की तथा अन्य सामग्रियोंसे सहायता की है, उसके भी हम आभारी है।

इस ग्रंथमालाका संपादन प्रसिद्ध पत्रकार तथा राजनीतिक कार्यकर्त्ता और गांधीवादी पंडित कमलापति त्रिपाठीने करना स्वीकार कर लिया है। आप विद्यापीठके स्नातक हैं, इसलिए आपने यह भार सहर्ष स्वीकार कर लिया है। इनके साथ संपादन कार्यमें श्री कृष्णदेवप्रसाद गौड, श्री काशीनाथ उपाध्याय 'भ्रमर' तथा श्री करुणापति त्रिपाठी संलग्न हैं। इस खंडके प्रकाशनमें श्री विद्यारण्य शर्मा, श्री कृष्णदेव उपाध्याय, श्री चन्द्रशेखर अस्थाना, श्री लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय' तथा श्री निरंजनकुमारने सहयोग प्रदान किया है। यह प्रयास बापूके विचारोंका प्रसार तथा मानव जातिकी सेवा करनेमें सफल हो, यही हमारी कामना है। हमें विश्वास है कि हमारे इस कार्यमें देशकी, जनताकी सहायता तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

❀

राष्ट्रपिता

चिर-निद्रामें लीन अमर बापू। वक्षपर गोलियोंके व्रण स्पष्ट देखे जा सकते हैं

आभार प्रदर्शन

आल-इंडिया रेडियो, नयी दिल्ली, बम्बई तथा लखनऊ—श्रद्धाजलियोंके लिये

मिनिस्ट्री आफ इनफारमेशन एण्ड ब्राडकास्टिंग, गवर्मेण्ट आफ इण्डिया, नयी दिल्ली – चित्र तथा श्रद्धाजलियोंके प्रकाशनकी अनुमतिके लिये

सूचना विभाग युक्तप्रांतीय सरकार, लखनऊ – चित्रों तथा श्रद्धाजलियोंके संकलनके लिये

माननीय श्री श्रीप्रकाश, पाकिस्तान-स्थित हिन्दके हाई कमिश्नर — मुख-पृष्ठके चित्रके लिये

श्री कमल कुमार, चित्रकार, दिल्ली – चित्रोंके लिये

श्री कांजीलाल, चित्रकार, 'ससार', काशी, – चित्रकारिताके लिये

माननीय श्री रफी अहमद किदवई, माननीय डाक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी, श्री श्रीपत, श्री एम० एल० मेढ, श्री उमाशकर—कागजकी व्यवस्थाके लिये

श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी, डिप्टी-डाइरेक्टर जनरल, आल-इण्डिया रेडियो, नयी दिल्ली, श्री आर० एल० हाडा, सूचना अफसर, नयी दिल्ली, श्री विद्याभास्कर, सूचना अफसर, हिन्दी विभाग, लखनऊ – सकलनमे सहायताके लिये

श्री रामनाथ अग्रवाल, मालिक, लक्ष्मी फोटो एनग्रेविंग कम्पनी, इलाहा-बाद – सुन्दर ब्लाकोंके लिये

श्री ईगल प्रिंटिंग वर्क्स, कलकत्ता – सुन्दर मुखपृष्ठकी छपाईके लिये

❀

आमुख

'गांधीजी' ग्रन्थमालाके संपादनका पावन कार्य हम लोगोको सौंपा गया, यह हम अपना सौभाग्य समझते है। भारतीय राष्ट्रके जीवनाकाशमे जो तीस साल तक अखंड मार्तंडकी भांति चमका उसके सहसा निधनसे देश धराशायी हो गया। इस समय देश निष्प्राण सा हो गया है। जिस व्यक्तिने पतित भारतके मुर्दोमें प्राण फूंक दिया, जिसके तपसे हमारी मातृभूमि स्वतंत्र हुई, जिसकी उज्ज्वलताने समस्त मानवताको उद्दीप्त कर दिया, उस विभूतिकी रक्षा अपनी स्वतन्त्रताके उदयके साथ हम न कर सके। अभागा भारत वापूको खोकर आज सब खो चुका है। जिस व्यक्तिने सदा शरीरकी उपेक्षाकी, आत्माकी महत्तापर विश्वास किया, उसकी आत्मा शरीरकी शृंखलासे मुक्त हो गयी, पर मानवताके इस दीपकके बुझ जानेसे दुनिया आज अन्धेरी हो गयी है।

देश रोया, विदेश रोया। मानवके हृदयोंमे लहरे उठीं और शात हो गयीं। अब हमारा कर्त्तव्य हो गया कि उस देवदूतकी अमर वाणी सुलभ, सुन्दर और सत्य रूपमें संसारके अतंस्तल तक पहुंचानेका प्रयत्न करे। महात्माजीका व्यक्तित्व इतना व्यापक था कि सैकडों लेखक उनके गौरवका गान करके अपनी लेखनीको पवित्र वनायेगे और सहस्रों प्रकाशक उसे प्रकाशित कर अपनेको धन्य समझेगे।

हम लोगोंने यह भार इसलिए अपने ऊपर लिया कि वापूने जो कुछ जिस रूपमे जिस भावनासे, जिस दृष्टिकोणसे कहा, वही सवके सामने उपस्थित किया जाय। वापूने जो कुछ कहा वह एकदेशीय नहीं रहा। विश्वके मनीषी, विचारक और विद्वान यह स्वीकार करते है कि वापूकी विचारधारा भारत नहीं प्रत्युत आधुनिक जगतके सन्मुख प्रस्तुत महान् सांस्कृतिक संकटके निराकरणका उपाय उपस्थित करती है। वापूका आदर्श और व्यवहार,

उनकी दृष्टि और कल्पना, उनका प्रयोग और पथ महती जागतिक संस्कृतिको वह उज्ज्वल देन है जिसके लिए मानव समाज उनका चिर-ऋणी रहेगा।

जहाँतक हम भारतीयोंका सम्बन्ध है, महात्माजीके पार्थिव शरीरके अभावमें उनका सन्देश, उनका उपदेश, उनका आदेश ही हमारा सबल है। हम इस विश्वाससे इस ग्रंथको जनताके समक्ष रख रहे हैं कि उनके विचारोंका इसके द्वारा प्रसार होगा और जो जड़ता हममें क्षणिक आ गयी है, उसका विनाश होगा।

इस ग्रंथमें जहाँ महात्माजीने जो भाषा प्रयोग की है, वही रखी गयी है। अंग्रेजी भाषा में जो कहा, लिखा या बोला गया है, उसका हिन्दीमें अनुवाद कर दिया गया है। श्रद्धाञ्जलियोंमें जिसकी जैसी भाषा रही है, वही रहने दी गयी है। जिन्होंने अंग्रेजी अथवा किसी विदेशी भाषामें कुछ कहा है उसका अनुवाद हिन्दीमें कर दिया गया है। जो उत्तरदायित्व हमने अपने ऊपर ले लिया है उसका अनुभव हम कर रहे हैं। हमें आशा है बापूकी आत्मा हमें अपने प्रयत्नमें सफलता प्रदान करेगी। चेष्टा करनेपर भी मुद्रणकी कुछ भूलें रह गयीं, जिसके लिए हमें खेद है।

सम्पादक मण्डल

❀

साम्प्रदायिकताकी वेदीपर

३० जनवरीका संध्या समय था। पांच बज चुके थे। सदाकी भांति प्रार्थनाके लिए बिड़ला भवनसे बापूने प्रस्थान किया। उस समय कोई नहीं जानता था कि यही उनका महाप्रस्थान होगा। साथमे उनकी पौत्री आभा गाधी तथा मनु गाधी थीं। प्रार्थनाके मैदानमे नित्यकी भाति जनता प्रवचन सुननेके लिए एकत्र थी। वहां पहुचते ही एक युवक बापूके चरण छूनेके लिए झुका। उनके साथकी बालिकाओका ध्यान उधर गया कि पिस्तौलसे धड़ाधड़ तीन गोलिया बापूके वक्षस्थलको लक्ष्य बनाकर निकटसे चलायी गयीं। गोलिया पेटमें लगीं। गोलिया लगते ही बापू आगेकी ओर झुके। आक्रमणकारीकी ओर उनके कर-बद्ध हो गये, मानो प्रार्थना कर रहे हों और उनके मुखसे "राम" शब्द निकला। इसके बाद फिर कभी न उठनेके लिए वे गिर पड़े। इस संबधमे जो युवक पकडा गया वह महाराष्ट्रीय है और उसकी अवस्था छत्तीस सालकी है। राष्ट्रीय-स्वय-सेवक सघका कार्यकर्त्ता और एक साधारण पत्रका सपादक है। महात्माजीको लाश बिडला भवनमे उठा लाये। कुछ क्षणतक उनका प्राण था। पांच बजकर चालीस मिनटपर केवल उनका पार्थिव शरीर रह गया।

देशकी प्रतिक्रिया

मरनेके कुछ ही क्षण पश्चात् प० जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, लार्ड माउण्टबेटन, दीवान चमनलाल, देवदास गांधी तथा उनके लड़के, केन्द्रीय मन्त्रिमंडलके सदस्य बिडला भवन पहुच गये। बापूके मुखपर प्रसन्नताके चिन्ह थे। गीताका पाठ हो रहा था और उनका प्रिय गीत 'वैष्णव जन तो तेने कहिये' गाया जा रहा था। वह उसी कमरेमे चारपाईपर लिटा दिये गये थे जिसमे कुछ ही दिन पहले हिन्दू-मुसलमानोकी एकताके लिए उन्होंने उपवास किया था।

६ बजते बजते सारे देशमे राष्ट्रपिताके निधनका शोकपूर्ण समाचार फैल गया। प्रति क्षण रेडियोसे समाचार विक्षेप होने लगा। देशके प्रत्येक प्राणीके हृदयमे महात्माजीके प्रति कितना प्रेम, कितनी श्रद्धा, कितनी भक्ति थी इसीसे आंकी जा सकती है कि शोकका सागर लोगोके हृदयमें उमड़ आया। प्रत्येक व्यक्तिको जान पड़ा कि मेरे ही परिवारका अतिप्रिय प्राणी चला गया। लोग किंकर्त्तव्यविमूढ हो गये।

पंडित जवाहरलाल नेहरूने रेडियोसे भारतीय जनताको इस सवंधमे वक्तव्य दिया। उनके स्वर लडखड़ा रहे थे, वाणी कांप रही थी। ऐसा जान पड़ता था कि हृदय टूट गया। फिर सरदार पटेलने दुःख और दर्दसे भरी भाषामे वापूके प्रति अपनी भावना प्रकट की। मृत्युके कुछ ही समय पहले सरदार पटेल वापूसे वात करके लौटे थे। गोलीकाण्डके कुछ दिन पहले वापूपर वम फेकनेका प्रयत्न किया गया था। उन्होने मना कर दिया था कि मेरे साथ कोई रक्षक न रहे और न प्रार्थना सभामे किसीकी तलाशी ली जाय।

मरनेके कुछ ही दिन पहले वापूने कहा था कि हिन्दू और मुसलमानोके परस्पर विद्वेषपूर्ण भावोंसे मेरा हृदय दुःखी है और अव मेरी इच्छा नहीं होती कि अधिक जीऊँ।

मरनेके वाद देशके हिंदू-मुसलमान, हिन्दुस्तान पाकिस्तान, राव-रक, देश तथा विदेशके लोगोने वापूके प्रति अपनी मनोभावना प्रकट की। अमेरीकामे सुरक्षा समितिने तीन दिनों तक काम बद रखा। ससार की सभी राजधानियोके झण्डे झुक गये। तेरह दिनोंतक भारत सरकारकी ओरसे शोक मनाया गया। जबसे इतिहासकी रचना हुई संसारमे किसी व्यक्तिकी मृत्युके अवसरपर कभी इतना व्यापक, इतना हार्दिक तथा इतना मार्मिक शोक नहीं मनाया गया।

महाप्रयाण

मृत्युकी रातभर महात्माजीके निकट लोग जागरण कर रहे थे। "रघुपति राघव राजाराम" का कीर्तन होता रहा। कुछ लोगोकी सम्मति थी कि महात्माजीका शरीर औषधि लगाकर कुछ दिनोंतक रखा जाय किंतु उनके संपर्कवालोने बताया कि उनकी स्वयं यह इच्छा न थी। ३१ जनवरीको यमुनाके तट, राजघाटपर उनके शरीरका दाह-सस्कार करना निश्चय किया गया। दिल्ली तीर्थ हो गया, देश भरसे लोग वायुयानसे, रेलसे, कारसे, जिस भांति पहुंच सकते थे,

गये। प्रातःकालसे ही बिड़ला भवनके निकट, राहमें दोनों ओर तथा राजघाटपर भक्तोंकी भीड़ एकत्र होने लगी।

बिड़ला भवनमें महात्माजीका शरीर चारपाईपर लिटाया हुआ था। पांवसे पेटतक उनका शरीर धवल खादीसे ढका था। नेत्र बंद थे। गोली लगे व्रण दिखाई देते थे। उनकी ग्रीवामें खादीकी माला पहना दी गई थी। धूप जल रहा था और धरतीपर गुलाबकी पखुरियाँ बिछा दी गयी थीं। उनके परिवारके लोग तथा देवदास गांधी रातभर जागते रहे। अर्थी निकलनेके समय अन्य लोगोंके अतिरिक्त सरदार पटेल, पंडित गोविंदवल्लभ पन्त आदिके साथ राजकुमारी अमृतकौर उनके चरणोंके समीप बैठी थीं।

ग्यारह बजनेके कुछ पहले पण्डित जवाहरलाल नेहरू वहाँ पहुंचे। उनका मुख पीड़ासे उद्विग्न था। उन्होंने शव ले जानेके सम्बन्धमें आवश्यक बातें बतायीं। महात्माजीकी पौत्री, उनके परिवारके लोग तथा प्यारेलाल महात्माजीके शरीरको बाहर लाये। शवके पीछे नेहरूजी, सरदार पटेल तथा मन्त्रिमंडलके सदस्य थे। बापूके शरीरपर प्रायः संसारके सब देशोंके प्रतिनिधियोंकी ओरसे मालाएं चढ़ायी गयी थीं, इनकी संख्या सौ से अधिक थी। गवर्नर-जनरल लार्ड माउंटबेटन अपनी दो पुत्रियों सहित बिड़ला भवन पधारे। वह बाहुपर काला वस्त्र लगाये हुए थे।

सेनाकी ओरसे मोटर गाड़ी थी जिसपर ऊँचा मंच बनाकर बापूका शव रखा गया। गाड़ी उज्ज्वल खादी तथा पुष्पोंसे सजी थी। चरणोंके पास सरदार पटेल बैठे थे. पार्श्वमें रामदास गांधी और उन्हींके निकट सरदार बलदेव सिंह रक्षा मंत्री थे।

११-४५ बजे बिड़ला भवनसे गाड़ी बाहर निकाली गयी। उस समय शंख ध्वनि तथा 'महात्मा गांधीकी जय' की ध्वनिसे आकाश गूंज उठा। गवर्नर-जनरल उपस्थित थे और उसी समय पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा युक्तप्रांतकी गवर्नर सरोजिनी नायडू भी पहुंच गयीं।

जिस मोटर गाड़ीपर अर्थी रखी गयी थी उसे स्थल, जल तथा वायुसेनाके सिपाही खींच रहे थे। महात्माजी जीवनपर्यन्त यंत्रके विरोधी थे इसलिये यंत्र द्वारा गाड़ी नहीं चलायी गयी। अर्थीके नीचेकी ओर रक्षा मंत्री श्री बलदेव सिंह, दाईं ओर प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू, और बाईं ओर उप-प्रधान मंत्री सरदार पटेल तथा पं० नेहरूके पीछे देवदास गांधी सामने बैठे थे। गांधीजीके

परिवारके लोग आगे-आगे चल रहे थे। गुरखा तथा पैदल-सेनाके लोग आगे-आगे राह ठीक करते थे।

बिडला भवनसे राजघाटतक पांच मीलकी दूरी है। सारी राह, पथ, पटरियाँ, वृक्ष, घरोंकी छतें जनसमूहसे परिपूर्ण थीं। मनुष्यका सागर उमड पडा था। राह भर लोग पुष्प वर्षण कर रहे थे। इतनी महती भीड होनेपर भी चारों ओर शांति थी। केवल थोडी थोड़ी देरपर 'महात्मा गाधीकी जय' की ध्वनि ही सुनायी पड़ती थी। हिंदू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, एंग्लो-इंडियन तथा यूरोपियन सभी इस भीडमे थे। स्त्रियोंकी आखोसे आंसू निकल रहे थे। डाक्टर राजेंद्रप्रसाद भी वर्धासे पहुँच गये थे और आचार्य कृपालानी भी।

दिल्ली दरवाजेके पास शाही वायुसेनाके वायुयानने नीचे आकर पुष्प वृष्टि की और इसी प्रकार थोड़ी-थोड़ी देरपर ऐसा ही होता रहा। सारा वायुमडल पुष्पोकी पखुरियोंसे भर गया था।

चार बजकर बीस मिनटपर शव राजघाटपर पहुचा। लाल किलेके पीछे जमुना पुलके पूरब सरकारी निर्माण-विभागने बारह फुट लंबा, बारह फुट चौड़ा तीन फुट ऊँचा मंच बनाया था, उसीपर साढ़े चार बजे अर्थी रखी गयी। यमुना जलसे शवको स्नान कराया गया। पंद्रह मन चन्दनकी लकड़ी, चार मन घी, एक मन नारियलकी गरी और पंद्रह सेर कपूरसे अन्त्येष्टि क्रिया की गयी। वैदिक मंत्रोंसे पंडित रामधन शर्माने संस्कार आरम्भ किया। अगणित पुष्प मालाएँ अर्थीपर रखी हुई थीं। सबसे पहले चीनी राजदूतने अर्थीपर माला रखी, इसके पश्चात् और राजदूतोंने तथा अन्य लोगोंने। ४-५५ मिनटपर देवदास गाधीने दाह-संस्कार किया। लेडी माउण्टबेटन मद्राससे वायुयानसे आ गयीं थीं।

शव जल जानेके बाद उसकी राख, लकड़ीका टुकडा तथा और शेष वस्तुका कुछ चिन्ह लेनेके लिए जनता प्रयत्न करती रही। सूर्यास्त होते होते महात्माजीका शरीर भी जलकर राख हो गया। सैनिक रक्षाके लिए नियुक्त कर दिये गये थे। रविवार, पहली फरवरीके प्रातःकाल अनेक सज्जन तथा नेता राजघाट गये। जहा महात्माजी जलाये गये थे वहां पडित जवाहरलालने माला अर्पित की। रविवारके दिनभर दर्शनके हेतु लोगोका ताता बंधा हुआ था। सोमवारको वैदिक मन्त्रोके साथ विधिपूर्वक डेढ घटे पूजाके पश्चात् महात्माजीका फूल एकत्र किया

गया। उसे गंगाजलसे अभिसिक्त किया गया और तांबेके पात्रमें रखा गया। तीर्थ-राज प्रयागके संगममें विसर्जन करनेके लिए पात्रको सुरक्षित रखा गया। फूल एकत्र करनेके अवसरपर राजनीतिक हिन्दू-मुसलिम नेता, विदेशी राजदूत, अनेक प्रांतोंके गवर्नर तथा देशी विदेशी पत्रकार आदि एकत्र थे।

दिल्लीमें विसर्जनका प्रबंध केन्द्रीय सरकारके विद्युत तथा खान-विभागके मन्त्री माननीय नरहरि विष्णु गाडगिलकी देख रेखमे हुआ। नगरके विभिन्न भागोंसे गुरुवार बारह फरवरीको जुलूस निकले जो रामलीलाके मैदानमे एकत्र हुआ। राजघाटसे फूल सुन्दर तांबेके पात्रमे रखकर रथपर रखा गया। रथ कांग्रेस सेवा-दलके स्वयंसेवक खींच रहे थे। यमुनाके पुलके तीन खभे सजाये गये थे और पुलपर बैठनेका भी प्रबंध किया गया था। पुलके पास ही अस्थि विसर्जन किया गया। इस अवसरपर भी विदेशी राजदूत, देशी विदेशी पत्रकार, राजनीतिक नेता एकत्र थे। दिल्लीका जनसमूह यह अन्तिम दृश्य देखनेके लिए एकत्र खड़ा था। विस-र्जनके पश्चात् सार्वजनिक सभा हुई।

भारतके विभिन्न नगरों तथा भारतके बाहर भी उन देशोंसे जहां भारतवासी रहते है, फूलकी मांग थी। सभी लोग अपनी श्रद्धाभक्ति प्रदर्शित करना चाहते थे। तीर्थराज प्रयागमे फूल लानेके लिए स्पेशल ट्रेनकी व्यवस्था की गयी। यह गाडी हरे रंगकी थी जो साढ़े छः बजे प्रातःकाल ११ फरवरीको दिल्लीसे चली। दिल्ली स्टेशनपर दृश्य देखनेके लिए कई लाख जनता एकत्र थी। चार सौ यात्री इस गाडीमे थे जिनमे महात्मा गांधीके परिवारके लोग, भारत सरकारके विभागीय अध्यक्ष तथा कर्मचारी, पत्रकार, सैनिक तथा पुलिस विभागके कुछ उच्च पदाधिकारी थे। पंडित जवाहरलालने दिल्लीमे ही सब प्रबंध देख लिया था। वह वायुयानसे प्रयाग गये। रेलवेके सदस्य डाक्टर जान मथाईने स्पेशलका सब प्रबंध किया था। गाड़ी खद्दरके तिरंगे झंडोंसे सुशोभित थी, जो झुके हुए थे। गाडीपर अशोक-चक्र तथा सिंह-मुद्रा अंकितकी गयी थी। गाड़ीके बीच ऊँची चौकीपर मेज रखी थी। चौकीपर खद्दर बिछा था और खद्दरका ही ऊपर छत्र था। मेज तिरंगी रस्सीसे घिरा था। इसी मेजपर ताम्रपात्र रखा था। जिसमे महात्माजीका फूल था। पात्रकी रक्षाके लिए चार सैनिक नियुक्त किये गये थे और जहा-जहा गाड़ी खडी होती थी, छः सैनिक रक्षाके लिए खड़े हो जाते थे।

राहमे जहा-जहा गाड़ी खड़ी हुई अपार जनसमूह अस्थिके दर्शनके लिए एकत्र हुआ। गाजियाबाद, अलीगढ, टूंडला, कानपुर आदि स्टेशनोंपर लाखोंकी भीड़ एकत्र हुई। प्रयागमे दूर दूरसे लोग पहुच गये थे। स्टेशनसे लेकर संगमतक किनारे किनारे लोग पुष्प लिये अस्थिके अंतिम प्रणामके लिए खड़े थे। सगम तथा स्टेशनपर बहुत अधिक जनता थी। कुंभ मेलाके कारण भीड़ और बढ गयी थी। तीन सहस्र पुलिस, सैनिक, नाविक तथा वायुयान चालकोंके हाथोमे प्रबध था। पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल तथा मौलाना अबुल कलाम आजाद सध्याको ही आ गये थे तथा सारे प्रबंध और व्यवस्थाका निरीक्षण प्रधान मत्री तथा उप-प्रधान मंत्रीने किया।

दिल्लीसे जब स्पेशल चली और जबतक वह प्रयाग पहुची तबतक बराबर जागरण होता रहा, लोग चरखा चलाते रहे तथा 'रामधुन' गाते रहे। इलाहाबादसे गाड़ी जब सत्तर मीलकी दूरीपर थी, वहीं खडी कर दी गयी और नौ बजे प्रातःकाल इलाहाबाद पहुची। सारे कार्यक्रमकी व्यवस्था ऐसी की गयी थी कि सब कार्य ठीक समयपर सपादित हुआ। जब गाडी खडी हुई तब पडित नेहरू तथा सरदार पटेल अस्थिघटको गाड़ीमेसे बाहर लाये तथा सुसज्जित रथपर रखे।

अस्थि ले जानेके लिए विशाल रथका निर्माण किया गया था। उसपर ऊचा मच बनाकर अस्थिका घट रखा गया था। मच तिरगे झण्डे तथा पुष्पोसे सुसज्जित था। उसपर सुन्दर महराब बना था। राहभर पुष्पोकी वर्षा हो रही थी। रथपर पंडित जवाहरलाल नेहरू, पंडित गोविन्द वल्लभ पंत, सरदार पटेल, मौलाना आजाद, रफी अहमद किदवई थे। इतना जनसमूह होनेपर भी कहीं किसी प्रकारकी दुर्व्यवस्था और गड़बडी नहीं हुई। लोगोंमे गभीरता अधिक थी। राहभर रेडियोसे जिस प्रकार दिल्लीसे शवयात्राके अवसरपर घटनाओका विक्षेप होता रहा, यहां भी हो रहा था।

जुलूसके आगे आगे एक मोटरकार चल रही थी जिसमें लाउडस्पीकर द्वारा प्रार्थनाके गीत गाये जा रहे थे। इसके पश्चात् बहुत सी जीप गाडिया थी और उनके पीछे अश्वारोही सेना, फिर गोरखा तथा अन्य सेनाओंके सैनिक थे। देवदास गांधी नगे पाव आगे आगे चल रहे थे। मैदानमे पहुचनेके पश्चात् अस्थि-

घटका मोटर एक विशेष नौका (डॅक) पर रखा गया। संगमपर जब डॅक पहुचा तो वही प्रार्थना की गयी जो महात्माजीने अंतिम उपवास आरंभ करनेके पूर्व की थी। हिन्दु, बौद्ध, मुसलिम तथा ईसाई धर्मग्रन्थोमेंसे पाठ किया गया, फिर पडितोंने वेद मंत्रोंका उच्चारण किया। संगमपर जब मोटरकी नौका पहुंच गयी, श्री रामदास गांधीने अस्थिका जल-प्रवाह किया। इसके पश्चात् कई घड़े दूध चढाये गये। निकट ही जहां जल गहरा नही था, गांधीजीके परिवारके लोग तथा आश्रमवाले जलमें उतर गये और इन्होंने गीताके बारहवे अध्यायका पाठ किया। इसके पश्चात् नेहरूजीका बडा मार्मिक भाषण हुआ। इसी समय देशके विभिन्न भागों तथा विदेशोंमें भी अस्थि-प्रवाह किया गया। विशेष प्रबंध-द्वारा इन स्थानोंसें अस्थिया मंगायी गयी थीं।

❀

महायात्राका एक दृश्य । अर्थी बिडला-भवनसे बाहर निकाली जा रही है । अर्थीके पास सरदार पटेल, पतजी, राजेन्द्र बाबू, कृपालानी, नेहरूजी,सरदार बलदेवसिह आदि खडे हैं

शवयात्राके साथ अपार जनसमूह। अंतिम दर्शनके लिए
बिजलीके खभोंपर भी लोग बैठे हैं

कांग्रेस कार्यकारिणी समितिका प्रस्ताव

महात्मा गांधीकी अमर शिक्षाएँ और उनके काम देशवासियों और संसारके लोगोंके मनमें सुरक्षित है। आगे आनेवाली पीढ़ियाँ उनकी तरफ आशासे देखेगी और उनसे प्रेरणा पायेगी। इससे ज्यादा अच्छा उनका स्मारक दूसरा कोई नहीं हो सकता, जिसका कभी नाश नहीं हो सकता। फिर भी उनके देशवासियों और दूसरे लोगोंपर भी एक कर्जका भार आ पड़ा है। वह यह है कि वे रचनात्मक कामके क्षेत्रमें असली काम करके उनके ऊँचे आदर्शोंको आगे बढ़ाये। रचनात्मक काम उन्हें बहुत प्रिय था और उसके लिए उन्होंने जीवन भर लगातार मेहनत की थी।

इसलिये वर्किंग कमेटीकी यह राय है कि रचनात्मक कामोंको देशव्यापी आधारपर करनेके मकसदसे 'एक राष्ट्रीय स्मारक फंड' शुरू किया जाय। यह फंड अलग अलग भाषाओंमें लिखे गये गांधीजीके लेखों और उनकी शिक्षाओंको इकट्ठा करने, सुरक्षित रखने और प्रकाशित करनेके काममें भी इस्तेमाल किया जा सकता है। उसकी मददसे गांधीजीसे सम्बन्ध रखनेवाली चीजोंका एक म्यूजियम भी बनाया जा सकता है। फिर भी स्मारक-फंडका खास मकसद यह होगा कि अलग अलग रचनात्मक कामोंको आगे बढ़ाया जाय जिन्हें गांधीजी पसंद करते थे और इसी तरहके दूसरे कामोंको भी आगे बढ़ाया जाय जो गांधीजीके विचारोंको ठोस रूप देते है।

कमेटी हिन्दुस्तानके लोगोंसे अपील करती है कि वे राष्ट्रीय स्मारक फंडमें पैसा दें और सुझाती है कि हर आदमी अपनी दस दिनकी आमदनी फंडमें दे। इस फंडको खर्च करनेका तरीका इसमें दिलचस्पी रखनेवाले लोगोंकी प्रतिनिधि सभा बादमें तय करेगी। वे ही लोग फंडके ट्रस्टी और प्रबंध-समिति भी चुनेंगे। फंडका अधिकतर हिस्सा उस सूबे या रियासतमें इस्तेमाल किये जानेके लिए अलग रखा जायगा जहाँ वह इकट्ठा किया जायगा। दानी लोग अपनी रकम किसी खास रचनात्मक कामके लिए भी निर्धारित कर सकते हैं। फंडके इस्तेमाल और प्रबन्धके बारेमें तफसीलें बादमें प्रबंध-समिति तय करेगी।

इस बीच वर्किंग कमेटी कांग्रेस प्रेसिडेंटको शुरूकी सारी कार्यवाही करने और फंड इकट्ठा करनेके लिए आरजी कमेटी बनानेका अधिकार देती है। प्रेसिडेंट फंडका अस्थायी सेक्रेटरी भी नियुक्त करेंगे और चन्दा लेनेवाले बैंकोंका नाम भी प्रकाशित करेंगे।

[६ फरवरी, १९४८

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीके प्रस्ताव

अखिल भारतीय काग्रेस कमेटीकी यह वेठक महात्मा गांधीजीकी हत्यापर हार्दिक खेद प्रकट करती है और भारी लज्जाका अनुभव करती है।

अखिल भारतीय काग्रेस कमेटीकी यह वैठक आम जनता और खासकर कांग्रेस-जनोंसे अनुरोध करती है कि वे साम्प्रदायिकता रूपी पिशाचसे लड़नेमे अपनी अधिकसे अधिक शक्ति लगावे। यदि उस पिशाचको तत्काल न रोका गया तो वह हमारी आजादी और ध्येयको मटियामेट कर सकता है।

अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी कभी इस वातको नहीं भूल सकती कि अपनी हत्यासे कुछ ही पहले महात्माजीने साम्प्रदायिकताको नष्ट करने और विभिन्न सम्प्रदायोके बीच शाति और मेल-मिलाप स्थापित करनेकी दृष्टिसे अनिश्चित समयके लिए उपवास शुरू करके अपने प्राणोकी वाजी लगा दी थी। वह उपवास छठे दिन समाप्त हुआ था जब उन्हें आश्वासन देनेके लिए प्रतिज्ञा की गयी थी कि भारतमे मुसलमान मान-सहित सुरक्षित रूपमें रह सकते है।

हत्याका यह दुष्कृत्य और भी जघन्य और निन्दनीय इसलिये है कि यह ऐसे समयपर किया गया जब साम्प्रदायिकताके जहरको दूर करने, प्रेमभावना, शाति और एकता स्थापित करने तथा साम्प्रदायिक सघर्षको दूर करनेके लिए गम्भीरतापूर्वक प्रयत्न किया जा रहा था।

हमारे कर्तव्योकी याद दिलाने और अपनी निष्ठा द्वारा हमारे मिशनमे हमें प्रेरणा देनेके लिए जब राष्ट्रपिता शरीरसे हमारे वीच नहीं हैं, अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी पुनः अपना निश्चय दोहराती है कि वह उसी मार्गका अनुसरण करती रहेगी जिसे उन्होने हमारे लिए प्रकाशमान किया है और जिस महान कार्यको वे अधूरा छोड गये है उसे पूरा करनेमे अपनी पूर्ण शक्ति लगा देगी।

अखिल भारतीय काग्रेस कमेटीकी यह वैठक काग्रेस कार्यकारिणीके उस प्रस्तावको स्वीकार करती है जिसे उसने ६ फरवरीकी वैठकमे पास किया है और जिसमे जनता और सरकारसे अनुरोध किया गया है कि वे विद्वेष और हिंसाकी उन शक्तियोंकी ओर ध्यान दे जो सामाजिक जीवनकी जडे उखाडनेके लिए खुले आम या छिपकर काम कर रही है। उन्हे समाप्त करनेके लिए कुछ सक्रिय कार्यवाही की जाय।

अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी उन साम्प्रदायिक सस्थाओको गैरकानूनी घोषित करनेके लिए केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारोंको वधाई देती है जो जान-बूझकर इस जहरको फैलानेका प्रयत्न कर रही थीं और जिनके विद्वेष-प्रचारके कारण ही हमारे कुछ पथभ्रष्ट देशवासियोंके दिमाग विगड गये और उसके फलस्वरूप ऐसे दुष्कृत्य हुए।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी सरकारको आश्वासन देती है कि वह उन तत्वोंको दूर करनेमें सक्रिय सहयोग देगी जो साम्प्रदायिक विद्वेष पैदा करने और साम्प्रदायिक झगड़ों और विनाशकारी प्रवृत्तियोंको प्रोत्साहन देनेके लिए जिम्मेदार हैं।

कांग्रेसपर जो भारी दायित्व आ गया है उसे शक्तिशाली ढगसे वहन करनेके लिए उसे स्वय अपने घरको व्यवस्थित करना होगा। अ० भा० का० कमेटी कांग्रेस-जनोंसे अनुरोध करती है कि वे इस सस्थाको दोषमुक्त करें, भले ही उसमें कांग्रेसके सदस्योंकी संख्या कम हो जानेका खतरा क्यों न हो। ध्यान रहे अपने पिछले दिनों गांधीजी कांग्रेसजनोंके नैतिक मानदडकी गिरावटसे, जिसका उल्लेख स्पष्ट शब्दोंमें उन्होंने अपने पिछले उपवासके समय किया था, बड़े दुःखी थे। प्रत्येक कांग्रेस-जनका कर्तव्य है कि वह अन्तरावलोकन करे और इस महान संस्थाकी सहायता करे जिसका वरसोंके जबरदस्त बलिदानके बाद निर्माण हुआ है और उस मानदडको पुनः प्राप्त और स्थापित करे जो गांधीजीने उसके सामने रखा है। शक्ति हाथमें आ जानेसे कांग्रेसजनोंको गम्भीर और विनम्र बनना चाहिये और अपनी जिम्मेदारीको अनुभव करके जनताका उपयुक्त सेवक बनना चाहिये।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीकी यह बैठक सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्यायपर आधारित ऐहिक एव जनतन्त्रात्मक राज्यके आदर्शमें अपनी निष्ठा व्यक्त करती है, जिसमें हरएक नागरिकको भले, ही उसका धार्मिक विश्वास कुछ भी क्यों न हो, नागरिकताके समान अधिकारोंका आश्वासन होगा। कमेटी अपने इस निश्चयको फिर दोहराती है कि वह ऐसी ऐहिक लोकतन्त्रात्मक सरकार-की जड़ोंको मजबूत बनावेगी।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीकी यह बैठक कार्यकारिणीके 'गान्धी राष्ट्रीय स्मारक निधि' को प्रारम्भ करनेके कार्यको पसन्द करती है जो उन रचनात्मक, शैक्षिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आदर्शोंको आगे बढानेकी दृष्टिसे उठाया गया है जिनसे महात्मा गांधीजीका उनके जीवनकालमें घनिष्ठ सम्बन्ध था और जिनके द्वारा वे भारतको एक सच्चा, स्वस्थ और आत्मनिर्भर, सुसगठित एव लोकतन्त्रीय देश बनाना चाहते थे। यह कार्य विश्वशान्ति और बन्धुत्वको बढावा देगा और इसके द्वारा विभिन्न भाषाओंमें गान्धीजीकी रचनाओं और उनके उपदेशोंका सग्रह संरक्षण और प्रकाशन होगा।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीकी यह बैठक कार्यकारिणीके 'गान्धी राष्ट्रीय स्मारक निधि' के प्रस्तावको स्वीकार करती है और सभापति द्वारा दस दिनकी आमदनी उस निधिमें देनेके लिये जनतासे जो अपील की गयी है उसका समर्थन करती है। [२१ फरवरी, १९४८

भारत सरकारका प्रस्ताव

भारत और संसारपर अकस्मात् एक अत्यन्त दुःखद विपदा आपड़ा है। ३० जनवरीको शामके ५ बजेके कुछ ही बाद एक निर्दय हत्यारेने मानवजातिके सर्वोपरि मूल्यवान जीवनको जो लगभग आधी शताब्दीतक भारतका भाग्य-विधायक था, समाप्त कर दिया। महात्मा गांधी, राष्ट्रपिता और सब लोगोका प्यारा, अहिसाका पुजारी, सत, शातिका दूत, स्वतंत्रताके युद्धका महान सैनिक, नीचेसे नीचे और उत्पीडित लोगोका प्रेमी जब प्रार्थनाके लिए जा रहा था, जहाँ उसके देशवासी प्रत्येक सायंकाल उसका संदेश सुननेके लिए एकत्र हुआ करते थे, तब मार्गमे उसका जीवन समाप्त हो गया। राष्ट्रकी महान दुःखद घटनापर शोक व्यक्त करता हुआ सूर्य अस्त हो गया।

भारतके लोगोंमें शान्ति और परस्पर मैत्री स्थापित करनेके उद्देश्यसे अपना जीवन बलिदान करनेका निर्णय, गांधीजीका अंतिम महान कार्य था। जनता द्वारा पवित्र प्रतिज्ञा करनेपर गत रविवार १८ जनवरीको उन्होने अपना उपवास समाप्त किया था और उस समय भारतने चैनकी साँस ली थी।

भारत और मानवताके प्रति घोर और निरन्तर सेवाका जीवन अपने उद्देश्यकी पूर्तिके प्रयासमे समाप्त हो गया। उस प्रतिज्ञाको अक्षरशः पूरा करना अब भारत सरकार और भारतके लोगोंका काम है।

भारतका महान पुरुष और सन्त इस संसारसे चला गया है। ससार इस निधनपर शोक प्रकट कर रहा है और उसकी तेजोमय आत्मा और उसके महान कार्योके प्रति ससारके लोग श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे है। शोकसे आच्छादित भारत सरकार अब भी गर्व और कृतज्ञतासे अपने उस महान नेताका स्मरण करती है जो करोडो व्यक्तियोंके लिए प्रेरणाका स्रोत था और जिसने उन्हे उच्च प्रयास और सत्कार्यका मार्ग दिखाया था। सदाकी तरह मृत्युमे भी वह मुस्करा रहा था। सत्य और अहिंसाके उनके सदेशका वह प्रतीक था। उसके हृदयमे सबके लिए प्रेम भरा था। न्याय और परस्पर सहिष्णुताके लिए एक दीर्घ-कालीन सघर्ष ही उसका जीवन था।

महात्मा गाधीकी गौरवपूर्ण स्मृतिमें सम्मानपूर्वक श्रद्धाजलि अर्पित करती हुई भारत सरकार यह घोषणा करती है कि इस दिवगत आत्माके महान आदेशको पूरा करनेकी वह भरसक चेष्टा करेगी। उनके लिए कर्तव्यकी पुकार सर्वोपरि थी। अब वह कर्तव्य भारतकी जनतासे उत्साह, सूझबूझ, विश्वास, सत्य

मार्गका अनुसरण और सहिष्णुता चाहता है। भारत सरकार देशके लोगोंको इस राष्ट्रीय शोकके समय भी इस कर्तव्यका स्मरण कराती है और उनसे अनुरोध करती है कि दृढ़ता और विवेकसे भविष्यका मुकाबला करें। इस समय हमारे बीच जो हिंसात्मक और कुत्सित वृत्तियाँ काम कर रही है और जिन्होंने भारतसे एक अमूल्य रत्न छीन लिया है उनका मुकाबला करनेमे भारत सरकारकी जनता-को सहायता करनी चाहिये। इस कुत्सित कार्यने भी उस आत्माकी प्रभाको अधिक समुज्ज्वल कर दिया है जो आज प्रकाश दे रही है और जो भारतको तथा समस्त ससारको भविष्यमे भी प्रकाश देती रहेगी। सदाकी भाँति यह महान आत्मा इस भारतकी जिससे वह इतना प्रेम करती थी और जिसकी उसने इतनी तत्परतासे निरन्तर सेवा की, रक्षा करती रहेगी और उनका मार्ग-निर्देशन करती रहेगी। यह आत्मा भारतकी और भारतके सन्देशकी प्रतीक थी। इसलिए हमे गाधीजी और भारतके प्रति सत्यनिष्ठ होना चाहिये और भारतके लिए उनके स्वप्नको सच्चा बनाना चाहिये। [२ फरवरी १९४८

'मै मृत्युसे कभी नही डरता। मेरा जीवन तो भगवानके हाथमें है, वह जब तक उसका उपयोग चाहेगा करेगा। मै चोटसे भी भय नही करता। धार्मिक सहिष्णुता और हिंदू-मुस्लिम एकतासे मेरे जीवनकी इच्छा बढेगी। मुझे यदि अपने बीच देखना चाहते हो, तो मेरी यह शर्त है कि भारतकी सभी जातियाँ एक दूसरेसे मिल-जुलकर शातिसे रहें--शस्त्र-प्रदर्शन, बल प्रयोगसे नही वरन् प्रेमसे, ताकि यही सम्बन्ध हमें विश्वसे बाँध सके। जबतक भारत और पाकिस्तानमें शाति नहीं होती, तबतक मुझे जीनेकी इच्छा नहीं होती।'

—महात्मा गाधी

डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद

[सभापतिः भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस तथा विधान परिषद्]

महात्मा गान्धीका पार्थिव शरीर हमारे साथ अब नहीं रहा। उनके चरण अब स्पर्श करनेको हमे नहीं मिलेगे। उनका वरद हस्त हमारे कन्धोपर अब थपकियाँ नहीं दे सकेगा। उनकी मधुर वाणी अब हमे सुननेको नहीं मिलेगी। उनकी आँखे अब अपनी दयासे हमे सराबोर नहीं कर सकेगी। पर उन्होने मरते-मरते भी हमे बताया है कि शरीर नश्वर है, आत्मा अमर है। वह शरीरसे नही है पर उनकी आत्मा हमारे सब कर्मो और कुकर्मोको देख रही है। जो काम उन्होने अधूरा छोड़ा है हमे उसको पूरा करना है और यही एकमात्र रास्ता है, जिससे हम उनकी स्मृति कायम रख सकते है। यो तो जो कुछ उन्होने किया वह उनको अमर बनानेके लिए संसारके सामने हमेशा बना रहेगा। और किसी दूसरे प्रकारके स्मृति-चिन्हकी आवश्यकता नही है, पर तो भी मनुष्य अपनी सान्त्वनाके लिए कुछ न कुछ करता है। इसलिए सोचा गया है कि गान्धीजीकी स्मृतिको कायम रखनेके लिए जो रचनात्मक काम उन्हें प्रिय थे उनको बहुत जोरोसे चलाना चाहिये और फैलाना चाहिये। महात्मा गान्धी रचनात्मक कार्यक्रम द्वारा ही अपने सत्य और अहिंसाके सिद्धान्तोका कार्यरूपमे फूलना-फलना देखना चाहते थे और उनको मानकर ही हम उनके सिद्धान्तोको सच्चे रूपमे संसारमे रख सकेगे। इसलिए उसी कार्यक्रमका चलाना, बढ़ाना, प्रसार एव प्रचार करना, उनके सिद्धान्तोको कार्यरूपमे परिणत करना है। काग्रेसकी कार्यसमितिने देशके लोगोसे निवेदन किया है कि सब लोग अपनी कम-से-कम दस दिनोकी कमाई इस स्मारक कोषमे दे। इस कोषका खर्च इसी रचनात्मक कामको फैलाने और महात्माजीके लेखों और प्रवचनोंके संग्रह और प्रकाशन तथा उनसे सम्बन्ध रखनेवाली सभी वस्तुओंको एकत्र करके रखनेमे किया जायगा। इसके लिए जो अधिकारी लोग नियुक्त किये जायेगे उनके नाम पीछे प्रकाशित किये जायेगे।

पर आज मै इस कोषके सम्बन्धमे अपील करनेके लिए नहीं बोल रहा हूँ। उसके लिए अपीलकी जरूरत नहीं है। लोग स्वयं पैसे भेजेगे। आज तो मै इस भयंकर दुर्घटनापर विचार करना चाहता हूँ कि यह हत्या क्यो हुई, किस कारण की गयी। अहिंसाके एकमात्र अनन्य पुजारी हिंसाका शिकार क्यों बनाये गये। भारतवर्षमे इधर कई वर्षोसे साम्प्रदायिक झगड़े इतने चले आ रहे है और साम्प्रदायिक भेदभावका इतने जोरोंसे प्रचार किया गया कि उसीके फलस्वरूप आज यह दुर्घटना हुई। गान्धीजीने अपनी सारी शक्ति इस साम्प्रदायिक भेदभावके विरुद्ध लगा दी थी। और आज जो काम वह अपने जीवनमे पूरा नही कर गये उनके स्वर्गारोहणके बाद इस हत्याकाड द्वारा वह पूरा होना चाहिये। क्या किसीके दिलमे ऐसा विचार पैदा हुआ कि गान्धीजी हिन्दू धर्म और हिन्दू समाज-

का अहित चाहते हैं। क्या कभी यह सम्भव था कि उस आदमीका अहित, जिसने हिन्दू धर्म, हिन्दू समाज और हिन्दुस्तानको अपनी गिरी हुई अवस्थासे उठाकर इस शिखरतक पहुँचाया था, कोई कभी स्वप्नमें भी सोच सकता था। नहीं। पर जो लोग सकुचित विचारके है, दूरतक देख नही सकते, धर्मके मर्मको समझ नहीं सकते उन्होने ऐसा समझा और उसीका यह फल हुआ। क्या इस हत्यासे हिन्दू-धर्म और हिन्दू-समाजकी रक्षा हुई ? हिन्दू समाजके इतिहासमे कोई ऐसी दुर्घटना नही मिलती। हिन्दू इतिहासमे लड़ाइयोका उल्लेख है पर जितने भी युद्ध हुए वे सब धर्मयुद्ध हुए। धर्मयुद्धका नियम था किसीको कभी इस तरह धोखा देकर किसीने न मारा। किसी महात्माकी हत्याका तो कहीं उल्लेख ही नहीं मिलेगा। यह पहला अवसर है। हिन्दू समाजके इतिहासमे भी किसी हिन्दू पर ऐसे पापका लाञ्छन लगा है और इसमे सन्देह नहीं कि यह ऐसा धब्बा है जिसको कोई मिटा नहीं सकता। और हत्या किसकी की गयी ? गाधीजीका पार्थिव शरीर, वह खुद कहा करते थे, कोई चीज नही। जो गोली लगी वह गान्धीजीके हृदयमे नहीं लगी, वह तो हिन्दू धर्म और हिन्दू समाजके मर्मस्थलमे लगी। इसलिए आज प्रत्येक भारतवासीका यह कर्तव्य है कि वह अपना नेत्र खोले और देखे कि क्या यह साम्प्रदायिक पाप उसके दिलमे भी कोई स्थान रखता है। और यदि रखता हो तो उसे निकाल दे,अपना हृदय साफ कर ले और तभी वह दूसरेके हृदयको समझ और देख सकेगा। हमारा बडा भारी दोष है कि हम अपने पापो, बुरे रास्तो और कुभावनाओंको जिनको हमीं सबसे अधिक जान और देख सकते है, नहीं देखते और न समझनेकी कोशिश करते है और दूसरोके दोपकी खोजमे अपनी आँखे और अपने विचार दौड़ाया करते हैं। आवश्यकता है कि हम अपनी आँखोंको अन्तर्मुखी बनाकर अपनी ओर देखे। यदि हममेसे प्रत्येक मनुष्य अपनेको सुधार ले तो सारा ससार सुधर सकता है। गाधीजीने यही सिखाया है और आज यदि भारतको जीवित रहना है तो उन्हींके सत्य और अहिंसाके रास्तेपर चलकर वह जीवित रह सकता है। उसी रास्तेपर चलकर वह स्वराज्य तक पहुँचा है, पर स्वराज्य अभी तक सुराज नहीं हो सका क्योंकि हम उस रास्तेपर दृढ निश्चयके साथ नही चल रहे हैं।

काग्रेसजन जो गाधीजीके पीछे चलनेका दम भरा करते थे, जिन्होने बहुत कुछ त्याग भी किया, आज समझ रखे कि उनकी परीक्षा हो रही है। उनमेसे प्रत्येकके सामने यह प्रश्न है कि क्या सचमुच वह इस हत्याका कुछ अशमे भागी नहीं है। यदि हममेसे हरएक गान्धीजीके पथपर चला होता, गान्धीजीकी बातोको हरएकने माना होता तो यह दुर्घटना असम्भव थी। हमारी कमजोरियोंका, उनके बताये पथपर हमारे न चलनेका ही यह दुष्परिणाम देखना पड़ा और अभी स्वराज्यको सुराज्य बनानेमे जो कुछ बाकी है अगर उसको पूरा करना है तो हम व्यक्तिगत भेदभाव छोड दे, साम्प्रदायिक भेदभाव उठा दे और सच्चे त्यागके साथ

फिर भी देशकी सेवामें लगें। हमें यह भूल जाना चाहिये कि त्यागका समय चला गया और भोगका समय आ गया। जब हथकड़ियों, जेलखानों, लाठियों और गोलियोंके सिवाय हमे कुछ दूसरा मिल ही नही सकता था तो हम त्याग क्या कर सकते थे। हॉ, अकर्मण्य बनकर कायरतापूर्वक हम भाग सकते थे। जब हमारे हाथोंमे कुछ न कुछ अधिकार हो, जब हमको इसका अवसर हो कि हम अपने हाथोंको गरमा सके, अपनी प्रतिष्ठाको ससारकी ऑखोमे बहुत बढा सके और अपनेको एक बड़ा अधिकारी दिखला सके और फिर भी उस अधिकारकी परवाह न कर सेवाका ही ख्याल रखे, धनके लोभमें न पडे और अपनी सादगीमे बड़प्पन देखे, तभी हम कुछ त्याग दिखला सकते है। आज सासारिक वस्तुओको हम कुछ प्राप्त कर सकते है, उनके त्यागनेको ही त्याग कहा जा सकता है। जब वह प्राप्य नही थीं उस वक्त त्याग क्या हो सकता था? गान्धीजीकी मृत्यु हममे यह भावना एक बार और जागरित कर दे, यही ईश्वरसे प्रार्थना है और इसीमे देशका कल्याण है।

o o o

यद्यपि आज बापूका शरीर नहीं रहा तथापि उनके शब्द और उपदेश अमर है। हमे निःसंशय होकर उनका अनुसरण करना चाहिये। गाधीजीका विहारसे विशेष सम्पर्क रहा है और वे बहुधा कहा करते थे कि विहार ही वह स्थान है जहॉ मुझे अपने सत्यके सविस्तर प्रयोगके लिए प्रथम अवसर मिला था। बिहारकी जनताने उनकी बाते उस समय सुनी जब भारतमे उन्हे विशेष ख्याति नहीं मिली थी।

अतः निश्चित है कि गांधीजीको विहारसे विशेष प्रेम था। किन्तु जब सन् ४६ के अक्तूबर-नवम्बरमें विहारमे हिन्दू-मुसलिम दगा हुआ, तब उन्हे अतिशय पीडा हुई। उन्हे ऐसा लगा कि किसी निकट सम्बन्धीने हमे चोट पहुँचायी है। उस समय वे बगालमे थे। वहॉसे उन्होंने यह संदेश भेजा कि यदि इस प्रकार उपद्रव होते रहे तो मै अनशन करूँगा। ज्यों ही यह संवाद बिहारमे पहुँचा दगे बंद हो गये और उस समय जो शान्ति स्थापित हुई वह अबतक बनी हुई है। इसके बाद वे पुनर्वासन-कार्यके सम्बन्धमे विहार आये और वह कार्य चल ही रहा था कि उन्हे दिल्ली चले जाना पडा। अतः बिहारके लोगोंपर विशेष उत्तरदायित्व है। उनका कर्त्तव्य है कि जिसके लिए गाधीजीको प्राणार्पण करना पडा है उस शान्ति और साम्प्रदायिक सद्भावनाको वे बनाये रखे तथा साम्प्रदायिकताका विष दूर करे।

[विहारवासियोंको दिये गये सन्देशसे

o o o

हमसे बोलने, हमे धीरज बॅधाने, हमे बढावा देने और हमारी रहनुमाई करनेके लिए महात्मा गाधी आज हमारे बीच ज़िंदा नहीं है। मगर क्या उन्होंने

अक्सर हमसे यह नही कहा कि शरीर अस्थायी है और एक न एक दिन उसका नाश अवश्य होता है, और सिर्फ आत्मा ही अमर है और उसका कभी नाश नहीं होता ? क्या उन्होने हमसे यह नहीं कहा था कि जवतक भगवान्‌को मेरे इस शरीरसे काम लेना होगा, तवतक यह इसे वनाये रखेगा ? हो सकता है कि उनकी आत्मा शरीरके वधनोंसे छूटकर ज्यादा आजादीसे काम करे और ऐसे साधन पैदा करे जो उनके अधूरे कामको पूरा कर सके। हो सकता है कि यमुनाके किनारे पडी हुई उनकी राखमेसे ऐसी ताकतें उठ खडी हों, गलतफहमी और अविश्वासके सारे कुहरे और वादलको उडा दे और ऐसी शाति और,मेल कायम ,करे, जिसके लिए वे जिये, उन्होने काम किया और हाय, अतमे हत्यारेकी गोलीके शिकार वने।

हिंदू धर्मने या सच पूछिये तो इंसानियतमें जो महान् और श्रेष्ठ है, क्या वे उस सवके सार और साकार रूप नहीं थे ? और तिसपर क्या वह एक हिंदूका ही हाथ नहीं था, जिसने उस हृदयको अपनी गोलीका निशाना बनाया, जो जाति, धर्म और देशकी सीमाओसे परे था ? इस पापका मकसद क्या हो सकता है ? क्या यह हिंदू धर्मको वचानेके लिए किया गया है ? क्या इससे हिंदू-समाजकी सेवा होगी ? क्या ऐसा करने से हिंदू धर्म वचा लिया गया ? क्या इस तरह हिंदू-समाजकी सेवा हो गयी ? हिंदू धर्म और हिंदू समाजके विविधताभरे इतिहासके अगणित पन्नोको देख जाइये, आपको ऐसे बुरे और धोखेसे भरे हुए कामका दूसरा उदाहरण नही मिलेगा। यह उस इतिहासपर ऐसा अमिट कलक है जो किसी तरह नही धुलेगा।

हम दुःखी है। हम भौचक्केसे है। तो क्या हम निराश हो जायँ ? गाधीजीका शरीर अव हमे देखनेको नही मिलेगा। अव हम उनकी आवाज नही सुन सकेगे। मगर क्या वे एक वेशकीमती मीरास हमारे लिए नहीं छोड गये है। अपने मार्गमे आगे वढाने और सहारा देनेके लिए क्या उन्होने हमारी काफी रहनुमाई नहीं की और हमें काफी प्रेरणा नहीं दी है ? इस सकटके समय उनकी ललकार हममे फिरसे कर्त्तव्यकी भावना जागरित करे। उन्होंने मिट्टीमेसे योद्धा पेदा किये। गैरइसाफी, दमन और गुलामीके खिलाफ अपनी जीवनभरकी लड़ाईमे उन्होने अपूर्ण हथियारोका कुशलतासे उपयोग किया। अच्छाईको कायम करने के लिए हिंदुस्तानको वैसी ही वहादुरीकी, वैसी ही खतरोकी उपेक्षा करने की और उसी तरह नतीजोकी तरफसे वेफिक्र रहनेकी जरूरत है। गाधीजीने उसे कायम करनेके लिए अपनी जान दे दी। क्या हम गाधीजीका उनके अवसानके वाद उसी तरह अनुसरण नही करेंगे, जिस तरह हम उनके जीते-जी करते थे।

यह क्रोध करने या वदला लेनेका वक्त नही है। गाधीजीके उपदेशमे इनमेसे किसीके लिए भी कोई अवकाश या जगह नहीं है। जरूरत इस वातकी है कि हम आत्माका हनन करनेवाली उस संकुचित साम्प्रदायिकताको जड-मूलसे

उखाड़ फेकनेका पक्का निश्चय कर ले, जिसकी वजहसे यह पाप संभव हुआ है। गाधीजीके सियासी, सामाजिक या आर्थिक कामोके हमेशा दो पहलू रहे है— नकारात्मक और स्वीकारात्मक। बुरी इच्छाओका अवश्य ही खात्मा कर देना चाहिये, ताकि अच्छी भावनाएँ उनकी जगह ले सके। फिरकेवाराना अविश्वास और झगड़े खत्म होने चाहिये और आपसी मेल-मिलाप और भाईचारा कायम किया जाना चाहिये। यह गाधीजीकी अतिम इच्छा थी। हमे उनकी यह इच्छा अवश्य पूरी करनी चाहिये और हम उसे पूरी करके रहेगे।

❀

ब्रिटेनके नरेश : छठे जार्ज

[भारतके गवर्नर जेनरलको तार]

महात्मा गांधीकी मृत्युके समाचारसे मै और सम्राज्ञी बहुत दुःखी हुईं। कृपया भारतकी जनताको मेरी हार्दिक समवेदना दे। उनकी ही नही वरन् समस्त मानव जातिकी ऐसी क्षति हुई है जिसे कभी पूरा नहीं किया जा सकता।

o o o

[ब्रिटेन नरेशको भारतके गवर्नर जनरलका उत्तर]

गाधीजीका निधन वस्तुतः मानव-मात्रकी हानि है। उसे इस समय ऐसे प्रेम और सहिष्णुताके आदर्शोके प्रकाशकी आवश्यकता है जिसके लिए गाधीजी आजीवन प्रयत्नशील थे और उसी प्रयत्नमे जान दी। इस दुःखपूर्ण स्थितिमे भी भारतको इस बातका गर्व है कि उसने उन सरीखा एक अमर व्यक्ति ससारको प्रदान किया। भारतको विश्वास है कि उनका उदाहरण उसको अपने भाग्य-निर्माणमे प्रेरणा और शक्ति देता रहेगा।

यमुना नदीके तटसे, जहाँ कि आज तीसरे पहर उनका दाहसस्कार किया गया मै अभी अभी लौटा हूँ। इस महापुरुषकी अन्त्येष्टिके अवसर जो विशाल जनसमूह एकत्र हुआ था वह उनकी अति व्यापक लोकप्रियताका प्रतीक है। इस जनसमुदायके शोकसे प्रकट होता है कि इस देशकी जनतामे उनका कितना सम्मान था। प्रायः यह सत्य ही है कि सम्भवतः अब शताब्दियों तक भारत ही नहीं वरन् समस्त ससारको ऐसी महान विभूतिके पुनः दर्शन न होगे। शोक एव सतापकी इस अभूतपूर्व घड़ीमे हमे एकमात्र यही सतोष है कि सत्यता, सहिष्णुता एव प्रेमसे परिपूर्ण उनका जीवन हमारे इस सकटापन्न ससारको, उनके अनुगमनसे, विनाशसे बचनेके लिए प्रेरित कर सकेगा।

o o o

चिताकी लपटें, जिन्होंने बापूका नश्वर शरीर आत्मसात कर लिया

यमुनाके किनारे बापूकी पवित्र चिताके समीप अमृतकौर, लेडी माउण्टबैटन, लार्ड माउण्टबैटन और उनकी पुत्री पमिला, मौलाना अबुल कलाम आजाद, चीनके भारत-स्थित राजदूत भूमिपर शोकमग्न बैठे हैं

लार्ड लूई माउण्टबेटन

[भारतके गवर्नर-जेनरल]

सभ्य ससारके प्रत्येक भागमे महात्मा गान्धीकी मृत्युसे करोडों व्यक्तियो-को ऐसा शोक हुआ है, जैसे उनके किसी अपने व्यक्तिका ही देहावसान हुआ हो। केवल वही नहीं जो जीवन भर उनके साथ रहे या वे जिन्हे मेरी तरह उन्हे थोडे समय तक जाननेका अवसर मिला, वरन् उन लोगोने भी, जो उनसे न कभी मिले, जिन्होंने न कभी उन्हे देखा और जिन्होंने उनके प्रकाशित ग्रथोंका एक अक्षर भी नही पढा, यह अनुभव किया जैसे उनके किसी निजी मित्रका निधन हुआ है।

"प्रिय मित्र"—शब्दो द्वारा वे अपने पत्रमे मुझे सम्बोधन किया करते थे और मै भी इसी प्रकार उन्हे उत्तर दिया करता था, क्योंकि उन्हे सबोधन करनेका यही उचित तरीका था। और मै और मेरा परिवार सदा उन्हे इसी रूपमे याद रखेगा।

मै गाधीजीसे पहली बार विगत मार्चमे मिला था। भारत पहुँचनेपर मेरा सबसे पहला कार्य गांधीजीको पत्र लिखकर यह सुझाव पेश करना था कि हम दोनो जल्दीसे जल्दी मिले। और प्रथम मिलनके अवसर पर ही हमने फैसला किया कि एक दूसरेकी सहायता करने तथा उपस्थित समस्याओंको हल करनेका सर्वोत्तम तरीका निजी सम्पर्क कायम रखना है। वे अतिम बार मुझसे मिलने लगभग एक महीना पहले प्रार्थना-सभाके कुछ मिनट बाद आये थे, जिसमे उन्होने साम्प्रदायिक सद्भावना स्थापित होनेके अभावमे आमरण अनशन करने की घोषणा की थी। मैने उन्हे जीवितावस्थामे अन्तिम बार उस समय देखा जब मैं अपनी पत्नीके साथ अनशनके चौथे दिन उनसे मिलने गया था। अपने परिचयके पिछले दस महीनोंमे हमारी मुलाकाते कायदेकी कार्रवाई नहीं थी बल्कि उन्हें दो मित्रोकी भेट ही कहा जा सकता है। हमारे मध्य इतना विश्वास और सद्-भावना पैदा हो गयी थी कि वह चिरकालतक स्मृति-पटलपर अकित रहेगी।

शान्तिके देवता और अहिसाके अवतार गांधीजीकी मृत्यु हिंसासे हुई। वे धर्मोन्मादकी बलिवेदी पर शहीद हो गये—उसी धर्मोन्मादकी जिसके कारण भारतकी नव-प्राप्त स्वाधीनताके लिए संकट उत्पन्न हो गया है। गाधीजीने सोचा कि आगे आनेवाले राष्ट्रनिर्माणकारी कार्यका श्रीगणेश करनेसे पूर्व इस विषैले फोड़े-को अच्छा करना ही पड़ेगा।

हमारे महान प्रधान-मंत्री पडित नेहरूने अपने आगे एक ऐसा लोक-तत्रीय तथा असाम्प्रदायिक राज्य स्थापित करनेका उद्देश्य रखा है, जिसमे सभी उपयोगी तथा रचनात्मक जीवन व्यतीत कर सके और जिसमे साम्प्रदायिक तथा

आर्थिक न्यायपर आधारित समाजका विकास किया जा सके। गांधीजीके लिए हम सबसे बड़ी श्रद्धाञ्जलि यही अर्पित कर सकते है कि उस स्वाधीनताके आधार पर, जिसकी नीव गांधीजी अपने जीवनमे ही मजबूतीसे रख गये, इस प्रकारके समाजका निर्माण करनेमे अपने सम्पूर्ण हृदय, मस्तिष्क और हाथोसे लग जाँय। गांधीजीकी जिस दुःखद परिस्थितिमे मृत्यु हुई है यदि उससे हम कुछ भी स्तब्ध हुए है,यदि उससे हमे अपने मतभेद दूर करने और संयुक्त रूपसे प्रयत्न करनेमे कुछ भी प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है तो कहा जा सकता है कि जिस राष्ट्रसे वे इतना प्रेम करते थे उसकी उन्होंने सबसे महान तथा अन्तिम सेवा इस प्रकारकी। केवल इसी प्रकार उनके आदर्शकी प्राप्ति की जा सकती है और भारत अपनी बपौतीको पूरी तरह प्राप्त कर सकता है।

❀

लेडी एडविना माउण्टबेटन

महात्माजीकी मृत्यु अन्तर्राष्ट्रीय क्षति नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय दुर्घटना है। मै शीघ्रातिशीघ्र दिल्ली पहुँचना चाहती हूँ जिससे इस सकटकी घडीमे अपने पतिके पास रह सकूँ। मेरा हृदय इस समय इतना भरा हुआ है कि कुछ कहनेको शब्द नहीं मिल रहे है। गांधीजीका निधन विश्वकी क्षति है।

गाधीजी महान नेता थे। इस समय अधिकसे अधिक हम यही कर सकते है कि उन्होने जो कुछ हमे सिखाया है हम उसपर चले। उनकी मृत्यु हमारी पारिवारिक क्षति जैसी है और ऐसा अनुभव उन सभी लोगोंको होगा जो गाधीजीके निकट सम्पर्कमे रहे है। [मद्रासः ३० जनवरी १९४८]

❀

माननीय गणेश वासुदेव मावलंकर

[अध्यक्ष विधान-परिषद (धारा सभा)]

आज हम दोहरी दुर्घटनाकी छायामे मिल रहे है। एक दुर्घटना तो यह है कि हमारे युगका वह सर्वोच्च महापुरुष जिसने हमारी दासताके बन्धन तोड कर हमे स्वाधीन बनाया आज नहीं रहा और दूसरी दुर्घटना यह है कि हमारे देशमे राजनीतिक हिंसामे लोगोंका विश्वास फिर प्रकट हुआ है।

भारतके राजनीतिक गगनमे उदय होनेके समयसे ही महात्मा गाधी हिंसाका विरोध करते आये हैं। हम लोग सोचने लगे थे कि उन्हें अपने कार्यमे अत्यधिक सफलता प्राप्त हो चुकी है। यद्यपि पिछले महीनोंमे साम्प्रदायिक उपद्रवों

तथा लोकप्रिय भावोंकी अभिव्यक्तिसे हमारा यह विश्वास बुरी तरह डिग उठा था, किन्तु फिर भी हम आशा लगाये थे कि राजनीतिक उद्देश्योंकी पूर्तिके लिए जानबूझ कर कुत्सित हत्याएँ करनेका समय इस देशसे लद चुका। गत शुक्रवार की शामकी अभागिनी एव कायर घटनाने हमे निराश कर दिया है और हमारे सामने, राजनीतिक उद्देश्योंकी पूर्तिके लिए हिंसासे काम लेनेके विचारको आमूल नष्ट कर देनेकी एक नयी समस्या उपस्थित कर दी है। मालूम होता है कि हमे अभी यह अनुभव करना बाकी ही है कि राजनीतिक हिंसा व्यक्तिगत स्वतन्त्रताकी और इस प्रकार लोकतन्त्रकी सबसे बडी शत्रु है। राजनीतिक उद्देश्योंकी पूर्तिके लिए हिंसाके इस विचारकी हम कडेसे कडे शब्दोमे निन्दा करते है। किन्तु पथ-भ्रष्ट लोगो और दुःखान्त काड करनेवाले पागलोंकी निंदा मात्र करना पर्याप्त नहीं है। प्रत्येक विचारवान नागरिकपर आज यह जिम्मेदारी आ पडी है कि वह इस प्रकार कार्य करे और अपने जीवनको इस रूपमे ढाले ताकि इस बातका पक्का निश्चय हो जाय कि हमारे इस देशमे आन्तकवादको पनपनेके लिए अनुकूल वातावरण प्राप्त न होगा, जैसा गाधीजी प्रायः कहा करते थे, "अहिसाके बिना वास्तविक लोकतन्त्र सभव नहीं है।"

मेरा सौभाग्य था कि सन् १९१५ से ही जब महात्मा गाधीने स्थायी रूपसे यहाँ निवास ग्रहण करनेके लिए भारतकी भूमि पर कदम रखा, मै उनके सम्पर्कमे रहा। तबसे आजतकके इन वर्षोमे मै महात्मा गाधीकी अनुप्रेरणा एव पथ-प्रदर्शनमे जो कुछ भी मुझसे हो सकी, थोडी बहुत जनसेवा करता आया हूँ। स्वभावतः हमारे देशका इतिहास और पिछले ३४ वर्षोके स्वाधीनता-प्राप्तिके लिए हुए हमारे आन्दोलनोका चित्र आज हमारी आँखोंके सामने आ जाता है। हमे स्वराज्य प्राप्त करनेके लिए अपने उपायों, तरीकों आदिसे सम्बद्धित उन दिनोंके आदर्शोंकी याद आ जाती है और फिर हम यह सोचते है कि इन सब बातोंको महात्मा गाधीने अपने व्यक्तित्व द्वारा किस प्रकार प्रभावित किया। आज ऐसी अनेक बाते मेरे दिमागमे ताजा हो रही है, किन्तु सविस्तर उन सबका उल्लेख करनेका यह समय नही। इतना ही कहना पर्याप्त है कि सत्याग्रह अर्थात् अहिंसापूर्ण प्रतिरोधका अमोघ साधन प्रदान करके गाधीजीने हमारा सारा निरुत्साह एव निराशा नष्ट कर दी और ब्रिटिश साम्राज्यवादके विरुद्ध हमारी लडाईमे हमे नवीन आशाओंसे अनुप्रेरित किया। उन्हींने हमे प्रत्यक्ष करके दिखाया कि जनताके लिए स्वराज्यका सच्चा अर्थ क्या है। हममे जो कुछ अपना था वह हमसे छिना नहीं और हम पश्चिमकी नकल करनेसे बच गये। यह सब उन्हींके पथप्रदर्शनका परिणाम था। जीवनका शायद ही कोई ऐसा पक्ष हो, जो महात्माजीके प्रभावसे अछूता बचा हो। उन्होंने हमारी राजनीति, अर्थ-व्यवस्था तथा शिक्षाको एक नवीन युगान्तकारी परिवर्तनसे प्रभावित किया और हमारे सार्वजनिक जीवनके प्रायः सारे

अंगोंको आध्यात्मिकताका जामा पहनाया। वह हमारे युगके सबसे बड़े पुरुष थे। मानवताका प्रेम सदा ही उनके हृदयमें प्रज्ज्वलित रहा और द्वेष एवं हिंसापूर्ण संघर्षके अन्धकारपूर्ण अवसरोमे भी प्रेमकी उनकी यह आग न बुझी। गांधीजी अपने जीवनमे कभी निराशवादी नही बने, ऐसे समयमे भी नहीं जब उन्होंने अकेले ही अपनी आवाज उठायी हो। स्वय अपने सिद्धान्तों एव आदर्शोमे इस प्रकारका अटूट विश्वास रखते हुए, स्वभावतः उन्होने हमें साहस एवं बल प्रदान किया।

आज बहुत ही सकटपूर्ण समयमें वे हमसे छूट गये है, ऐसे समय जो न केवल हमारे देशके लिए बल्कि शायद ससारके इतिहासमे सकटपूर्ण है। उनका दृष्टिकोण मानवता, अन्तर्राष्ट्रीय भ्रातृत्व तथा 'एक दुनिया' के भावोसे परिपूर्ण था। उनके सम्बन्धमे हम जिन बातोका भी आदर करते, प्रेम करते तथा शोक मनाते है, उन्हे व्यक्त करनेके लिए हमारे पास शब्द नहीं है।

वे कभी किसी धारा-सभाके सदस्य नहीं थे। एक बार छोड़ कर वे कभी किसी भी धारा सभाकी कार्रवाई भी देखने नही गये। जैसा अपनी आत्मकथामे उन्होने स्वयं लिखा है वे इस सभाकी कार्रवाईमे अपने जीवनमे केवल एक बार उपस्थित हुए, उस समय जब 'रौलट-बिल' पर बहस हो रही थी। बिलके सम्बन्धमे स्वर्गीय श्रीनिवास शास्त्रीकी भावावेशपूर्ण वक्तृताका उल्लेख करते हुए वे कहते है—

"वाइसराय ऐसे ध्यानसे सुन रहे थे मानों उनपर जादू हो गया हो। उनकी ऑखे शास्त्रीजी पर लगी हुई थी। एक क्षणके लिए मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो वाइसराय पर इस वक्तृताका गहरा प्रभाव पड़े बिना रह सकता.. . किन्तु आप किसी मनुष्यको तभी जगा सकते है जब वह वास्तवमें सो रहा हो . सरकार जाब्तेकी कार्यवाही करनेके लिए केवल स्वाग कर रही थी..।"

उपर्युक्त उद्धारणसे स्पष्ट हो जाता है कि उस समयकी धारा-सभाओके प्रति गाधीजीका रुख कैसा था। किन्तु आज स्थिति उससे सर्वथा भिन्न है। उनके प्रेरणापूर्ण पथप्रदर्शन एव प्रयास द्वारा भारतने स्वाधीनता प्राप्त की और आज धारा सभा और सरकार दोनो ही हमारी है। मेरी इच्छा थी कि वे एक दिन इस भवनमे हमे आशीर्वाद देने आये होते, उस पवित्र एव दायित्वपूर्ण कार्यके लिए, जिसे हमने इस केन्द्रीय धारा-सभाके द्वारा अपने ऊपर लिया है।

मुझे विश्वास है कि यह पूरी सभा मेरे इस भावसे सहमत है कि महात्माजी सबके पिताके समान रहे है और हम सब तथा हममेसे प्रत्येक व्यक्ति आज उनके बिछोहसे तथा उनके पथप्रदर्शनके बिना अत्यधिक शोकग्रस्त है। ईश्वरसे प्रार्थना है कि उनकी आत्मा सदैव हमारे साथ रहे और ध्येय तक पहुचानेमे हमारा नेतृत्व करती रहे

माननीय पडित जवाहरलाल नेहरू

[प्रधान मत्री भारत सरकार]

हमारे जीवनका प्रकाश आज लुप्त हो गया है। चारो ओर अंधकार छा गया है। मै आपसे क्या कहू और कैसे कहूँ। हमारे राष्ट्रपिता, जिन्हें हम बापू कहते थे, अव हमारे बीच नही रहे। किंतु मै भूलता हूँ। फिर भी अव हम लोग पहलेकी भाँति उन्हे नही देख सकेंगे। अव हम उनके पास सलाह लेनेके लिए नही जा सकेंगे, और न उनसे सात्वना पा सकेंगे। यह भयकर आघात मुझपर ही नहीं, इस देशके करोड़ों व्यक्तियोंपर है। इस आघातको मै अथवा कोई भी कम नहीं कर सकता। मैने कहा था कि प्रकाश बुझ गया, किंतु मेरी भूल थी। ऐसा नहीं है। क्योकि जो ज्योति इस देशमे प्रज्ज्वलित हुई वह साधारण ज्योति नहीं थी। जिस ज्योति ने इतने दिनोंतक इस देशको प्रकाश दिया है वह अभी अनेक वर्षोतक, सहस्रो वर्षोतक इस देशमे जगमगाती रहेगी। और आगे भी यह अमर ज्योति इस देशमे प्रज्ज्वलित रहेगी और संसार देखेगा और अनगिनत प्राणियो को सात्वना देती रहेगी। क्योकि वह प्रकाश केवल वर्तमानके ही लिए नही था। वह सजीव सत्य और शाश्वत सत्य है जो हमे उचित मार्गका स्मरण दिलाता था, हमे त्रुटियोसे बचाता था और उसीने इस प्राचीन देशको स्वतत्रता दिलायी।

यह सब उस समय हुआ जब उन्हे बहुत कुछ करना था। हमने कभी यह नही सोचा कि अब उनकी आवश्यकता नहीं है अथवा उनका कार्य पूरा हो चुका है। किंतु विशेषतः इस समय जब हमारे सामने इतनी कठिनाइयाँ है उनका न होना हमारे लिए असह्य आघात है।

एक पागलने उनका प्राणात किया है। जिसने ऐसा कार्य किया है उसे मै पागल ही कहूँगा। इधर कुछ महीनो और वर्षोसे जो विष इस देशमे फैलाया गया है उसका प्रभाव लोगोंके मनपर हुआ है। जो सकट हम लोगोंको घेरे हुए है उसीका हमे सामना करना होगा किंतु पागलनसे नही, बेढगे नहीं, उस ढगसे जो हमारे प्रिय गुरुने हमे सिखाया है। पहली बात हमे यह स्मरण रखना है कि आक्रोशमे हम अपनी मर्यादा न खो बैठे।

हमे वीर तथा दृढ लोगोंकी भाँति व्यवहार करना है, उन लोगोकी भाँति जो सब उपस्थित सकटोका सामना करेंगे, उन लोगोकी भाँति जो हमारे महान नेता, हमारे गुरुके आदेशोका पालन करेंगे। हमे सदा स्मरण रखना होगा कि यदि हमारा विश्वास है कि उनकी आत्मा हमारे कार्योको देख रही है तो हमारे हिसा अथवा नीचताके व्यवहारसे उन्हे बहुत ही दुख पहुचेगा।

इसलिये हमें यह सब कुछ न करना होगा। किंतु इसका यह अभिप्राय नहीं है कि हम दुर्बलता दिखाये। हम लोगोंको बली होना चाहिये और एक होकर आनेवाली कठिनाइयोका सामना करना चाहिये। हम लोगोको मिलकर इस महान दुर्घटनाके सामने सब छोटे-मोटे झगड़ोंको, छोटी-मोटी कठिनाइयोंको भूल जाना चाहिये। बड़ी-बड़ी दुर्घटनाएँ हमे यह सकेत करती है कि हम जीवन की महान बातोंको ही ध्यान में रखे और छोटी छोटी बातोको, जो बहुत अधिक हैं, भूल जॉय।

महात्माजीकी मृत्युने हमे जीवनकी महान बातोंका स्मरण दिलाया है जो शाश्वत सत्य है। और यदि हम उन्हे याद रखे तो देशका कल्याण होगा।

[३० जनवरी १९४८

○ ○ ○

मनुष्यकी कृतियॉ दो कोटियोमें विभाजित की जा सकती है-एक रचनात्मक दूसरी सहारात्मक। अधिकतर जनताकी शक्तिया विध्वसमें लगती है रचना मे उनकी प्रवृत्ति कम होती है। महात्मा गान्धी उन थोड़े लोगोमे थे जो निरन्तर रचनात्मक-कार्य्यके लिए यत्नशील रहे।

गान्धीजी आजीवन पाप और असत्यसे लडते रहे। वह विधायक योद्धा थे, संहार उनको अभीष्ट नही था। शत्रुका संहार अथवा विनाश उनका लक्ष्य नही था, वह उसको परिवर्त्तित कर अपने पक्षमे लाना चाहते थे।

महात्माजीके प्रति श्रद्धा तथा उचित स्मारककी सर्वोत्तम विधि यह है कि हम उनके भावोंको ग्रहण करे और एक दूसरेको समझे और परस्पर मैत्री बढाये।

भारतका भाग्य था कि विश्व-इतिहासका महापुरुष यहाँ हुआ। उनकी महत्ता सभी देशो एव युगोमे समझी जायगी। अपने दुर्भाग्यसे हम उनके उपदेश से पूरा लाभ न उठा सके। अपने देशमे तथा विदेशोंमे गाधीजी श्रद्धा एव समादरसे देखे जाते थे, यह कोई साधारण बात नही थी। गांधीजीकी शक्ति आध्यात्मिक थी और उन्होने सिद्ध कर दिया कि अन्तमे भौतिक शक्तिसे आध्यात्मिक शक्ति अधिक प्रभावकर होगी।

[८ फरवरी १९४८

○ ○ ○

भारत और संसारको उस घटनाको जाने हुए दो सप्ताह हो चुके हैं जिससे भविष्यमे युगोंतक भारत अपना मस्तक लज्जासे नीचा किये रहेगा। ये दो सप्ताह विषाद, हृदय-मंथन और जल-प्लावनकी भाँति छा जानेवाले प्रबल और निष्क्रिय भावावेशके एव कोटि कोटि नयनोंसे अश्रुधारा प्रवाहित करनेवाले थे।

काश इस अश्रुधारासे हमारी दुर्बलता और क्षुद्रता धुल जाती और हम उस नायकके कुछ और योग्य बन जाते जिसके लिए हमने शोक मनाया है। इन दो सप्ताहोंमें समस्त संसारके कोने कोनेसे श्रद्धाजलियाँ अर्पित की गयी हैं और अर्पित करने वाले व्यक्ति राजा महाराजों और उच्च पदाधिकारियोंसे लेकर साधारण कोटिके व्यक्ति हैं जो उन्हें सहज ही अपना मित्र, सहचर और समर्थक मानते थे।

भावनाओंकी यह बाढ़ भी धीरे धीरे थमेगी जैसा प्रकृतिका नियम है, यद्यपि हममेंसे कोई भी व्यक्ति अब पहले जैसा न रह सकेगा, क्योंकि वे तो हमारे प्राणों और मस्तिष्कमें अपना घर बना चुके हैं।

लोग उनके लिए स्फटिक और कांसेकी मूर्तियाँ या स्तम्भ बनानेकी बातें करके उनका परिहास करते और उनके संदेशको महत्त्वहीन बना रहे हैं। हम उन्हें कौन-सी श्रद्धाञ्जलि भेंट करें जो वे पसन्द करते? उन्होंने हमें जीने और मरने का रास्ता दिखला दिया है और यदि हमने यह शिक्षा ग्रहण नहीं की तो अच्छा होगा कि हम उनके लिए कोई स्मारक खड़ा न करें, क्योंकि सबसे उपयुक्त स्मारक तो यही है कि हम श्रद्धापूर्वक उस मार्गका अनुसरण करें जो उन्होंने हमें दिखलाया है और अपने जीवन तथा मरणमें अपने कर्तव्यको पूरा करते रहें।

वे एक हिन्दू और भारतीय थे—कई पीढ़ियोंके सबसे बड़े हिन्दू और भारतीय। और इसके लिए उन्हें अभिमान था। उन्हें भारतसे प्रेम था। क्योंकि उसने युगोंतक अनेक अपरिवर्तनीय तथ्योंका प्रतिनिधित्व किया है। किन्तु यद्यपि वे हृदयसे धार्मिक थे और उस राष्ट्रके पिता कहलाते थे जिसका उन्होंने उद्धार किया है, फिर भी संकीर्ण धार्मिकता अथवा राष्ट्रीयता उन्हें छू भी नहीं गयी थी। और इस प्रकार वे प्रयोजनीय एकता, समस्त धर्मोंकी अंतर्निहित एकता और मानवकी आवश्यकताओंमें अपने अगाध विश्वास और विशेषतः दरिद्रों, कष्ट-पीड़ितों तथा कोटि कोटि अत्याचार-पीड़ितोंकी सेवामें अपनेको निछावर करके एक महान अन्तर्राष्ट्रीय पुरुष बन गये थे।

उनके देहावसान पर उन्हें जितनी श्रद्धाजलियाँ प्राप्त हुईं उतनी इतिहास में अबतक किसी अन्य मानवको उसके निधनपर प्राप्त नहीं हुई। संभवतः जो बात उन्हें सबसे अधिक प्रिय लगती वह है पाकिस्तान-निवासियोंकी स्वतः प्रवृत्त श्रद्धाजलि। महाप्रयाणके बाद ही हम सब एक क्षणके लिए हालकी कटुता, भेदभाव और पिछले महीनोंके संघर्षको भूल गये और गांधीजी भारतवासियोंके उसी प्यारे नेता और हितचिंतकके रूपमें प्रकट हुए जो रूप इस जीवित राष्ट्रके दो टुकड़े होनेसे पहले दिखाई देता था।

क्यों था उनका अधिकार जनसमुदायके मस्तिष्क और हृदयपर? उनके आत्मीय होनेके नाते उनके व्यक्तित्वकी महत्ताका निर्धारण हम नहीं कर

सकते। उसका मूल्य तो आनेवाली सतति ही ऑकेगी। किन्तु यह तो हम भी अनुभव करते है कि सत्य ही उनकी सबसे बडी लगन थी। उस सत्यसे बाध्य होकर ही वे अनवरत रूपसे घोषणा करते रहते थे कि सुफलकी प्राप्ति दुष्कृत्यो द्वारा नहीं हो सकती, वह सुफल सुफल ही नहीं रहता यदि उसकी प्राप्तिमें बुरे ढंगोंका प्रयोग किया जाय। जब भी उन्हे अनुभव होता था कि मै त्रुटि कर बैठा हूँ, तब सत्य ही सब लोगोके सामने उन्हें अपनी गलती मान लेने पर बाध्य करता था और अपनी कुछेक गलतियोको तो उन्होने महान भूलके रूपसे स्वीकार किया था। बुराई और असत्यके विरुद्ध लड़नेके लिए उन्हे उसी सत्यने बाधित किया और इसमे उन्होने नतीजेकी कभी परवाह नही की। उसी सत्यने निर्धन व त्यक्त जनसमुदायकी सेवाको उनके जीवनका ध्येय ही बना दिया क्योंकि यदि कहीं असह्य अन्याय व अत्याचार होता है तो यह बुरा ही है तथा असत्य भी है। और इस प्रकार वे सामाजिक व राजनीतिक कुरीतियोके शिकार सब जन समुदायके प्रिय-भाजन तथा वास्तविक रूपमे मानवताके भारी प्रतिनिधि बन गये। इसी सत्यके कारण वे जिस स्थान पर भी बैठे वह मन्दिर बन गया, जिस भूमि पर उन्होने पदार्पण किया वह आदरणीय भूमि बन गई।

उनका नश्वर शरीर अब नहीं रहा। अब हम उन्हे फिर कभी नह देख सकेंगे, उनकी विनम्र आवाज नहीं सुन सकेंगे और नहीं किसी परामर्शके लिए उनके पास दौड़ जायगे। किन्तु उनकी अक्षय स्मृति व अविनश्वर सदेश हमारे पास बने रहेंगे। हम किस प्रकार उनका आदर कर सकते और उनके अनुसार रह सकते है?

भारतवर्षमे वे ऐक्यके समर्थक थे। ऐसे समर्थक जिन्होने हमे केवल यही नही सिखाया कि हम दूसरोंकी उपस्थिति सहन कर सके वरन् हमे बताया कि कैसे एक ही ध्येयकी पूर्तिके लिए हम उनके साथ कधेसे कधा भिडाकर मित्रता और भाईचारेकी भावनासे कार्य कर सकते है। उन्होने हमे सिखाया कि हम किस प्रकार अपनी क्षुद्रतासे ऊपर उठकर, अपनी गलत धारणाओंको भूलकर दूसरोंके गुणोका दर्शन कर सकते है। उनके जीवनके अतिम कुछ महीने व उनकी असाधारण मृत्यु ही हमारे लिए उनकी विशाल हृदयता, व सहन शीलताके प्रतीक है। उनकी मृत्युसे कुछ दिनो पहले ही हमने उनके सामने इन सबको प्रतिज्ञा की थी। हमे इस प्रतिज्ञापर अटल रहना चाहिए और यह समझ लेना चाहिए कि भारत हर व्यक्तिका घर है, उस हर व्यक्तिका जो यहा रहता है, चाहे उसका धर्म कुछ भी हो। हमारी इस भारी विपत्तिमे उसका भाग बराबर है और बराबर ही उसके कर्त्तव्य और जिम्मेदारिया है। हमारा राष्ट्र सम्मिलित राष्ट्र है जैसा हर महान् राष्ट्रको होना ही चाहिये। विचारोकी सकीर्णता अथवा इस महान राष्ट्रकी विशालताको सीमित करनेका कोई भी प्रयत्न गाधीजीकी अन्तिम

शिक्षासे हमे दूर ले जायगा। ऐसा कुप्रयत्न अवश्य ही हमें बरबादीकी ओर ले जायगा तथा हमारी वह स्वतंत्रता हमसे छिन जायगी जिसकी प्राप्तिके लिए उन्होंने अथक प्रयत्न किए तथा उसे हमारे लिए प्राप्त किया।

गाधीजी विदा हो गये है, यद्यपि उनकी आत्माकी छाया बराबर हमारे ऊपर है। अब बोझ हमारे ऊपर है और तात्कालिक आवश्यकता इस बातकी है कि हम इस भारको यथायोग्य वहन करनेका प्रयत्न करे। हमे मिलजुलकर काम करना है और साम्प्रदायिकताके उस भयानक विषका, जिसके कारण इस युगके महत्तम मनुष्यकी हत्या हुई है, उन्मूलन करना है। यह कार्य हमे पथभ्रष्ट व्यक्तियोंके प्रति दुर्भावना रखकर नहीं करना है, बल्कि इसके प्रति घोर विरोधकी भावना द्वारा करना है। यह विष गाधीजीकी हत्यासे समाप्त नही हो गया है। इससे भी अधिक जघन्य कार्य कुछ लोगो द्वारा कई प्रकारसे उस हत्या पर हर्ष प्रकट करना था। जिन्होंने ऐसा किया वे निश्चय ही भारतीय कहलानेके अधिकारी नहीं।

इसलिए मै सार्वजनिक जीवनमे सहिष्णुता, सहयोग और सगठनके लिए अपील करता हूँ कि हम प्रान्तीयता एव साम्प्रदायिकताके विषको नष्ट करनेका भरसक प्रयत्न करे। भारतके निर्माणके लिए औद्योगिक संघर्षको समाप्त करने और सम्मिलित प्रयास करनेके लिए भी मेरी अपील है। इस महान कार्यके लिए मै पुनः व्रत लेता हूँ और मेरी यह तीव्र इच्छा है कि हमारी यह पीढी गान्धीजीके स्वप्नोंको कुछ तो सत्य सिद्ध कर सके। तभी हम उनका सच्चा स्मारक बना सकेंगे और उनकी याद हरी-भरी रख सकेंगे।

[रेडियो भाषण : १४ फरवरी १९४८

○ ○ ○

विख्यात व्यक्तिके निधनपर शोक और प्रशसाके कुछ शब्द कहनेकी परम्परा रही है। मै नहीं जानता कि मेरे लिए या किसी अन्य सदस्यके लिए इस अवसरपर ऐसी कोई बात कहनी उचित है या नहीं क्योंकि मै निजी तौरपर और भारत सरकारके प्रधान मन्त्रीके नाते इस बातकी शर्मसे गडा जा रहा हूँ कि हम अपने अमूल्य रत्नको सुरक्षित नहीं रख सके। यह हमारी विफलता है। पिछले कुछ महीनोंमे भी हम बहुतसे निर्दोष, पुरुषों, स्त्रियों और बच्चोंको बचानेमे विफल रहे है। हो सकता है कि यह भार और यह कार्य हमारी शक्तिसे या किसी सरकारकी शक्तिसे कही अधिक बडा था। फिर भी यह विफलता है। आज हम सबके लिए यह अत्यन्त लज्जाकी बात है कि वह महान् पुरुष, जिसका हम अत्यन्त स्नेह और आदर करते थे, हमारे पाससे इसलिए चला गया कि हम उसकी पर्याप्त रक्षा नहीं कर सके। एक भारतीयके नाते मुझे इस बातसे लज्जा आ

रही है कि एक भारतीयने उनके विरुद्ध हाथ उठाया। एक हिन्दूके नाते मुझे इस बातसे शर्म आ रही है कि एक हिन्दूने ऐसा कुत्सित कार्य किया और यह कार्य इस समयके सबसे बड़े भारतीय तथा इस युगके एक महान् हिन्दूके विरुद्ध किया।

लोगोकी हम प्रशसा सुन्दर चुने हुए शब्दोमे करते है और महत्ताके लिए हमारे पास कुछ माप-तौल भी है। लेकिन हम उनकी कैसे प्रशसा करे और उसको मॉपे, क्योकि हमारे सामने वह साधारण पुरुष नही थे? वह इस ससारमे आये दीर्घकाल तक जीवित रहे और अब इस संसारसे चला गये। हमारी प्रशसाके शब्दोकी उन्हे आवश्यकता नहीं है, क्योंकि उन्हे तो किसी भी सामयिक जीवित व्यक्तिकी अपेक्षा अपने जीवनकालमे ही अधिक प्रशसा मिल चुकी थी। उनके स्वर्गवासके बाद दो या तीन दिनमे उन्हे ससारका सम्मान मिल गया है। क्या इसमे हम और वृद्धि कर सकते है? हम उनकी कैसे प्रशसा कर सकते है? हम उनके बालक रहे है और शायद उनकी सन्तानसे भी अधिक हम उनके आत्मीय रहे हैं, क्योकि हम सब उनके आत्मज थे। हम ऐसे अयोग्य बालक उनकी कैसे प्रशसा करे?

एक दिव्य आभा हमसे पृथक् हो गयी और जो सूर्य हमे प्रकाश तथा जीवन देता था वह अस्त हो गया हे और हम अन्धकारमे पड़े अब ठिठक रहे है। लेकिन वे नहीं चाहते थे कि हम इस प्रकार विचारे। क्योकि इतने वर्षोसे जो दैवी आभा हम देख रहे थे उसने हमे भी बदल दिया था। इन वर्षोमे उन्होने हमे एक नये सॉचेमे ढाल दिया था।

उस दैवी अग्निसे हममेसे बहुतोको कुछ चिनगारियॉ प्राप्त हो गयीं थी। इन चिनगारियोंने हमे सुदृढ बना दिया और इनकी सहायतासे उस महापुरुषके निर्देशित ढङ्गपर काम करने योग्य हम बन गये थे। आज कितने ही महान और लब्ध प्रतिष्ठ व्यक्तियोंके धातु और सगमरमर के स्मारक बने हुये है। लेकिन दैवी शक्तिके द्वारा महान पुरुषने अपने जीवन कालमे करोडो व्यक्तियोंके हृदयमे इतना स्थान प्राप्त कर लिया था कि हम सभी अल्पाशमे वैसे ही बन गये थे जैसे वे थे। लाखों व्यक्तियोंके हृदय मन्दिरमे वे बसे हुए है और वे अनन्तकाल तक बसे रहेगे।

इसलिए हम उनके लिए इसके सिवाय क्या कह सकते है कि हम इस अवसरपर अपनेको तुच्छ अनुभव करे। उनकी प्रशसा करनेके हम योग्य नहीं है। हम उनकी कैसे प्रशसा कर सकते है जब हम उनका ठीक तरहसे अनुसरण नहीं कर सके। जब वे हमसे कार्य, परिश्रम और त्याग चाहते थे तब इन सबके बदले कुछ शब्द कह देना उस महान आत्माके प्रति अन्याय करना है। गत ३० वर्षोसे,

अधिकाशमे, उन्होंने इस देशको बनाया और त्यागकी उस चोटी पर पहुँचा दिया जहाँ इस क्षेत्रमे इतनी उच्चता पर अभी कोई नहीं पहुँचा है। इस कार्यमे वे सफल हुये लेकिन अन्तमें कुछ ऐसी घटनाएँ हुई जिनके कारण उन्हे भारी आघात पहुँचा यद्यपि वे सदा मुस्कराते ही रहते-और उन्होंने कभी किसीसे कटु शब्द नहीं कहा। लेकिन उन्हे कष्ट अवश्य पहुचा। क्योकि जिस पीढीको उन्होंने शिक्षा दी थी वह विफल रही, जो मार्ग उन्होंने दिखाया था उससे हम पथभ्रष्ट हो गये और अन्तमे उसके एक बालकने, क्योकि वह भी तो हमारे समान उनका बालक ही है, उनका सांसारिक जीवन समाप्त कर दिया।

आजसे शताब्दियों बाद इतिहास इस युगका, जिससे हम अभी गुजरे है, निर्णय करेगा। इतिहास हमारी सफलताओ और असफलताओंका निर्णय करेगा—हम स्वयं तो इस कालके इतने निकट है कि न तो हम ठीकसे इसका निर्णय कर सकते है और न ही घटित तथा अघटित घटनाओंको समझ सकते है। हम तो केवल इतना ही जानते है कि विभूति थी जो अब नहीं है। हम यही जानते है कि इस समय चारो ओर अन्धकार है, किन्तु यह अन्धकारपूर्ण घटाटोप नहीं है क्योंकि जब हम अपने दिलोंको टटोलते है तब उनमे हमे एक ज्योति दिखाई देती है जिसे उन्होंने जगाया था। यदि यह ज्योति जलती रही तो हमारे देशमे अन्धकार नहीं होगा और हम सयत्न उनके मार्गका अनुसरण करते हुए तथा उन्हें स्मरण करते हुए इस देशको फिरसे देदीप्यमान कर देगे। यद्यपि हम साधारण मनुष्य है फिर भी हममे वह अनुरक्ति है जो उन्होने हममे भरी थी। अतीत भारतके वे सबसे बडे प्रतीक थे—मै कहना चाहूगा कि भावी भारतके भी वे उतने ही बडे प्रतीक थे। उस अतीत और भविष्यके बीच हम सकटपूर्ण वर्त-मानमे खडे है और हमे अनेक सकटोका सामना करना है। सबसे बडा सकट आस्थाका अभाव, पराजयकी भावना तथा नैराश्य है। जब हम अपने आदर्शोको डगमगाते देखते है और जो बाते हम अबतक कर रहे थे उन्हे शाब्दिक आडम्बर समझ जीवनधाराका प्रवाह दूसरी ओर देखते है, ये संकट हमें तब आ घेरते है। कुछ भी हो, मेरा विश्वास है कि यह दुविधाकी घडी शीघ्र ही बीत जायगी।

महात्मा गाधी अपने जीवनकालमे तो एक महान् पुरुष थे ही, अपनी मृत्युमे भी वे महान रहे। मुझे इसमे कुछ भी सन्देह नहीं कि अपनी मृत्युसे भी उन्होने उसी महान लक्ष्यकी सेवा की जिसकी वे जीवन भर सेवा करते रहे। हम शोकातुर है, उनका शोक हम सदा मनायेगे क्योंकि हम मानव है और अपने अलोकिक पथ-प्रदर्शकको भूल नहीं सकते। परन्तु मैं जानता हूँ कि वे हमे शोकावस्थामे देखकर प्रसन्न न होते। उन्होंने प्रियसे प्रिय सम्बन्धी अथवा मित्रके निधनपर भी कभी आँसू नहीं बहाये थे। वे केवल उस मार्गपर अग्रसर होनेका

दृढ संकल्प करते थे जिसे उन्होने ग्रहण किया था। इसलिए हमारे शोकमात्रसे तो वे कुपित ही होगे। शोक प्रदर्शन उनके प्रति उचित श्रद्धाञ्जलि भी नही है। उचित श्रद्धाञ्जलि तो यही है कि हम दृढ-निश्चय हो और फिरसे यह शपथ ग्रहण करे कि हम अपने आपको उसी महान् कार्यकी पूर्तिमे जुटा देगे जिसका बीडा उन्होने उठाया था और जिसमें उन्हे बहुत कुछ सफलता मिली। अतः हमे काम करना है, घोर परिश्रम करना है, बलिदान करना है और इस बातका प्रमाण देना है कि उनके सच्चे अनुयायी है।

यह स्पष्ट है कि यह दुर्घटना केवल एक पागल आदमीका अनायोजित कार्य नहीं है। इसका संबध हिसा और घृणाके उस वातावरणसे है जो कई महीनो और सालोसे—विशेषतया गत कुछ महीनोंसे—हमारे देशमे छाया हुआ है। वह वातावरण चारों ओर छाया हुआ है और यदि हमे वह लक्ष्य प्राप्त करना है, जो गाधीजीने हमारे सामने रखा तो हमे इस वातावरणसे लोहा लेना है, उससे संघर्ष करना है और हिसा तथा घृणाको जड़से उखाड़ फेकना है।

जहातक इस सरकारका सम्बन्ध है, मुझे विश्वास है कि इसको हल करनेमे वह कोई कसर नहीं छोड़ेगी, क्योकि यदि हम ऐसा नहीं करेगे और यदि हम अपनी दुर्बलतासे या किसी अन्य कारणसे इस हिंसाको रोकनेके लिए जोरदार कार्रवाई न करेगे और यदि हम शब्द और लेख द्वारा घृणाके प्रसारकी रोक-थाम नहीं करेगे तो हम सरकारमे रहने लायक नही होगे। हम निश्चय ही उसके अनुयायी होने योग्य नहीं है और उस दिवंगत आत्माके प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करनेके योग्य तो बिल्कुल नहीं है। इसलिए इस अवसरपर या अन्य किसी अवसरपर जब कभी हम इस महान पुरुषका हम स्मरण करे, हमे उनका स्मरण,कार्य, परिश्रम और त्यागके रूपमे, बुराइयोको दूर करनेके रूपमे और उनके निर्देशित सन्मार्गपर अचल रहनेके रूपमे करना चाहिये। यदि हम ऐसा करेगे, तो चाहे हम कितने ही अयोग्य क्यो न हो, अपना कर्त्तव्य पूरा कर देगे और उनकी आत्माके प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर सकेगे।

वह महान पुरुष इस ससारसे चला गया है और समस्त भारतमे ऐसा मालूम पड रहा है जैसे हम उजड़ गये हों। हम सभी इसका अनुभव करते हैं और मै नही कह सकता कि हम इस भावनासे कब मुक्त हो सकेगे लेकिन इस भावनाके साथ ही हम यह गर्व भी अनुभव करते है कि हमारा यह अहोभाग्य है कि हम महापुरुषकी छत्रछायामे कुछ कालतक रहे। आनेवाले युगमे शताब्दियों पश्चात् और हो सकता है कि हजारो वर्ष पश्चात् लोग हमारी पीढीके बारे मे यह सोचेगे कि उस पीढीके समय इस दैवी पुरुषका पृथ्वीपर अवतरण हुआ था। उस समयके लोग हमारे बारेमे सोचेगे कि हम लोग इस महापुरुषके

मार्गका अनुसरण कर सकते थे और शायद उनके पद-चिन्होंपर चल भी सकते थे। हमें अपने आपको उनके योग्य बनना चाहिये और हमें सदा ऐसा ही रहना चाहिये।

[भारतीय पार्लमेंट : फरवरी १९४८

० ० ०

आज राष्ट्रपिताकी अंतिम यात्रा समाप्त हुई। गत ५० वर्षोंके बीच गांधीजीने सारे देशकी यात्रा की। उन्होंने निःस्वार्थ भावसे जनताकी सेवाकी तथा सत्य और अहिंसाका प्रचार किया। अब वह महामानव हम लोगोंके बीच विचरण न करेंगे, किन्तु उनका सन्देश अमर रहेगा। उनके अस्थि प्रवाहसे हमारा उनका सम्बन्ध विच्छिन्न नहीं हो गया, अपितु यह और भी दृढ हो गया।

हमारा यह सौभाग्य है कि हम गांधीजीके युगमें रहे और हमने उनका यह शरीर देखा। अगली पीढ़ी तो उन्हें न देख सकेगी, किन्तु वह भी हमारी तरह इनसे प्रेरणा प्राप्त करेगी, क्योंकि उनके व्यक्तित्वका प्रभाव सदा अमिट रहेगा।

हम सदा गांधीजीके पास परामर्शके लिए जाते थे। अब हम उनकी ओर आशायुक्त नेत्रोंसे न देख सकेंगे और न उनसे अपनी कठिनाइयोंमें हाथ बॅटानेको कह सकेंगे। अब हमें उनकी सहायताके बिना समस्याओंको हल करना होगा। हमें उन्होंने जो शिक्षा दी है, वह सदा हमें प्रेरित करती तथा हमारा पथ-प्रदर्शन करती रहेगी।

गांधीजीने देशको स्वाधीनता-पथपर ले जाते हुए सदा हिंसा और साम्प्रदायिकताके विरुद्ध प्रचार किया। गांधीजी द्वारा देशको मिली आजादीके बाद लोगोंका आपसमें मतभेद हो गया तथा देशमें हिंसाकी लहर व्याप्त हो गयी। गांधीजीने जिस प्रकार पददलित जनताको आजादी दिलायी, विश्वके इतिहासमें अनुपम घटना है, किन्तु आज स्वाधीन भारत विश्वके समक्ष अप-मानित खड़ा है।

इधर देशमें साम्प्रदायिकता और हिंसाका विष फैल गया है। यदि यह हिंसा रोकी नहीं गयी तो हमारी आजादी नष्ट हो जायगी।

आज हमें प्रयागके इस गंगा तटसे यह संकल्प लेकर लौटना होगा कि हम हिंसा और साम्प्रदायिकताका उन्मूलन करेंगे। भारतके बहुतसे नौजवानोंने हिंसाका मार्ग अपनाया है। उन्हें अपनी मूर्खता समझने तथा अपना पथ परिवर्तित करनेके लिए विवश किया जाय।

देशमें साम्प्रदायिक घृणा और हिंसाका विप व्याप्त कैसे हुआ? कुछ जिम्मेदार व्यक्तियोने नयी पीढीको बहकाया तथा अपने स्वार्थकी पूर्तिके लिए अबोध जनतासे फायदा उठाया।

गाधीजीके प्रति कृतज्ञताके रूपमें हमारा उनके प्रति कुछ कर्तव्य भी है। हमें गाधीजीका अधूरा कार्य पूरा करना है तथा भारतको उन आदर्शोंके अनुकूल बनाना है। हमे धर्म और जातिका भेदभाव किये बिना सबको समान अधिकार देना चाहिये। यदि हम ऐसा नहीं कर सके तो इसका अर्थ यह होगा कि हम इतने बड़े नेताके अनुयायी होनेके योग्य नही है।

गत ४० वर्षोंसे जनता गांधीजीकी 'जय' बोलती रही है। गाधीजीने कभी अपनी व्यक्तिगत 'जय' नही चाही। वस्तुतः उनकी जय 'भारतकी जय' थी। उन्होने सत्य और अहिसाकी मजबूत नींवपर भारतीय स्वाधीनताका भवन खड़ा किया है। हमे इसे उनकी जयके स्थायी स्मारकके रूपमे मजबूत करना चाहिये और तब हम वस्तुतः कह सकेंगे—महात्मा गांधीकी 'जय'।

[प्रयाग सगम : १२ फरवरी १९४८

❀

माननीय सरदार वल्लभभाई पटेल

[उप-प्रधान मत्री, भारत सरकार]

अभी आपने मेरे प्यारे भाई पण्डित जवाहरलाल नेहरूका भाषण सुना। इस समय आप लोगोंसे कुछ विशेप कहनेमे असमर्थ हूँ। मेरा दिल दर्दसे भरा है। जबान चलती नहीं है। आज भारतके लिए दुःख, शोक और शर्मका अवसर है। थोडी देर पहले ४ बजे मै गाधीजीसे मिलने गया था और एक घटे मैने बाते की। घडीकी ओर देखनेके पश्चात् मुझसे कहने लगे 'मेरा प्रार्थनाका समय हो गया। मुझे जाने दीजिये' और यही कहते हुए गांधीजी बिडला-भवनके बाहर निकल पड़े। मै घर जानेके रास्तेमे ही था कि एक भाई आया और कहा कि एक नौजवान हिंदूने गाधीजीपर प्रार्थना-स्थलमे पिस्तौलसे गोली चलायी। गाधीजी इस आघातको सह न सके और उनके प्राण पखेरू उड गये। मै तुरत वहाँ पहुँचा। मैने उनका चेहरा देखा। वही चेहरा, शात, दया, और क्षमा भाव प्रकट हो रहा था। आस-पास काफी लोग जमा हो गये थे, पर वे तो अपना काम कर चले गये। चार दिनोसे उनका दिल कुछ खट्टा हो गया था। हालमें ही उन्होने उपवास किया था। यदि उसीमें वे चले गये होते तो अच्छा हुआ होता। कुछ दिन हुए उनपर

बम भी फेंका गया था किंतु वे बच गये। इस समय उन्हें जाना था। वे भगवानके मंदिरमें चले गये।

यह समय दुःख और शोकका है, क्रोधका नहीं। नहीं तो उनकी आत्माको चोट पहुँचेगी। उनका सबक हम भूल जायेंगे। उनकी कही गयी बातोंको हमने नहीं माना इसका धब्बा हमपर लग जायगा। हमारी आज परीक्षा हो रही है और शांतिपूर्वक एक दूसरेसे मिलकर हमें खड़ा रहना है। हमारे ऊपर बहुत बोझ है। बोझके मारे हमारी कमर टूटी जा रही थी। उनका एक सहारा था, वह भी चला गया। चला तो गया पर वह रहेगा और जो चीज दे गया है वह कभी जानेवाली नहीं है। कल ४ बजे उनकी मिट्टी तो भस्म हो जायगी किंतु हमेशा वह हमें देखते रहेंगे।

वह अमर हैं। मरनेसे, शायद वह जो अबतक भारतको नहीं दे सके थे अब पूरा हो जाय। जिस नौजवानने पागल होकर उन्हें मारा उसके हृदयको संयत होनेमें समय लगेगा। इसलिए मेरी प्रार्थना है कि जितना भी दुःख, दर्द हो पर हमें ध्यान रखना है कि हमें शान्ति, अदब और विनयसे उस कामको करना है जो उन्होंने सिखाया है। यह समय हमारे लिए हिम्मतसे मुसीबतका मुकाबला करनेका है। हमें मजबूतीसे कदम रखना है।

[रेडियो भाषण: ३० जनवरी, १९४८

० ० ०

गाधीजीकी हत्या देशपर गहरी चोट है। अब मुख्य प्रश्न यह है किस प्रकार यथास्थिति प्राप्त की जाय, अन्यथा विनाश है।

भारतमें धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक दलोंकी बहुत बड़ी संख्या है और यह महात्माजीका माहात्म्य था कि उन्होंने इन विभिन्न विचारों तथा उद्देश्यवालोंको एक कर स्वराज्यतक पहुँचाया, उनकी सफलताका मुख्य कारण था कि वह सबके थे, पर उनकी त्रुटियों और दुर्बलताओंसे परे थे।

अन्य लोगोंकी अपेक्षा वह दूरदर्शी थे और सदा सत्य-मार्ग खोजनेमें समर्थ हो जाते थे। वह साम्प्रदायिकताके विरुद्ध उपदेश देते थे। लोगोंको समझना चाहिये कि साम्प्रदायिकता विनाशकी ओर ले जानेवाली वस्तु है। आज समय है कि आप लोग अपने हृदयोंको टटोलें और देखें कि आपका कार्य कहाँतक गाधीजीके आदर्शोंके अनुकूल है।

महात्मा गांधीने जीवनके प्रत्येक पहलूपर विचार व्यक्त किये हैं और लोगोंको उसके अनुसार चलना चाहिये। [८ फरवरी, १९४८

० ० ०

भारतके प्रत्येक प्रदेशसे गांधीजीके उन मित्रो तथा सहयोगियोंके शोकपूर्ण पत्र मुझे प्राप्त हुए है जिनका गाधीजीके रचनात्मक कार्यक्रमसे घनिष्ठ सवन्ध था। गाधीजीके दुःखद अन्तसे ये सब भाई विह्वल, विमूढ और असहाय प्रतीत होते है। यद्यपि गाधीजीके प्रति उनकी ममता तथा उनके वियोगजनित विषादको मै भलीभॉति समझता हूॅ फिर भी मेरा इन सबसे निवेदन है कि वे इस राष्ट्रीय दुर्भाग्यका, गाधीजीकी शिक्षाके अनुसार, उसी प्रकार मुकाबला करे जिस प्रकार गाधीजी करते। यदि ये मेरे दुखी भाई वर्तमान दुर्घटनाको गाधीजीकी दृष्टिसे देखे तो वे समझ जायॅगे कि देरतक अत्यधिक शोक अथवा हीन भाव अनुचित है। राष्ट्रने गाधीजीकी तेरह दिनकी शोक-अवधिमे काफी अनुशासन और सयमका परिचय दिया है। ऐसी ही हमे आशा थी। शोक-अवधिकी समाप्तिपर अव हम सवको तत्काल गाधीजीके रचनात्मक कार्योमे जुट जाना चाहिये। दुख है, अव वे हमारा पथ-प्रदर्शन स्वयं न करेगे। परन्तु उनकी शिक्षा एव सत्प्रेरणा अवश्य हमारा मार्ग प्रकाशमय करती रहेगी। अतः हम सवका कर्तव्य हो जाता है कि हम शोक एव मोहको त्याग कर गांधीजीके अपूर्ण महान उद्देश्योकी पूर्तिमे एकनिष्ठ होकर संलग्न हो जायॅ। मै आशा करता हूॅ कि मेरे ये मित्र मेरी यह सलाह मानकर राष्ट्र-निर्माणके विभिन्न क्षेत्रोमे पुनः तत्परतासे सलग्न हो जायेंगे।

मै दुःखसे परन्तु पूरे जोरसे गाधीजीकी यादमे मंदिर अथवा ऐसे स्मारक वनानेके प्रयत्नका घोर विरोध करता हूॅ जिनमे उनकी मूर्ति-पूजाकी गध हो। मै निश्चय रूपसे कह सकता हूँ कि गाधीजी स्वयं इस प्रकारकी मूर्ति-पूजासे प्रसन्न न होते। इस विपयमे गाधीजीने निश्चयपूर्वक अपनी राय कई वार वतायी थी। अतः मेरा उन सव सज्जनोसे जो ऐसा करनेका विचार कर रहे हैं साग्रह अनुरोध है कि वे अपने इस विचारको छोड दे। गाधीजीकी आत्माको प्रसन्न करनेवाला स्मारक उनके महान उपदेशोपर अमल करके तथा उनकी अद्वितीय कार्यप्रणालीके प्रसार द्वारा ही वनाया जा सकता है। इसी प्रकार हम गाधीजी को अपने मनमदिरमे स्थान दे सकते है और क्या यह सच नहीं है कि हम सव गाधीजीकी मूर्तिको सदाके लिए अपने हृदयमे स्थान देना चाहते है।

भारतके स्वातन्त्र्य युद्धका इतिहास महात्मा गाधीका आत्मचरित है। मेरा अपना जीवन गाधीजीके जीवनसे घनिष्ठ रूपसे सम्वद्ध था। यदि गाधीजी भारत न आते तो क्या होता, कहा नहीं जा सकता। यदि महात्मा गाधी जैसे व्यक्तिकी हत्या हो सकती है तो देशमे क्या नही हो जायगा, कहा नहीं जा सकता। कुछ लोग तथा दल जो खतरनाक कार्यवाही कर रहे है उनका विरोध करना हमारा कर्त्तव्य है। सरकारने उनके विरुद्ध कार्यवाही करनेका दृढ निश्चय कर लिया है। जनता इस कार्यमे सहयोग करे।

[१० फरवरी, १९४८

माननीय मौलाना अबुल कलाम आजाद

[शिक्षा-मत्री : भारत सरकार]

यो तो मुझे अपने जीवनमे अनेक कठिनाइयो और आपदाओका सामना करना पडा है किंतु आज जो मुसीबत हम पर आयी है वह सबसे भारी और असह्य है। गाधीजीके निधनसे मेरा तो मस्तिष्क ही शून्य हो गया है। उनकी जीवन-यात्रा तो पूरी हो गयी किंतु अब हमारी नयी यात्राका प्रारभ हुआ है। हमे आशा है कि हम इसमे सफलीभूत होगे।

महात्माजीने अपने दुर्बल कधों पर मानवताका बहुत भारी बोझा उठा रखा था। अब वह बोझ हमे उठानेके लिये आगे बढना चाहिये। यदि भारतके हम करोड़ो व्यक्ति तैयार हो जाएँ और थोडा-थोडा बोझ बॉटकर आगे बढे तो हमे सफलता मिलेगी और यह कोई आश्चर्य न होगा।

इस समय लोगोको तीन बाते ध्यानमे रखनी चाहिये। पहली बात यह है कि गांधीजीकी हत्या किसी पागल या किसी व्यक्ति विशेषका काम नहीं है। इस समय चारो ओर विष फैल गया है, उसे हमे दूर करना है। दूसरी बात यह है कि सरकारने सब प्रकारकी साम्प्रदायिकताका उन्मूलन करनेके लिये निश्चय कर लिया है और तीसरी बात यह है कि हमे अपनी सरकारको शक्तिशाली बनाना है और इसके लिये हमे शातिपूर्वक कार्य करना होगा और स्वय अपने हाथमे कानून न लेना चाहिये। [२ फरवरी १९४८

० ० ०

यह पहला अधिवेशन है जिसमे गांधीजी अनुपस्थित है और हम सब उनकी महान क्षति अनुभव करते हैं। १२ फरवरीको वे अपने अतिम अवशेषसे भी हमसे जुदा हो गये, किन्तु उनसे हमारा आध्यात्मिक सबध सदैवके लिये बना रहेगा। उनका शानदार जीवन समस्त विश्वपर अपना प्रकाश फैला रहा और जो उपदेश उन्होने दिये और जिनके लिये वे जिये, वे हमारी बहुमूल्य निधि हैं।

हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने दिलोको टटोले और मालूम करे कि क्या वास्तवमे हम उनके पद चिन्हों पर चलनेको तैयार है। यदि उत्तर 'हा' मे आये तो उसे पवित्र समझा जाय और उसे भविष्यमे हमारा पथ-प्रदर्शन करना चाहिये।

यह कैसे हुआ कि एक व्यक्ति गाधीजी जैसे सतपर अपना हाथ उठा सका ? इस प्रश्नको एक पागल आदमीका कार्य कहकर नहीं टाला जा सकता।

गांधीजीकी हत्या देशमें फैली हुई परिस्थितियोंका परिणाम था और हमें सोचना चाहिये कि इन परिस्थितियोंके उत्पन्न करनेमें हम कहाँ तक जिम्मेदार थे। वास्तवमें गांधीजीके देहान्तकी हम सबका लज्जाजनक भाग है। ३० जनवरीकी रात्रिको मैंने अपनेसे पूछा कि मैं कहाँतक इस हत्याका जिम्मेदार हूँ तो मैंने देखा कि मैं जिम्मेदारीके बड़े भागसे नहीं बच सकता। मैंने अपने हाथोंमें गान्धीजीके खूनके छींटे देखी।

उनकी महत्ता प्रत्येक वस्तुसे ऊपर उठनेकी योग्यतामें और परिस्थितिको समझनेमें थी। उन्होंने अनुभव किया कि जिस रास्ते भारतके लोग जा रहे हैं, वह विनाशका मार्ग है। वे चाहते थे कि लोग उस खतरेको समझें। लोगोंने इसे समझा पर तब जब उनका मसीहा अपने जीवनसे हाथ धो बैठा। यदि हम पूजनीय गांधीजीसे प्रेम करते हैं तो हमें उनके ईश्वरीय सन्देशको समस्त संसारमें पहुंचाना चाहिये। हमारे कन्धोंपर महान जिम्मेदारी है और वास्तविक कार्य अब प्रारम्भ हुआ है। गांधीजीका कार्य समाप्त हो जाय ऐसा हमें नहीं करना है। साम्प्रदायिक सौहार्दकी उन्हें सबसे अधिक चिंता थी और हमें अपने जीवनमें उनके इस मिशनको पूरा करना चाहिये।

[अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, दिल्ली : २२ फरवरी १९४८

❀

माननीय सरदार बलदेव सिंह

[रक्षा मन्त्री भारत सरकार]

एक पागल हत्यारेके हाथने भारतको उसके इतिहासके निर्मातासे वंचित कर दिया। महात्मा गांधी, हमारे पथ-प्रदर्शक, करोड़ों भारतीयोंके "बापू" आज नहीं रहे और हम अनाथ हो गये।

कभी-कभी मैं 'बिड़ला-भवन'में उनसे मिलने जाता था। उनकी योग्यता एवं महत्ताके सम्बन्धमें मेरे जैसे व्यक्तिका कुछ कहना शोभा नहीं देता। मैं केवल इतना ही कह सकता हूं कि हर बार जब मैं उनसे मिलकर आया तब मैंने अपनेको सदैव अधिक उत्साहित, अनुप्रेरित तथा उन्नत पाया। थोड़ा बहुत यह जानते हुए कि उनपर कितना भारी बोझ था, उनकी क्या चिंताएँ थीं और साम्प्रदायिक रक्त-पात द्वारा हमारे अपनेको कलंकित कर लेनेसे उनको कितना गहरा क्षोभ हुआ था, मैं यह कह सकता हूँ कि मैं उनके महान धैर्य, सहिष्णुता एवं अडिग विश्वाससे अचंभित रह गया। वे कभी निराश नहीं हुए और भारतके प्रति उनका विश्वास कभी नहीं डिगा। वे जानते थे कि देशकी आत्मामें कितना विष प्रवेश कर गया है और उसे नष्ट कर रहा है। किन्तु साथ ही उनके पास

इसका उपचार भी था और वे इस उपचारको इतना अचूक समझते थे कि सदैव अपने सत्परामर्श द्वारा हमे कठिनाइयोंसे निवृत्त करनेका प्रयत्न करते रहे। उन्होंने इसीलिये कष्ट सहा कि हमें विशुद्ध कर सके और वे इसीलिये मरे कि हम जीवित रह सके।

क्या यह कोई आश्चर्य है कि आज उनके निधनपर सारा संसार क्षुब्ध और अश्रुप्लावित है। इस सत्यहीन अंधकार एवं संकटसे परिपूर्ण युगमे, महात्मा गांधीका जीवन एक दैवी प्रकाशके तुल्य था। हम, इस देशके वासी, उनका अत्यधिक आदर इसलिये करते हैं कि मातृ-भूमिको आजादी दिलानेकी हमारी राष्ट्रीय लडाईका नायकत्व उन्हींके द्वारा सफल एवं सम्पन्न हुआ। हम उन्हे अपने जनरल, सेनापति, पथ-प्रदर्शक और राष्ट्र-पिताके रूपमे मानते है। किंतु सारे संसारके लिये वे एक उपदेशक, एक सत एव एक पैगम्बर थे। उन्होंने मानवता को वह शिक्षा दी जो जितनी निरुपम थी उतनी ही मार्मिक भी। व्यावहारिक रूपमे उन्होने यह सत्य सिद्ध किया कि पाशविक शक्तिके विना भी पशुवलपर विजय प्राप्त की जा सकती है। आत्म-शक्तिके द्वारा युद्ध, द्वेष, सदेह और भयसे जर्जरित इस ससारमे गाधीजीने सत्य और प्रेमकी आवाज उठायी। उनके लिये विजय-प्राप्तिका स्थान रणभूमि नहीं वरन् अपनी ही आत्मा थी।

अपने अतिम दिनोंमे महात्मा गाधीने अपनी सारी शक्ति उस पागल-पनको दूर करनेमे लगायी, जिसके द्वारा विभिन्न सम्प्रदाय पारस्परिक रक्तपातके शिकार हो रहे थे। लज्जाके साथ हमे स्वीकार करना ही होगा कि अत्यधिक भयानक एव क्रूर कृत्योंके कारण ही गाधीजीको अपने जीवनके अन्तिम समयमे अनिश्चित काल तकके लिये अनशन करनेका सकल्प करना पड़ा। यह हमारे ऊपर सदैव कलक रहेगा। यदि सच ही हम वापूका आदर करते है और उनके योग्य बनना चाहते है, तो हमे इस कलकको मिटाना होगा। हमे अन्य सम्प्रदायो एव समुदायोंके प्रति दुर्भावनाका विचार तक त्याग देना होगा। हिन्दू, मुसलिम, ईसाई, पारसी और सिख, सबको ही इस मातृभूमिमे उस राष्ट्रपिताकी सतान के रूपमें भाई भाईकी तरह रहना होगा। गाधीजीको श्रद्धाजलि देने और उनकी स्मृतिको चिरायु रखनेका यही एक मात्र उपाय है। हमे न भूलना चाहिये कि वह घरेलू लडाईका विप ही था जिसने उस हत्यारेको गाधीजीको मारनेके लिये प्रेरित किया। हम हत्यारेसे घृणा न करे किन्तु हमे उसके इस विपसे घृणा करनी होगी। ऐ मेरे देशवासियो, आओ हम सब अपने घरेलू झगड़े समाप्त कर मस्तिष्क एव आत्मा द्वारा एक हो जायँ। महात्मा गाधीके महान एव उदारतापूर्ण कार्यको इसी तरहसे पूरा किया जा सकता है। इसी प्रकारसे हम अपनी इस मातृभूमिकी स्वाधीनताकी रक्षा कर सकेगे।

[रेडियो भाषण : ९ फरवरी १९४८

माननीय राजकुमारी अमृत कौर

[स्वास्थ्य मंत्रिणीः भारत सरकार]

निमेष मात्रमे हम अपने परम तथा प्रियतम नेता, सखा, दार्शनिक एवं पथ-प्रदर्शकसे वचित हो गये। नेतासे बढकर वह हमारे सबके बापू थे। हम उन्हें बापू व्यर्थ ही नही कहा करते थे, आज हम सब अनाथ है। इतिहासके इस सकट कालमे इस विपत्तिके भीषणताका अनुमान असंभव है। आये दिन हम उनके उपदेशसे वञ्चित रहेगे। उनके अचूक नेतृत्वमे हमे स्वराज्य मिला। १५ अगस्तके बादसे होने वाले दगोने उनके हृदयको विदीर्ण कर दिया।

वह भारत हिंसारत नही देख सकते थे। उन्हो ने हमारा नैतिक पतन देखा और प्रिय पिताके समान उचित पथ-प्रदर्शन किया। अमित प्रेमसे वह क्रोधका शमन कर रहे थे। विपत्तिमे वही एक आश्रय थे, क्योकि अराजकता, अव्यवस्था, हिंसा और द्वेपसे हम कहींके न रहते।

एक उन्मत्तके क्रोधने उनका शरीर नष्ट कर दिया पर उनकी आत्मा कौन नष्ट कर सकता है। वह सदा अमर है और उनके अस्तित्वको हम सदा अनुभव करेगे और उनके प्रति अधिक निष्ठावान होगे।

उनको वीर गति मिली और उनकी आत्माको विश्राम मिला। हमारे लिये उन्हे परम बलिदान करना पड़ा। हम अपने पापोको स्वीकार करे। प्रत्येक सच्चे भारतीयको इसके लिये लज्जासे नत मस्तक होना चाहिये कि हममे से एक नराधमने इस अमूल्य निधिको नष्ट कर दिया। ईश्वर उसे क्षमा करे और हम भी उस वधिकको क्षमा करनेका प्रयास करे। बापू यदि जीवित होते तो गोली मारते समय उसके ऊपर प्रेम करते।

शोकमग्न एव शोक-परिप्लुत हम लोग नैराश्यके अन्धकारमे मग्न है। सत्य तथा प्रेमके पथपर चलनेकी शक्ति हमे मिले और उनके निर्दिष्ट मार्गपर चलकर देशके कलंकका प्रक्षालन करे। ईश्वरकी दयासे हमे शक्ति मिले और हम बापूके प्रति सच्चे होकर उनके आदर्शोंके अनुसार भारतका निर्माण करे।

[रेडियो भाषण : ३१ जनवरी १९४८

० ० ०

गाधीजीकी हत्याके लिये व्यक्तिशः नाथूराम ही दोषी नहीं है, बल्कि देशका वातावरण ही विषमय हो उठा है। साम्प्रदायिक द्वेष सर्वत्र फैला हुआ है। उनकी हत्याके लिये हम सब उत्तरदायी है, क्योकि पनपनेसे पहले ही साम्प्रदायिकताको हम विनष्ट नहीं कर सके।

गांधीजी इससे बहुत दुखी थे। इधर वे बहुधा मुझसे कहा करते थे कि अब लोग मेरे बनाये हुए मार्गपर नहीं चल रहे है। जिस अहिंसाके द्वारा उन्होंने हमे स्वतन्त्रता दिलायी, उसीमे अब हमारा विश्वास नही रहा, यह दुःख है। अतः मै चाहती हूँ कि भारतकी स्त्रियाँ गांधीजीके सिद्धान्तोका मनन करे, क्योंकि बापूके स्वप्नोको साकार बनानेमे स्त्रियाँ पर्याप्त सहायक सिद्ध हो सकती हैं। आप प्रतिज्ञा करे कि हम गांधीजीका पथानुसरण करते हुए देशसे साम्प्रदायिकताका उन्मूलन करेगी।

गांधीजीको हमारी सबसे बडी श्रद्धाञ्जलि यह होगी कि हम प्रतिज्ञा करे 'हम भारतीय महात्मा गांधीकी संतान है। हम उनके और सिद्धातोंके प्रति वफादार रहेंगे। हम घृणा करनेवालोंको भी प्रेम करेंगे और सेवामे सलग्न रहेंगे।' भारतीय ईसाई इसी देशकी सन्तान है। वे भी महात्मा गांधीकी सतान है क्योंकि वे सभीको प्रेम करते थे। आज ईसाई सम्प्रदाय पितृहीन हो गया है।

मैं तो बापूके जूतोंको छूनेके लायक भी नहीं हूँ, उनको बड़ीसे बड़ी विजयके समय मैं उनके चरणोंमे क्या अजलि अर्पित कर सकती हूँ ?

बापूके लिये उस पारका परदा खुल गया है। आप हमेशा यही कहा करते थे कि मृत्यु तो मित्र है, और हमे उससे न डरनेकी सीख दिया करते थे। हमे, अपने नादान बच्चोको, आपने बहुत सी बाते सिखायीं। आपके पहलेके संत जिस सँकरे और टेढ़े मार्गपर चले हैं उसी पर स्वय चलकर आपने हमे जीवनका मार्ग बताया है। आपने हमे सिखाया कि वैर और दुश्मनीको प्रेमसे जीता जाता है। हमे आपने यह सिखाया कि सत्य ही भगवान हैं। आपने हमे अपने आचरणसे यह दिखाया कि उसकी सेवामे ही पूर्ण स्वतन्त्रता है।

जब वह हमारे बीच थे, तब उनके साथ जीवनकी लड़ाईमे आगे बढना कितना सरल था। उनकी श्रद्धा, उनका प्यार, उनकी हिम्मत और ताकत हमे सहारा देती थी और हम अपनी जगहपर कायम रहते थे। हमने अपने सारे बोझ उनपर डाल दिये थे और वे उन्हे खुशीसे उठाते थे। उनका हमपर अपार प्रेम था, इस कारण उनसे हमे अपार क्षमा मिलती थी।

ईश्वरकी बुद्धिका पार नहीं। उसने अब उन्हे अपने पास बुला लिया है। हम तो कमजोर मानव हैं। इसलिये उनके चले जानेसे हमे लगता है कि हम लाचार और अनाथ हो गये है। उनके बिना हमारा दिल तड़पता है, हमारी आँखोंसे आसुओकी धार बहती रहती है, डरने मनपर काबू जमा लिया है और हमारी श्रद्धा कमजोर हो गई है, क्योंकि उन्होंने हमे एसे समयपर छोडा है, जब हमे उनकी सबसे अधिक जरूरत महसूस हो रही है। उनकी सबसे बडी विजयका समय हमारी सबसे बडी हारका समय है, क्योंकि हमारा ही एक भाई,

उनका ही एक नादान बच्चा सही रास्तासे हटा और उसने हमारी मातृ-भूमिपर कलंक लगा दिया।

लेकिन कमजोरी और डर तो उनके शब्द-कोशमे था ही नहीं। वे उन्हे जानते ही नहीं थे। वे बुराईकी ताकतोंके खिलाफ लगातार लड़ने वाले योद्धा थे। बुराईकी ये ताकते आज हमारे देशमे आजादीसे घूमती फिरती है, क्योकि नफरत और हिंसा, पाप और बुराईकी दो जुडवॉ लड़कियॉ ही तो है। इनके साम्राज्यमे हमे अपनी आत्माके खो जानेका डर है। उन्होने जो राजनीतिक स्वाधीनता हमें दिलायी, वह उनके सपनोंके रामराज्यकी पहली सीढी ही थी।

इसलिये अपनी मानव कमजोरीके होते हुये और चारो तरफ दु खका वातावरण फैला होनेपर भी हमे सारा डर छोड देना चाहिये, और सत्य एव अहिंसाके कभी न जीते जाने वाले हथियारोंकी मददसे अपनी लडाई जारी रखनी चाहिये। सिर्फ इसी तरह हम उनके बच्चे कहलाने योग्य बन सकते है। हम सिर्फ इसी तरह काम करे, इसी तरह हम उनके अटूट क्षमावाले प्यारकी शक्तिसे सहारा पा सकेगे।

भगवान करे महाशून्यसे उनकी प्यारी वाणीका संगीत सुननेको मिले। वे जब हमारे बीच जिन्दा थे तब उनके शब्द, उनके काम और उनके विचार हमे जिस तरह ताजा बनाते और प्रेरणा देते थे, उसी तरह अन्त हमे उनकी मीठी याद, फुर्ती और प्रेरणा दे। उनका प्रेम हमेशा हमपर छाया रहे। उनकी दिव्य आत्माका प्रकाश अब भी हमे रास्ता दिखावे। न दिखते हुए भी सदा हमारे साथ रहे और टेढ़े रास्तोंपर प्यारसे हमारी रहनुमाई करते रहे। यही मेरी प्रार्थना है।

उनके जीवन-मार्गमे विश्वास रखनेवाले हम लोगोको उन्होने जैसी सेवाकी शिक्षा देनेकी कोशिश की, उसी सेवाकी शिक्षा हम सब फिरसे ले। सिर्फ यही अंजलि हम उनके चरणोमे अर्पण करनेकी हिम्मत कर सकते है।

※

बापूकी मृत्युसे व्यथित, शोकमग्न, हतप्रभ नेहरूजी
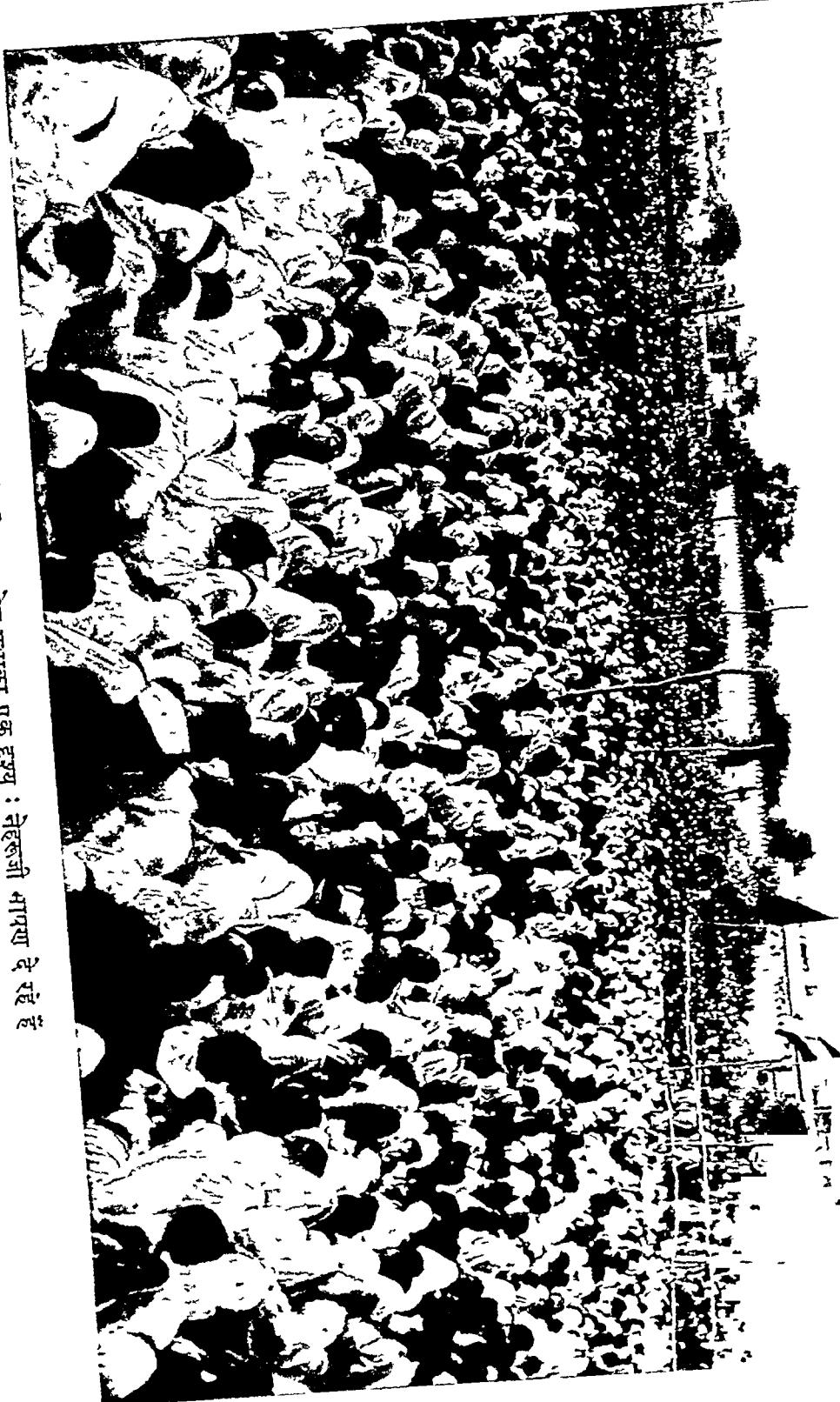
दिल्लीमें विराट् शोक-सभाका एक दृश्य : नेहरूजी भाषण दे रहे हैं

माननीय नरहरी विष्णु गाडगिल

[खान तथा विद्युत-मन्त्री भारत सरकार]

महात्मा गांधी एशियाके ही नहीं वरन् वस्तुतः बुद्धके बाद समस्त विश्वके सर्वश्रेष्ठ महामानव थे। उस विश्वके लिए, जो कुछ दिनों पूर्व दो महायुद्ध देख चुका है, गांधीजीकी सबसे महती देन उनकी शांति और अहिंसाकी शिक्षा है।

विश्वमे स्थायी शान्तिकी स्थापनाके लिए महात्माजीकी ही शिक्षा मंगलकर हो सकती है। उनकी शिक्षामे आदर्शवाद तथा यथार्थवादका बहुत ही कल्याणकारी सामञ्जस्य था। महात्मा गाधी प्रखर बुद्धिवाले थे, ईश्वरमे उनका अविचल विश्वास था और दुर्बल शरीर होते हुए भी उनमे शक्तिमयी दृढता थी। महात्मा गाधीका जीवन मौलिक विभूतियोंसे संपन्न था। धरतीसे क्षमा तथा सहिष्णुता, जलसे प्रेम, पवनसे गतिमय व्यक्तित्व, आकाशसे तेज उन्हें मिला था। वे मानवताके प्राण थे। बारदोलीका किसान और विंडसर-प्रासादके राजकुमार दोनों उनके सामने समान थे। जीवनका कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं था जिसमे उन्होंने आदर्श आचरण न किया हो। उन्होंने इस देशके कितने ही प्राणियोंको आध्यात्मिक बना दिया। अपने राजनीतिक गुरु गोखलेकी भॉति उनका भी विश्वास था कि विनय अधिक बलशाली और लाभदायक होती है। उनका स्वभाव कुसुमसे भी कोमल था किन्तु उपयुक्त समयपर वे वज्रसे भी कठोर हो जाते थे। भारतका गौरव था कि उनके ऐसा व्यक्ति यहॉ उत्पन्न हुआ और हम लोगोंका सौभाग्य था कि उनके साथ रहे, उनकी वाणी सुनी और उनके अनुगामी हुए। यह हमारी अनुपम भाग्यशीलता थी। महात्माजीकी मृत्युसे स्पष्ट हो गया कि ससारके मनुष्योंके हृदयमे उनके लिए सम्मान था। उनका सबसे बड़ा सम्मान जो हम कर सकते है वह यह है कि उनके आदर्शोको कार्यान्वित करे और उनकी शिक्षाओंपर चले। जनताको शोक छोड़कर महात्मा गाधीके उपदेशोंका पालन करना चाहिये। सरकार इस बातका पूर्ण प्रयत्न करेगी कि गाधीजीके नेतृत्वमे काग्रेसके जो आदर्श रहे है, उनको कार्य रूपमे परिणत किया जाय। इस कार्यमे जनताका हार्दिक सहयोग अपेक्षित है।

प्रजातान्त्रिक व्यवस्थाका आधार बहुमतका शासन और सहिष्णुता है। ८० प्रतिशत हिंदू जनताको राजनीतिक उद्देश्योंकी प्राप्तिके लिए साम्प्रदायिक सघटनकी कोई आवश्यकता नहीं। जो मुसलमान हिंदको अपना राष्ट्र मानते है उनको भी साम्प्रदायिक आधारपर एक राजनीतिक संघटन बनानेकी क्या आवश्यकता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और हिदू महासभा जैसी संस्थाओंका कार्य हिन्दूओंमे जातिभेद और अन्य विषमताओं उन्मूलन होना चाहिये था। अब

भी सामाजिक और सांस्कृतिक प्रगतिके लिए इस कार्यका पूरा होना आवश्यक है। गाधीजीने हमारे ऊपर रक्षाका भार सौप दिया है। एकताके द्वारा हम उसे सुदृढ़ बना सकते है। शांति भग करनेवाले देशका बहुत अहित करते है। प्रतिशोधके कारण धन, जनकी इतनी बड़ी क्षति हुई है। अपराधियोको दण्ड देनेके लिए सरकारके पास पर्याप्त शक्ति है। जनताका कार्य समाजमे शाति स्थापित करना है। इस हत्यासे हिन्दू समाज छिन्न-भिन्न हो गया है और उससे राष्ट्रके भीतर और बाहर शत्रुओंको बल मिला है।

चन्दनकी चिताग्निने, जिसमें उनकी क्षीण काया भस्मीभूत हो गयी लोहेकी गोलीको भी सुवासित कर दिया। आज महात्माजीका सार्वभौम प्रेम समस्त विश्वमे व्याप्त हो गया है। क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है? आगेसे भारत 'गाधीय' कहा जायगा। गाधीवाद हमारा धर्म होगा। गांधीजी 'ओम' के मधुर सगीत, दक्षिण मलयके माधुर्य तथा बालकोंकी निर्दोष मुखाभामे वर्तमान हैं।

❀

माननीय डाक्टर श्यामाप्रसाद मुखर्जी

[उद्योग- मन्त्री भारत सरकार]

भारतपर वज्राघात हुआ है। जब विश्व अन्धकारमें मार्ग टटोल रहा था उस समय गाधीजीने प्रकाश दिखाया। आज वह दीपक बुझ गया।

उनकी मृत्यु देशपर सबसे भारी आघात है। जिस व्यक्तिने भारतको स्वतंत्र करके अपने पाँवो पर खड़ा किया, जो सबका मित्र था और किसीका भी शत्रु नही था, जिसे करोड़ों व्यक्ति प्रेम और आदर करते थे, उसका अपनी ही जाति और अपने ही धर्मके एक हत्यारेके हाथों मारा जाना अत्यधिक लज्जा और दुःखकी बात है। गांधीजी ऐसे व्यक्ति है जिनका प्रभाव कभी नहीं मिटता बल्कि समय गुजरनेके साथ निरन्तर बढता जाता है। हत्यारेकी गोलीने महात्मा गाधीकी नश्वर देहको ही नहीं बींधा अपितु हिन्दू धर्म और भारतके हृदयको भी बींध डाला है और जो केवल तभी जीवित रह सकते है जब लोग दृढ निश्चयके साथ ऐसे तरीकोंका अपनाया जाना असम्भव बना दे।

माननीय षण्मुखम् चेट्टी

[अर्थ मन्त्री भारत सरकार]

महात्मा गान्धीकी मृत्युसे विश्वका एक उन्नायक, समग्र राष्ट्रका पिता और हम लोगोंका मित्र, दार्शनिक तथा पथ-प्रदर्शक चला गया। नवजात भारतीय स्वतन्त्रताको पंजावकी विकराल दुःखद आन्धीका सामना करना पड़ा। सरकार को उजडी मानवताकी रक्षाके लिए अपने समस्त साधनोंको लगा देना पडा। साथ ही अपनी आर्थिक व्यवस्थाको भी सुधारना था। प्रथम चरणमें बादलमे प्रकाशके समान आशाकी किरणे दिखाई पड रही थीं, पर अकस्मात आकाश और ब्रह्माण्ड को विदीर्ण करनेवाला वज्राघात हुआ। एक बार देशपर फिर संकट आ गया। राष्ट्र-शिशु अनाथ हो गया और समस्त देश तमसावृत हो गया। यह सत्य है कि गान्धीजीकी मृत्युसे उदीयमान स्वतंत्रताका संरक्षण समाप्त हो गया। मुझे आशा है, देश इस भयकर स्थितिका सामना करनेमें समर्थ होगा। मृत्युमे भी आशा रखते हुए हम देशको गाधीजीके आदर्शोंके अनुरूप बनायेगे।

माननीय जगजीवनराम

[श्रम मत्री भारत सरकार]

यह शोक शब्दोंकी अभिव्यक्तिसे परे है। विश्वका सबसे बडा आत्मा चला गया। सारा देश अनाथ हो गया है, विशेषत. हरिजनोंका सच्चा उपकारक, उनका निधि चला गया। हमारा बाल स्वातन्त्र्य कसौटीपर है। यह हमारी योग्यता एव क्षमताका परीक्षाकाल है। बापूके रूपमे हमारा ईश्वरीय संरक्षण अकस्मात् चला गया। इस समय सत् और असत्, संघटन और विघटन, प्रगति और प्रतिगतिका सघर्ष हो रहा है। यह महान ठेस और परीक्षाका समय है। क्या हम खड़े रह सकेंगे या भारतीय इतिहासकी पुनरावृत्ति होगी। विश्वकी सर्वोच्च आत्मा बापूका बलिदान व्यर्थ न जायगा और हम लोग एक होकर उनके उद्देश्योंको सिद्ध करेंगे और देशमे एकता और शान्ति स्थापित करेंगे।

० ० ०

भारतकी पसीना बहानेवाली मूक जनता चाहे वह खेतोंमे काम करती हो अथवा कारखानोंमे, अथवा यों कहिये कि भारतका दरिद्रनारायण आधुनिक

भारतके निर्माता और भारतीय राष्ट्रके पिता महात्माजीके सबसे निकट और प्रिय था। गांधीजी ही पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अत्याचार, शोषण और वर्गजन्य उच्चताकी भावनाके प्रति विद्रोह किया और देशकी दरिद्र और उत्पीड़ित जनताको आशाकी ज्योति दिखाकर प्रकाशमान किया।

आज न केवल भारत बल्कि समस्त संसार शोक और दुखके पारावारमे डूबा हुआ है। गांधीजीके निधनपर सर्वत्र शोक और दुखकी जो स्वाभाविक लहर दौड़ गयी, वैसी इतिहास अथवा मनुष्यके जीवनमे पहले कभी नहीं देखी गयी। कारण स्पष्ट है। गाधीजीने जीवन भर सत्य और अहिंसा, प्रेम और सहिष्णुता, एकता और भ्रातृत्व और सद्भावनाके जिन सार्वभौम सिद्धान्तोंका प्रचार किया, उनसे मानवका अन्तरतल प्रभावित हो उठा। हिंसा और फूटके कटु वातावरणमे गाधीजीके ये शाश्वत सिद्धान्त मानव समाजको सान्त्वना देते थे। महात्मा गाधी मुख्यतः एक आध्यात्मिक शक्ति थे और जहाँ आत्माका साम्राज्य हो, वहाँ जाति और देशके बन्धन नही ठहर सकते। घृणा, विद्वेष और अविश्वाससे छिन्न-भिन्न संसारमे महात्मा गाधीका सिद्धान्त मानो नैतिक अधःपतन और मानवताकी अधोगतिके विरुद्ध विद्रोह था। उनके जीवनकी सर्वाधिक उल्लेखनीय और महत्वपूर्ण बात यह थी कि उनके कथन और आचरणमें कोई भेद न था। वे जो कुछ कहते थे वही करते थे, जो कुछ वे स्वयं नहीं करते थे उसकी आशा दूसरोसे कभी नहीं करते थे। गाधीजी सदैव गीता द्वारा प्रतिपादित स्थितप्रज्ञके आदर्शपर चले। गीताके श्लोक सदैव उनकी दैनिक प्रार्थनाके मुख्य अग रहे। उनके सामने जीवनका प्रत्येक कार्य यज्ञ था। उन्होंने जो कुछ भी किया त्याग और उत्सर्गकी भावनासे प्रेरित होकर ही किया। उन्होंने फलकी कभी कामना नहीं की। जीवन और कर्त्तव्यके सम्बन्धमे उनकी विचारधारा एक कर्मयोगीकी विचारधारा थी। उनके अनुसार कर्मयोगी मानवकी समस्त महत्ता और श्रेष्ठताका प्रतीक है जिसके द्वारा ईश्वर अपनी इच्छाकी पूर्ति करता है। गाधीजीमे हिन्दू धर्म और निर्मल हिन्दू संस्कृतिकी श्रेष्ठ विशेपताएँ विद्यमान थीं। उनमे प्राचीन तथा अर्वाचीनका उल्लेखनीय सश्लेषण पाया जाता था।

गाधीजीका एक सर्वप्रिय भजन 'काको नाम पतित पावन जग केहि अति दीन पियारे' था। ये सब भगवानके गुण हैं, किन्तु ये ही स्वयं महात्माजीमे उल्लेख रूपमे पाये जाते थे।

जीवनके अन्तिम क्षणतक उन्होंने भारतकी जनताको वह प्रतिष्ठा और मर्यादा दिलानेकी चेष्टा की, जिसकी वह जन्मतः अधिकारी रही है, किन्तु जिससे उसे वंचित रखा गया था।

अस्पृश्यता निवारणके प्रश्नपर गांधीजीके विचारोंकी दृढता सामाजिक क्रान्तिके क्षेत्रमे एक बड़ा भारी पग था, क्योंकि केवल वही एक ऐसे व्यक्ति थे

जिनमे वह सूझबूझ थी और जो इस बातकी घोषणा साहसपूर्वक कर सकते थे कि अस्पृश्यताके रहते हिन्दू समाजकी प्रगति स्वाधीनताके लक्ष्यतक असभव है उनकी सहानुभूति केवल मौखिक न थी, अपितु वे अस्पृश्यताके गढको ध्वस्त करनेके लिए ठोस कार्य करनेको सदैव कटिबद्ध थे। उन्होंने हरिजनोंके अपना प्रश्न बनाया और काग्रेसको उसे अपने कार्यक्रमके अभिन्न प्रश्नको अगके रूपमे स्वीकार करनेके लिए विवश कर दिया। उनके जीवनका उद्देश्य हिन्दू धर्मसे इस बुराईको निकाल बाहर करने और उसके इस कलकको धोनेका था। यद्यपि अस्पृश्यताका भूत अभीतक हमारे देशमे विद्यमान हैं, क्योंकि सामाजिक दुर्भावनाएँ और कट्टरता बहुत दिनोंमे दूर होती है, फिर भी महात्माजीने इस बुराईके विरुद्ध जिन शक्तियोंको जन्म दिया था, वे अभीतक काम कर रही हैं और यह अत्युक्तिकी आशकाके बिना ही कहा जा सकता है कि अस्पृश्यताके दुर्गपर विजय प्राप्त हो गयी और उसकी नींव हिल गयी है। अभी एक और झटके तथा आयोजित प्रयत्नकी आवश्यकता हैं जिसके परिणाम-स्वरूप उसका भवन धराशायी होकर छिन्नभिन्न हो जायेगा।

सांप्रदायिक झगडोंके कोलाहलमे कुछ क्षेत्रोंमे दुर्भाग्यवश गांधीजी द्वारा हिन्दू जातिके प्रति की गयी सेवाओंकी पर्याप्त रूपसे इज्जत नहीं की गयी। अबतक हिन्दुओंमे जितने भी महापुरुषोंने जन्म लिया है गाधीजी निस्सदेह उनमे सबसे बड़े थे। गाधीजीने धर्मके जिन सार्वभौम सिद्धान्तोंका प्रचार किया और जिस रूपमे उनकी व्याख्या की उससे हिन्दूधर्मकी कीर्तिमे अभिवृद्धि हुई और बहुत हद तक उन्हें हिन्दूधर्मके विरुद्ध फैली हुई भ्रान्त धारणाओंके निवारण करनेमे सफलता मिली। उनकी इन सफलताओंका सही मूल्याकन तो भावी इतिहासकार ही कर सकेंगे। ऐसे समय जब प्रतिक्रियावादी शक्तियोंके परिणाम-स्वरूप समस्त देशमे सकुचित साम्प्रदायिकताका बोलबाला था तथा देशमे घृणा और हिंसाका प्रचार हो रहा था, केवल गाधीजी ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने हिन्दुओंको अपने उच्च धार्मिक आदर्शोंसे नीचे गिरनेसे रोका। उन्होंने अपने महान प्रभाव और नैतिक बलका प्रयोग करते हुए हिन्दुओंसे कहा कि वे प्रतिशोध और प्रतिहिंसाकी अग्निमे न कूदे और निर्बल और निराश्रितों तथा स्त्रियों और बच्चोंपर जघन्य अत्याचार न करें। कितने ही लोगोंका जो 'जैसेको तैसा' के सिद्धान्तमे विश्वास करते हैं, गाधीजीके इस ठोस और गभीरतापूर्ण किन्तु कटु परामर्शसे चिढ पैदा हो जाती थी। उनकी यह प्रतिक्रिया हमारी समझमे आसानीसे आ जाती है। किन्तु जब हम अपने समीपवर्ती दूषित वातावरण और संकुचित साम्प्रदायिकतासे ऊपर उठेंगे तब हमे पता चलेगा कि महात्माजीने अपनी सामयिक चेतावनी और तीव्र भर्त्सना द्वारा और अन्तमे सत्य और न्यायकी रक्षाके लिए अपने प्राणोंतक की बाजी लगाकर हिन्दुओंके पापोंका प्रायश्चित किया। इस प्रकार हम देखते है

कि गांधीजीने अपने बलिदान द्वारा हिन्दू धर्मको सदाके लिए रसातलमें जानेसे रोक लिया और दुनियाकी नजरोंमें उसकी प्रतिष्ठा बढायी। हिन्दुओंको गांधीजीका अत्यधिक आभारी होना चाहिये कि उन्होंने ऐसे समय जब भावावेशमें बह जाना आसान था और संयमसे काम लेना कठिन था, उन्हें गलत मार्ग पर भटक जानेसे रोक दिया। लेकिन गांधीजीने हिन्दू धर्मकी जिन अच्छाइयोंपर जोर दिया है उनके कारण उनके द्वारा प्रतिपादित धर्मकी सार्वभौमिकता किसी प्रकारसे भी कम नहीं होती। धार्मिक सहिष्णुता और सद्भावनाके उच्च आदर्शोंका जितना सुन्दर सम्मिश्रण हमें गांधीजीके जीवनमें मिलता है उतना और कहीं नही मिलता है। आम लोगोंके विरोध और प्रार्थना-सभाओंमें प्रतिक्रियावादियों तथा कट्टर पंथियोंकी तनिक भी परवाह न कर गाधीजीने सार्वभौम धर्मकी शिक्षा दी और यह बताया कि सभी धर्म समान है और उनमें अच्छाइयाँ है। गाधीजीमे ही यह साहस और शक्ति थी कि वे हिन्दुओंकी सभाओंमे भी 'ईश्वर अल्लाह तेरे नाम' सरीखा भजन गा सकते थे और कुरानकी आयते तथा बाइबिल पढ सकते थे। उनके जीवनकी महत्ता, श्रेष्ठता और उत्कृष्टताका यही रहस्य था। संसारके इतिहासमे सहिष्णुता और धार्मिक उदारता और उत्कृष्टताका इससे उज्ज्वल उदाहरण अन्यत्र कहाँ मिलेगा।

गांधीजीने श्रमिक वर्गके उद्धारके लिए जो बहूमूल्य कार्य किया है वह उनकी अन्य चमत्कारपूर्ण सफलताओंकी तुलनामें कम महत्वपूर्ण नहीं है। पहले पहल दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रह-आन्दोलनके दिनोमे उन्होंने मजदूर वर्गके कल्याण संबंधी-कार्योमे अपना सहयोग प्रदान किया। यह आन्दोलन मुख्यतः उस देशमे जाकर बसनेवाले भारतीय मजदूरोके मौलिक अधिकारोंकी स्वीकृति के उद्देश्यसे ही चलाया गया था। भारतका मजदूर वर्ग उनका विशेप रूपसे आभारी है। देशके मजदूर आन्दोलनके निर्माणमें यद्यपि उनका काफी हाथ रहा है फिर भी मजदूरोंके लिए उनकी अप्रत्यच्च सेवाओंका महत्व कहीं अधिक व्यापक है। गाधीजीने मजदूरों और मालिकोके औद्योगिक सम्पर्ककी एक नयी प्रणालीको जन्म दिया। अहमदाबादकी कपड़ेकी मिलोंमे काम करनेवाले मजदूरोंके ऐतिहासिक आन्दोलनको गांधीजीसे प्रेरणा मिली। उसमे वे भारतीय मजदूरोके मान्य नेता बन गये। इस ऐतिहासिक आन्दोलनके अवसरपर गाधीजीने सर्वप्रथम उपवास किया जिसका उद्देश्य मालिकोंको यह समझाना था कि औद्योगिक झगडोंके निबटानेका सर्वोत्तम और उपयोगी उपाय पचायती निर्णय है। और हम देखते है कि अहमदाबादके मिल-मालिक और मजदूर आजतक इसी परम्परा और तरीके पर दृढतासे अमल कर रहे हैं। उनका मद्य-निपेध आन्दोलन वास्तवमे श्रमिकवर्गकी भलाईके लिए ही था। इसका उद्देश्य मजदूरोंके कष्टोंका निवारण और उनके नैतिक तथा भौतिक मानस्तरको उन्नत करना था। मजदूरोंके लिए उनकी यह महती सेवा थी।

एक ऐसे व्यक्तिके प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करनेके लिए मैं उपयुक्त शब्द कहाँ से लाऊँ जिसका हमारे ऊपर इतना अधिक ऋण है और जिससे उऋण होनेके लिये हमने कुछ भी नहीं किया। वास्तवमे यह हमारे लिये सदैव लज्जाकी बात रहेगी कि उनकी हत्या एक भारतीय और एक ब्राह्मणके हाथ हुई। परन्तु जिस प्रकार आत्मा अजर और अमर है उसी प्रकार अवतारोंके उपदेश और उनकी शिक्षाएँ भी अमर हैं। यद्यपि आज गाधीजी का भौतिक शरीर हमारे मध्य नहीं है फिर भी उन्होंने हमे जो प्रकाश दिखाया है उससे हमारा पथ सदैव प्रकाशमान होता रहेगा और उचित मार्ग पर चलने के लिये हमे प्रेरणा मिलती रहेगी। जब कोई राष्ट्र अपने लक्ष्यकी ओर आगे बढता है तब उसके जीवनमे निराशाके कुछ क्षण भी अवश्य आते हैं और उसका पथ अन्धकारसे आच्छादित हो जाता है। ऐसे सभी अवसरोंपर उसे निश्चित रूपमें उस दैवी शक्तिसे प्रेरणा मिलती है और वह उसीके सहारे अपने पथपर बढा चला जाता है। मेरी उस दयानिधान ईश्वरसे यही एकमात्र हार्दिक कामना है कि वह हमे उस युग-पुरुषका योग्य अनुयायी बनाये जिसने मानवताके लिये अपना बलिदान दिया और जिसने हमारे सम्मुख त्याग, सेवा और सहिष्णुताका उच्चत्तम आदर्श उपस्थित किया।

"गांधीजी चिरंजीवी हों" "महात्मा गांधी की जय"

❀

माननीय श्री रफी अहमद किदवई

[यातायात मंत्री भारत सरकार]

इस भयकर दुर्घटनाकी निन्दा करनेके लिए शब्द नहीं मिलते। हमलोगो ऐसा अभागा कौन होगा, जिसने असमय उन्हे खो दिया! भारत उनका सदव ऋणी रहेगा।

❀

माननीय डाक्टर भीमराव अम्बेडकर

[कानून मत्री भारत सरकार]

गाधीजीको खोकर वस्तुतः भारतने अपना बहुत कुछ खो दिया है। मानवताको उनपर गर्व था। दलितों और पीड़ितोंका एक सहारा चला गया। उनका जीवन ही परोपकारके लिए था, वे उसीके लिए जिये और उसीके लिए मरे। भारतीय राजनीतिको उनकी देन अमर है और है प्रेरणात्मक।

❀

माननीय डाक्टर जान मथाई

[रेलवे मत्री भारत सरकार]

गाधीजी महान् थे और उनके कार्य तो और भी महान थे। उन्हें खोकर मानवताने अपना एक श्रेष्ठ उपासक खो दिया। उनका व्यक्तित्व बहुत ही भव्य एवं आकर्षक था। भारत ही नहीं सारा संसार इस भयकर दुर्घटनापर शोक-प्रकाश करेगा।

❀

माननीय सी० एच० भाभा

[व्यापार मत्री भारत सरकार]

मरकर भी महात्माजी अमर है। उनके जीवनकी कठोर साधना और मानवताकी अनवरत सेवाने उन्हें विश्वका सर्वश्रेष्ठ पुरुष बना दिया है। धर्म, सम्प्रदाय और के वर्ण विद्वेषका विनाश करनेमे उन्होने जो अनवरत पर शातिमय सघर्ष किया है उसके कारण भारतके भावी इतिहासकार युगयुग तक उनकी पावन गाथा गाते रहे है। उनके निधनसे भारत ही नहीं समस्त विश्वकी अपूर्णीय क्षति हुई। हमारा कर्त्तव्य है कि अब भी हम उनके उपदेशोंका महत्व समझे और उनपर चलकर भारतमे शान्ति और सद्भावनाकी स्थापना करे।

❀

माननीय एन० गोपालस्वामी ऐय्यगर

[मत्री भारत सरकार]

महात्मा गाधी सर्वदा एकताके सपादनमे निरत रहे। देश-विभाजनकी नीति स्वीकार करनेकी विवशतासे उन्हे जितना दुःख हुआ उतना और किसी कार्यसे नहीं।

देशका विभाजन हो जानेके अनन्तर अपनी सारी शक्ति लगाकर वह सदा इसी प्रयत्नमे लगे रहे कि दोनों संप्रदायोंका पारस्परिक विद्वेप विनष्ट हो जाय और दोनोंमे वन्धुभावकी वृद्धि हो। दोनो राष्ट्रोंके बीच सद्भावनाके वधनको दृढ़ बनानेमे वे निरंतर प्रयत्नशील रहे।

जो शक्तियाँ एकता और सद्भावनाके प्रचार और प्रसारमें वाधक रहीं उन्हें दूर करनेके लिये वे अनवरत संघर्ष करते रहे। जनतामें उस विरोध और प्रतिहिंसाकी भावनाके प्रचारके रहते हुए भी जिसके प्रभावसे भारतीय जनता, सांप्रदायिकताके विषसे ग्रस्त थी—वे सद्भावनाके प्रचारमें सबसे अधिक निरत रहे।

उनका धर्मोपदेश था अपकारका उत्तर उपकारसे देनेका। इसी सिद्धातकी शिक्षा देते हुए महात्माजी अपने उद्देश्यकी साधनामे शहीद हुए। जब उनकी सेवाएँ इतनी आवश्यक थीं, जितनी और कभी नहीं रहीं, दुर्भाग्यके कारण हमने उन्हे खो दिया।

यह कहा जाता है कि महात्माजीके इस भाति मसीहा हो जानेसे कदाचित् उन लक्ष्योंकी सिद्धि हो सकेगी जिनकी वे साधना करते रहे। हम आशा करते हैं कि इसका फल सुसम्पन्न होगा।

आज जिन भारतीयोंके कधेपर उत्तरदायित्वका बोझ है, उन्हें अपने कर्तव्यका विचार करना है और इस बातका सर्वतोभावेन प्रयास करना है कि बापूके निधन हो जानेपर हम उनके आदर्श सिद्धातोंको जीवित रखे तथा अपने आचरण द्वारा उनके सिद्धातोका अनुसरण करते हुए उस एकता और सद्भावनाकी स्थापना करे जिसका वे सदा उपदेश देते रहे।

हमे यह प्रार्थना करनी चाहिए कि उनकी आत्मा सदा हमारे साथ रहे और हमारा पथ-प्रदर्शन करती हुई इस प्राचीन भारतभूमिमे जिसे वे श्रद्धाकी दृष्टिसे देखते थे और जिसके लिये उन्होंने अपनी आहुति दे डाली शाति और सद्भावना स्थापित करनेमे हमे समर्थ बनाये।

❀

माननीय क्षितीशचंद्र नियोगी

[पुनर्वासन मत्री भारत सरकार]

विश्वास नहीं होता कि ऐसी दुर्घटना हुई है। महात्माजी अमर है, और तबतक जीवित रहेंगे जबतक भारत है। उन्होंने भारतको और भारतवासियोका जो प्रदान किया है वह अनुपम और महान है। जीवनके प्रत्येक क्षेत्रमे उन्होने भारतका पथ-प्रदर्शन किया है। ऐसे महापुरुष कभी कभी अवतीर्ण होते है । वे दीनबंधु थे। शरणार्थियोंके संबधमें, दीन-दुखियोके संबधमें उन्होंने जो महत्तम कार्य किये है वे सर्व विदित है। उन्हें खोकर भारतने अपना महान् नेता, दीन दुखियोंने अपना त्राता और संसारने अपना उज्ज्वलतम रत्न खो दिया है।

माननीय जयरामदास दौलतराम

[खाद्य-मत्री भारत सरकार]

महात्माजी विश्वकी विभूति थे। भारतको इस बातका गर्व है कि ऐसे महापुरुषने यहाँ अवतार लिया। आज उन्हें खोकर वसुधा हतप्रभ हो गयी है, उसका दीप्तिमय रत्न खो गया। जो लोग महात्माजीके सम्पर्कमे आये है, वे जानते है कि उनका व्यक्तित्व कितना तेजोमय और प्रभावात्मक था। वे देशके लिए अवलम्ब थे, मुसीबतो और कठिनाइयोके समय तो वह भगवान्के स्वरूप ही लगते थे। भारतको जो स्वतत्रता मिली है, वह उनकी तपस्याके कारण ही मिली है। मै उस महान् अमर आत्माके प्रति श्रद्धा और भक्तिके साथ अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ। वे उस लोकसे भी हमारा पथ-प्रदर्शन करते रहेगे ऐसा हमारा क्या, प्रत्येक भारतीयका विश्वास है।

आचार्य नरेन्द्र देव

[कुलपति काशी विद्यापीठ तथा लखनऊ विश्वविद्यालय]

कल हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाधीने, जो आजके, इस युगके सबसे बड़े महापुरुष थे, अपने जीवनकी अन्तिम लीला समाप्त की। आज दिल्ली शहरमे शामके ४ बजे यमुना नदीके तटपर उनका महाप्रस्थान होनेवाला है। वह हमारे मार्ग-प्रदर्शक थे। उन्होने हमको जीवनके आध्यात्मिक और सामाजिक मूल्योकी शिक्षा दी। भारतवर्षकी प्राचीन सस्कृतिको परिष्कृत कर उसकी पुरानी ज्योति फिरसे जगायी। भारतीय समाजके करोडो निश्चेष्ट और निष्प्राण मानवोके हृदयमे जीवनकी एक नई ज्योति जगायी, जिसने हमको स्वतत्रता प्रदान की। वह मशाल जिसको प्राचीन कालके ऋषियोंने इस पुण्य-भूमिमे प्रज्वलित की थी, जिसे भगवान् बुद्धने फिरसे जगायी, जिसको समय समय पर महापुरुषोंने आकर, जगाकर भारतवर्षकी अखड सम्पत्तिकी रक्षाकी, उसी मशालको फिरसे जलाकर और हमारे जीवनमे एक नई ज्योति, एक नई स्फूर्ति, एक नया चैतन्य प्रदान कर वह मशाल हमारे कमजोर हाथोमे सौपी थी और जब उन्होंने अपने सामने उस मशालको हमारे कमजोर हाथोसे जमीन पर गिरते देखा तब हमारे हाथोको बल देनेके लिए अपना सहारा दिया। वह महापुरुष, हमारे राष्ट्रकी सबसे बड़ी सम्पत्ति, आज उठ गयी, आज हमसे छिन गयी है। हम आज

अपनेको निराश्रय, निरुपाय, और निरावलम्ब पा रहे हैं। वह हमारा दीपक आज बुझ गया। चारों ओर अन्धकार है। सारा भारतीय समाज शोकमें निमग्न है। ऐसे अवसर पर हममें कातरताका आना स्वाभाविक है।

इस रंजकी घड़ीमें मुझे अपने देशके इतिहासका वह अवसर स्मरण हो आता है जब हमारे देशका एक महापुरुष, नहीं-नहीं सारे संसारका महापुरुष, अर्थात् भगवान् बुद्धने जब वह अपना शरीर छोड़ रहे थे भारतीयोंको एक अनुपम शिक्षा दी थी! उस अवसर पर हमारे प्रान्तके कुशीनगरमें जब भगवान् बुद्ध मृत्युशय्या पर पड़े थे तब अपने पास अपने प्रिय शिष्य आनन्दको न देखकर उन्होंने भिक्षुओंसे पूछा कि आनन्द कहाँ है? भिक्षुओंने कहा ."भगवान् आनन्द बाहर खड़ा रो रहा है।" उन्होंने कहा ."उसको बुलाओ"। वह भगवान्के सम्मुख आया। भगवान्ने कहा—"हे आनन्द क्यों रोते हो?" उसने कहा, "संसारका दीपक बुझ रहा है, ससार अन्धकारसे आछन्न होने वाला है। आपकी अनुपस्थितिमें हम निरावलम्ब हो जायगे। हमें उपदेश देनेवाला, हमें आदेश देनेवाला, हमको ससार चक्रसे उबारने वाला कौन होगा?" भगवान्ने कहा... "हे आनन्द तुम, हमारी उस शिक्षाको क्यों भूल गये, क्या हमने तुम्हें बार-बार यह नहीं सिखाया कि जो उत्पन्न होता है उसकी मृत्यु अवश्यम्भावी है। हमने तुम्हें क्या यह नहीं बताया कि तुम अपने पैरों पर खड़े हो। स्वयं अपने दीपक हो, किसी दूसरे दीपका सहारा मत लो। हमारे महानिर्वाणके अनन्तर हमारे निर्वाणकी शिक्षा ही तुम्हारे लिए दीपकका काम करेगी। जाओ, रोओ मत, यह रोनेका समय नहीं है। निर्वाणके लिए सदा प्रयत्नशील होते रहो।" यदि हमारा राष्ट्रपिता, ससारका महापुरुष अपनी मृत्यु शय्या पर पड़ा हुआ कुछ बातकर सकता तो मुझे पूरा विश्वास है कि उसका भी उपदेश इन्हीं सारगर्भित शब्दोंमें होता। यद्यपि उस समय वह हमको कुछ उपदेश अपनी अन्तिम घड़ियोंमें न दे सके किन्तु हम जानते हैं कि अपने जीवनमें उन्होंने बार-बार यही कहा कि तुम हमारा सहारा मत ढूँढो।

इसीलिए सन् ३२, सन् १९३५ में उन्होंने कांग्रेसकी सदस्यताको छोड़ी, इस बातके समझनेके लिए कि बड़ेसे बड़ा महापुरुष क्यों न हो, आखिर उसके जीवनकी अवधि भी निश्चित है। यदि तुम इसी प्रकारसे उसके ऊपर आश्रित होगे तो उसके उठ जानेके अनन्तर तुम अवश्य खिन्न होगे, और अवसादसे भर जाओगे। इसी प्रकार समय समय पर हमको अपने पैरों पर खड़े होनेका उपदेश देकर महात्माजीने हमको बताया कि तुम अपने पैरोंपर खड़ा होना सीखो। भगवान बुद्धके वही शब्द आज हमारे कानोंमें गूँज रहे है। यह दुःखका समय है। ज्यों ज्यों दिन बीतते जायगे हम महात्माजीके अभावको अधिकाधिक अनुभव करते जायंगे। किन्तु यदि हम उनके सच्चे अनुयायी हैं, यदि हम उनके

उपदेशों और आदेशों पर दृढ रहना चाहते है, तो हमारा कर्तव्य है कि वीर पुरुषोकी तरह उनकी शिक्षाको शिरोधार्य करे। हम स्वय अपने पैरों पर खड़े हो। आत्मदीपक बने। भारतवर्षका प्रत्येक व्यक्ति, जो गाधीजीका अनुयायी कहलाता है, उसका आज परमपुनीत कर्तव्य है कि अपने हृदयमे उस ज्योतिको जगाकर दूसरोंका मार्ग प्रदर्शन करे। आज वह हाड-मासकी कैदसे मुक्त होकर और भी विशाल रूपसे, और भी प्रभावशाली प्रकारसे हमारे हृदयों पर राज्य करेगे। उनकी शिक्षाके प्रसारमें कठिनाई होनेके स्थानमें अब सुगमता होगी और आज जब वह राजनीतिके क्षेत्रसे ऊपर उठे तो भारत ही नहीं सारा ससार उनकी शान्ति-प्रेमकी शिक्षाको अपनानेके लिए तैयार होगा। इसके लिए आज मै यही कहना चाहता हूं कि हम भारतीय, जो अभागे है, जिनको इस-आज़ादीके साथ जिन्दगीका पगाम मिलनेकी जगह मौतका पैगाम मिला, यदि हम अब भी संभलना चाहते है तो हमे चाहिए कि वह मशाल जिसे गाधीजीने हमारे हाथों में सौपी, वह पुरानी भारतवर्षकी मशाल, जो पुरानी भी है और आजके लिए नयी भी, उस मशालको अपने मजबूत हाथोसे पकड़ें और इस वातकी चेष्टा करे कि हमारे हाथसे इस मशालको कोई छीन न ले। जबतक हम उस मशालके नम्बरदार है, तबतक भारतवर्षका बाल कोई बांका नहीं कर सकता। जो यह दावा करते हैं कि गाधीजी भारतीय सस्कृति और हिन्दू धर्मके विनाशक है और विरोधी है, उन्होंने भारतीय संस्कृति और धर्मके मर्म और हृदयको नही पहचाना। भारतीय इतिहास पुकार पुकार कर कहता है कि संसारमे एकता होनी चाहिये। सर्वत्र एक ही भाव, एक ही आत्माका सचरण होता है। सारा ससार एक सूत्रमे बधा हुआ है। मानवजातिसे प्रेम करो। अत्याचार, अनाचारसे घृणा करो।

जीवनका मार्ग शान्तिमे है, प्रेममे है, धर्ममे है, जीवनके सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्योंकी रक्षामे है। अत्याचारमे नहीं, अनाचारमे नहीं, घृणामे नहीं, विद्वेषमे नही। मै पूछना चाहता हूं इस पतित भारतको उठाने वाला, उसका उद्धार करनेवाला, हिन्दू संस्कृतिको फिरसे जीवित करनेवाला, सारे समाजमे उसको आदर सम्मान दिलानेवाला, भारतका नाम जो अवतक अपमानित था, तिरस्कृत था, कलकित था, उसको गौरव प्रदान करने वाला, भारतीय जिसका नाम लेकर समस्त संसारमे मस्तक ऊँचा करके भ्रमण कर सकते थे यह काम किसका है? किसने इस भारतीय हिन्दू समाज को, जो पतित हो गया था, जो घोर वर्ण-व्यवस्थासे पिसा जा रहा था, जिसने स्पृश्यता को इतना उत्तेजन देकर अपने सामाजिक बन्धनों को शिथिल कर दिया था, जिसमे सुदृढता नहीं थी उसमे वह सुदृढता लाने वाला, इस भारतीय समाज,हिन्दू समाजके अनाचार अत्याचार को नाश करने वाला, पतितों का उद्धार, स्त्रियों को समाजमे अपना

उचित स्थान दिलाने वाला कौन है ? वह गाधी है । भारत को स्वतंत्र बनाने वाला कौन है ? वह गाधी है । इसलिए जो चाहते हैं कि भारत का भविष्यमे उत्थान हो, जो चाहते है स्वतन्त्रताका उचित उपभोग हो, जो चाहते है कि भारतवर्ष केवल अपनी स्वतंत्रता का भोग न करे किन्तु समस्त एशिया का मार्ग-प्रदर्शक बने, उसका नेतृत्व करे ...नहीं नहीं, सारा संसार, जिसका हृदय आज व्यथित हो रहा है, जो 'वास्तविकता'के भूतसे पिसा जा रहा है, जो जीवनके मूल्योंको भूल रहा है, जिसके सामने सामाजिक नीतिका कोई मूल्य नहीं है, जिसके सामने सत्यका कोई मूल्य नहीं, उस समाजको यदि कोई शान्ति दिला सकता है, उस व्यथित हृदयको शान्त कर सकता है, संसारमे फिरसे शान्ति, सुख और वैभवकी स्थापना कर सकता है तो वह भारतवर्ष ही कर सकता है । किन्तु तभी कर सकता है जब वह महात्मा गाधीके मार्गके पर चले । हममें वह शक्ति हो कि हम उनके पद-चिन्होंका अनुसरण करे । आज हमें महात्माजीके लिए प्रार्थना नहीं करनी है । वह हुतात्मा जीवनभर सारे समाजकी सेवा करते रहे, मरकर भी उन्होने अपने समाजका उद्धार किया । हमको आज प्रार्थना करनी है कि 'भगवान्, हमको सद्‌बुद्धि दो, भगवन् हममे सात्विक बुद्धि हो, भगवन् हम जिस मार्गपर चले वह जीवन प्रदान करने वाला मार्ग हो, उत्तिष्ठ मार्ग हो । वह हमको पतित बनाने वाला न हो, हमको मृत्युकी घाटीमें उतारने वाला मार्ग न हो । और यदि इस सन्देश को किसीने अपनाया है तो महात्मा गान्धीने । महात्मा गाधी सदा जीवित रहेंगे और वह तभी जीवित रह सकते है जब भारतीयोंमे थोड़ेसे भी लोग ऐसे हों जो उनके पद-चिन्होंका अनुसरण करे । गुरु गोविन्दसिंहने जब अपने शिष्योंकी परीक्षा की तब उनको पाँच ही शिष्य पूरे मिले, सच्चे मिले, जिनकी उनमे निष्ठा थी, जो उनका पूरी तरहसे अनुसरण करनेको तय्यार थे । यही गुरुके पंज प्यारे, इन्हींको सबसे पहले उन्होंने अमृत चखाया । अगर मुष्टिमेय लोग भारतवर्षमे पैदा हों और जीवित हों, जो उनमे आस्था रखते हो, जो उनमें श्रद्धा रखते हों, जो उनके बताए हुए मार्ग पर चले तो मै यह कहना चाहता हू कि इस देशका कोई बाल वाँका नहीं कर सकता । इस देशका भविष्य गौरवमय है और उसके लिए हमें उचित गर्व होगा ।

मुझे इस अवसर पर कुछ और कहना नहीं है । मेरा गला दुःखसे भरा हुआ रुँधा जाता है । यह बहुतसे शब्दोंका अवसर नहीं । यह काम करने का अवसर है । जो भारतवर्षके भविष्यके लिए सचेष्ट हैं, जो चाहते है कि उसकी उन्नत अवस्था हो, जो उसको आज पतनकी अवस्थासे बचाना चाहते हैं, उनका यह कर्त्तव्य है कि वे संघबद्ध होकर, इस राजनीतिके पचड़े को छोडना हो तो उसको भी छोड़कर, इस देशमें एक ऐसे जीते जागते सास्कृतिक आन्दोलनका प्रचार करें, जिस आन्दोलनके बल पर उनकी शिक्षा इस देशमे टिक सके ! प्रार्थी हू कि

भारतवर्षमें, ऐसे विशाल देशमें जहाँ अनगिनत लोग वसते हों, यहाँकी नर, नारियोमे थोड़ेसे लोग अवश्य होगे जो आजकी परिस्थितियोसे उठकर साम्प्रदायिक शान्तिके लिए चेष्टा करेगे। और यदि ऐसा हुआ तो हमारा भविष्य उज्ज्वल है, इस देशका कल्याण होने वाला है। [रेडियो भाषण : ३० जनवरी १९४८

० ० ०

संसारके सर्वश्रेष्ठ मानव तथा भारतके राष्ट्रपिता महात्मा गान्धीके प्रति उनके निधन पर अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करनेका अवसर इस व्यवस्थापिका सभाको आजही प्राप्त हुआ है। अपने देशकी प्रथाके अनुसार तथा लोकाचारके अनुसार हमने १३ दिन तक शोक मनाया। यह शोक महात्मा जीके लिए नहीं था, क्योंकि जो सव-भूतहितमे रत है और जो मानव जातिकी एकता का अनुभव अपने जीवनमे करता रहा हो उसको शोक कहाँ, मोह कहाँ? यदि हम रोते है, विलखते है तो अपने स्वार्थके लिए विलखते है, क्योकि आज हम इस वातका अनुभव कर रहे है कि हमने अपनी अक्षय निधि खो दी है, अपनी चल सम्पत्ति को गवा दिया है।

महात्माजी इस देशके सर्वश्रेष्ठ मानव थे इसीलिए हम उनको राष्ट्रपिता कहते है। हमारे देशमे समय समय पर महापुरुषोने जन्म लिया है और इस जाति को पुनरुज्जीवित करनेके लिए नूतन सदेशका संचार किया है। इसमे तनिक भी सन्देह नहीं है कि अन्य देशोमे महापुरुष उत्पन्न हुए है, लेकिन मेरी अल्प वुद्धिमे महात्मा गाधी ऐसा अद्वितीय वेजोड़ महापुरुष केवल भारतवर्षमे ही जन्म ले सकता था और वह भी वीसवीं शताब्दीमे, अन्यत्र कहीं नही। क्योंकि महात्मा गांधीने भारतवर्षकी प्राचीन संस्कृतिको, उसकी पुरातन शिक्षाको परिष्कृत कर युगधर्मके अनुरूप उसको नवीन रूप प्रदान कर, उसमे वर्तमान युगके नवीन सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्यका पुट देकर एक अद्भुत एव अनन्यतम सामञ्जस्य स्थापित किया। उन्होंने इस नवयुग की जो अभिलाषाए है, जो आकाक्षाएँ है, जो उसके महान उद्देश्य है उनका सच्चा प्रतिनिधित्व किया है। इसीलिए वे भारतवर्षके ही महापुरुष नहीं थे अपितु समस्त ससारके महापुरुष थे। यदि कोई यह कहे कि उनकी राष्ट्रीयता सकुचित थी, तो वह गलत कहेगा। यद्यपि महात्मा गाधी स्वदेशीके व्रती थे, भारतीय सस्कृतिके पुजारी थे तथा भारतीय राष्ट्रीयताके प्रवल समर्थक थे, किन्तु उनकी राष्ट्रीयता उदारतासे पूर्ण थी, ओतप्रोत थी। वह सकुचित नहीं थी। सकुचित राष्ट्रीयता वर्तमान समाज का एक वड़ा अभिशाप है किन्तु महात्माजीका हृदय विशाल था। जिस प्रकार भूकम्प-मापक यत्र पृथ्वीके मृदुसे मृदु कंपको भी अपनेमे अंकित कर लेता है उसी प्रकार मानव जातिकी क्षीणसे क्षीण रेखा भी उनके हृदय-पटल पर अंकित हो जाती थी। हमारा देश समय समय पर महापुरुषोंको जन्म देता रहा है और मै समझता हूँ कि

इस व्यवसायमें भारत सदासे कुशल रहा है, अग्रणी रहा है। पतित अवस्थामें भी, गुलामी की हालतमें भी भारतवर्ष ही अकेला ऐसा देश रहा है, जो जगद्वन्द्य महापुरुषोंको जन्म दे सका है। मैं समझता हू कि इस व्यवसायमे भारत सदासे कुशल रहा है। हमारे देशमे भगवान बुद्ध हुए तथा अन्य धर्मोके प्रवर्तक हुए, किन्तु सामान्य जनताके जीवनके स्तरको ऊचा करनेमें कोई भी समर्थ नहीं हो सका। यह यथार्थ है कि पीडित मानवताके उद्धारके लिए नूतन धार्मिक सदेश उन्होंने दिये थे, समाजके कठोर भार को वहन करनेकी समर्थता प्रदान करनेके लिए उन्होंने नए नए आश्वासन दिये थे, उनके विक्षुब्ध हृदयोको शान्त करनेके लिए पारलौकिक सुखोंकी आशाएँ दिलायी थीं, लेकिन सामान्य जीवनके जो कठोर सामाजिक बधन है, जो जनताके ऊपर कठोर शासन चल रहा है, जो सामाजिक और आर्थिक विषमताएँ हैं, जो दीनों और अकिंचन जनो को भांति-भांतिके तिरस्कार और अवहेलनाएँ सहनी पड़ती है, इन सब समस्याओंको हल करनेवाला यदि कोई व्यक्ति हुआ तो वह महात्मा गाधी हैं। उन्होंने ही सामान्य जीवनमें जनोंके जीवनके स्तर को ऊंचा किया। उन्होंने जनतामे मानवोचित स्वाभिमान उत्पन्न किया। उन्होंने ही भारतीय जनताको इस बातके लिए सन्मति प्रदान की कि वह साम्राज्यशाहीके भी विरुद्ध विद्रोह करे और यह भी पाशविक शक्तियोंका प्रयोग करके नहीं, किन्तु आध्यात्मिक बलका प्रयोग करके हुआ। उनकी अहिंसा बेजोड़ थी। भगवान् बुद्धने कहा था 'अक्रोधेन जयेत् क्रोधम्' अर्थात् अक्रोधसे क्रोध को जीतना चाहिए। उनकी अहिंसाका सिद्धान्त भी केवल व्यक्तिगत आचरणका उपदेश मात्र न था, किन्तु सामाजिक समस्याओंको हल करनेके लिए अहिंसाको एक उपकरण बनाया और राजनीतिक क्षेत्रमे अपने महान ध्येयकी प्राप्तिके लिए उसका सफल प्रयोग करना महात्मा गाधीका ही काम था और चूँकि वह ससारमे अहिंसाको प्रतिष्ठित करना चाहते थे, इसलिए उनकी अहिंसाकी व्याख्या भी अद्भुत, बेजोड़ और निराली थी। उनकी अहिसाकी शिक्षा केवल व्यक्तिगत आचरणकी शिक्षा नहीं है। उनकी अहिसाकी व्याख्या वह महान अस्त्र है जो समाजकी आजकी विषमताओका, जो वैमनस्य और विद्वेषके कारण है उन्मूलन करना चाहती है। अहिंसाके ऐसे व्यापक प्रयोगसे ही अहिंसा प्रतिष्ठित हो सकती है।

सामाजिक और आर्थिक विषमताको दूर कर, मनुष्यको मानवतासे विभूषित कर, आत्मोन्नतिके लिए सबको ऊँचा उठाकर जाति-पांति और सम्प्रदायो को तोडकर ही हम अहिंसाकी सच्चे अर्थोंमे प्रतीष्ठा कर सकते है। यदि किसी ने यह शिक्षा दी तो गाधीजीने शिक्षा दी। इसलिए यदि हम उनके सच्चे अनुयायी होना चाहते है तो समाजसे इस विषमताको, इस ऊँच-नीचके भेदभावको, इस अस्पृश्यताको, समाजके नीचे से नीचे स्तरके लोगों की दरिद्रता को और आर्थिक

विषमताको समाजसे सदाके लिए उन्मूलित करके ही हम सच्चे अहिंसक कहला सकते है। यह महात्मा गांधीजीकी विशेषता ही थी।

हमारे देशकी यह प्रथा रही है कि महापुरुषके जन्म, निधनके बाद हमने उसको देवता की पदवीसे विभूषित किया। समाधि और मन्दिर बनाए। उसकी मूर्तिको मन्दिरोंमे प्रतिष्ठित किया या मजार बनाकर उनकी समाधि या मजार पर प्रेम और श्रद्धाके फूल चढाकर हम सन्तुष्ट हो गए। इसी प्रकारसे भारतवासियोंने अनेक महापुरुषोकी केवल उपासना और आराधना करके उनके मूल उपदेशोको भुला दिया। मै चाहता हूँ कि हम आज महात्मा गांधीको देवत्व की उपाधि न दे, क्योकि देवत्वसे भी ऊँचा स्थान मानवताका है। मानवकी आराधना और उपासना समाधि-गृह और मजार बनाकर, उनपर फूल चढाकर नहीं होता। दीपक, नैवेद्यसे उसकी पूजा नहीं होती, अनेको मानवकी आराधना और उपासना का प्रकार भिन्न है, अपने हृदयोंको निर्मल और उनके बताए हुए मार्ग पर चलकर ही उसकी सच्ची उपासना होती है। यदि हम चाहते है कि हम महात्मा गांधीके अनुयायी कहलाये तो हमारा यह पुनीत कर्तव्य है कि जनतामे अपने प्रेम और श्रद्धाके भावों का प्रदर्शन करनेके साथ साथ हम उनका जो अमर सन्देश है, उस पर अमल करे। उनका सन्देश केवल भारतवर्षके लिए ही नहीं वरन्, वर्तमान ससारके लिए है, क्योंकि आज संसारका हृदय व्यथित है, दुखी है। एक नये महायुद्धकी रचना होने जा रही है। उसकी पूर्व सूचनाएँ मिल चुकी है। ऐसे अवसर पर संसारको एक नूतन आदेश और उपदेशकी आवश्यकता है। महात्माजीका बताया हुआ उपदेश जीवनका उपदेश है, मृत्युका सन्देश नहीं है। और जो पश्चिमके राष्ट्र आज संकुचितताके नाम पर मानव जातिका बलिदान करना चाहते हैं, जो सभ्यता और स्वाधीनताका विनाश करना चाहते हैं, वे मृत्युके पथ पर अग्रसर हो रहे है, वे मृत्युके अग्रदूत हैं। यदि वास्तवमे हम समझते है कि हम महात्माजीके अनुयायी हैं तो हमारी सबकी सच्ची श्रद्धाञ्जलि यही हो सकती है कि हम इस अवसर पर शपथ ले, प्रतिज्ञा करे कि हम आजीवन उनके बताये हुए मार्ग पर चलेंगे, जो जनतन्त्रका मार्ग, समाजमे समता लानेका मार्ग, विविध धर्मों और सम्प्रदायोंमे सामञ्जस्य स्थापित करनेका मार्ग है, जो छोटेसे छोटे मानवको भी समान अधिकार देता है, जो किसी मानवका पक्ष नहीं करता, जो सबको समान रूपसे उठाना चाहता है। यदि महात्माजीके बताये हुए मार्गका हम अनुसरण करते तो एशियाका नेतृत्व हमारे हाथोंमे होता और हमारा देश भी दो भूखंडोंमें विभाजित नहीं हुआ होता। हम एशियाका नेतृत्व करेंगे, किन्तु इस गृह-कलहके कारण हमारा आदर विदेशोंमे बहुत घट गया है। इसलिए यदि हम उस नेतृत्वको ग्रहण करना चाहते है तो हमको अपने देशमे उस सन्देशको कार्यान्वित करना होगा। भारतवर्षमे बसनेवाली विविध

जातियोंमे एकताकी स्थापना करके हमको ससारको दिखा देना चाहिए कि हम सच्चे मार्ग पर चल रहे हैं। तभी सारा संसार हमारा अनुसरण करेगा।

महात्माजीके लिए जो सोचते हैं कि वह अन्ताराष्ट्रीय व्यक्ति नहीं थे, उनका काम भारतवर्ष तक ही सीमित था, यह उनकी भूल है। भारतवर्ष तो उनकी प्रयोगशाला मात्र थी। वह समझते थे कि यदि सत्य, अहिंसासे मै देशमें सफलता प्राप्त कर सकूँगा, तो मेरा संदेश सारे संसारमे फैलेगा।

मै अपनी श्रद्धाजलि महात्माजीको अर्पित करता हू और प्रार्थना करता हूं कि मुझमे शक्ति पैदा हो कि मैं उनके वताये हुए मार्गका अनुसरण किसी न किसी अशमे कर सकूं।

० ० ०

इस भीषण समाचारको पाकर मै स्तब्ध रह गया। केवल हमारे ही ऊपर नहीं वरन समस्त विश्वके ऊपर विपत्तिका पहाड टूटा है। महात्माजीकी महायात्रासे पीड़ित मानवता, विश्वशान्ति, और सामाजिक नैतिकताको वड़ी गहरी चोट पहुची है। साम्प्रदायिक एकता तथा जनताके अधिकार-रक्षणके लिये वे आजीवन यत्नशील रहे और उसीके लिये उन्होंने आत्म-वलिदान किया।

आकाशसे वज्रपात हुआ। विश्वका सर्वश्रेष्ठ पुरुष चल वसा। उनका शरीर भस्मसात् हो गया, पर उनका संदेश अमर रहेगा। शरीर-वन्धनसे मुक्त आत्मा विश्वमे व्याप्त हो जाती है। उनके सिद्धान्त प्रकाशका काम देंगे और हमे अन्धकारमे पथ-प्रदर्शन करेगे। मृत्युके समय उन्होंने अपने शिष्योंसे कहा स्वयं पथ-प्रदर्शक वनो, हमको उसीके अनुसार चलना है।

विपत्तियोंसे घिरे होने पर रोना कायरता है। उन्हें वीर-गति मिली। यदि उपवाससे वे मरे होते तो हमे देशमे व्याप्त साम्प्रदायिक विप एव परिस्थिति की गंभीरताका अनुमान न होता। इस पापके प्रक्षालनके लिये उनके निर्दिष्ट पथ-पर चलना होगा।

० ० ०

जिस समय हमारे चारों ओर गहन अधकार छाया हुआ था गाधीजीने हमे अमर प्रकाश प्रदान किया। जव हम अपनी परम्परासे गिरकर अधोगतिको प्राप्त हो चुके थे तव उन्होंने हमे अपनी नवीन आध्यात्मिक और सामाजिक मान्यताओं और आदर्शोंसे आलोकित किया। गाधीजी आज हमारे वीच नहीं हैं, हमारा राष्ट्रीय प्रकाशस्तम्भ वुझ गया है किन्तु यह समय रोनेका नहीं है। उनके आदर्श सदैव हमारा मार्ग प्रदर्शित करते रहेंगे। जिनके हृदयमें उनके लिये श्रद्धा है उनके लिये आज भी वे जीवित है।

हमारे सामने आज दो रास्ते खुले है, एक विनाशका तथा दूसरा गाधीजी द्वारा दिखलाया गया कल्याणका प्रशस्त पथ, यदि हम गांधीजीकी हत्याका कलंक धोना चाहते है और संसारमें शानके साथ अपना अस्तित्व कायम रखना चाहते है तो हमे उन्हींके आदर्शोपर चलना होगा। आज भले ही क्षणिक शोक हम उनकी मृत्युपर मना ले किन्तु आगे गांधीजीकी मरणतिथि प्रेरणा प्रदान करने वाला पुनीत पर्व होगा।

❀

श्री जयप्रकाश नारायण

[प्रधान मन्त्री : समाजवादी दल]

जब बापू दिल्लीमे अनशन कर रहे थे, मैने आपसे उनके प्राणोंकी रक्षाके लिए अपीलकी थी। जब कुछ ही दिनो बाद उन्होंने अपना अनशन-भङ्ग कर दिया तब मैने गाधीजीकी उन शर्तोको मान लेनेका दृढ निश्चय करनेके लिये आप लोगोंको बधाई दी थी जिन शर्तोको मान लेनेसे साम्प्रदायिक सद्भावनाकी वृद्धि होती है। परन्तु वापूको हत्यारेके हाथोका लक्ष्य बननेसे हम वचा न सके।

हमने स्वप्नमें भी कल्पना नहीं की थी कि कोई ऐसा व्यक्ति हो सकता है जो विश्वके सर्वश्रेष्ठ पुरुषकी जघन्य और कायरतापूर्ण हत्याका इस भांति अपराध करेगा। ब्रिटिश सरकार भी उस गाधीके प्रति, जो आजीवन अहिंसात्मक युद्धके द्वारा भारतमे अंग्रेजोके शासनका विरोध करता रहा, ऐसी हिंसात्मक नीति काममे लानेका साहस न कर सकी।

यह व्याख्यान देनेका अवसर नहीं है। आज हमारे देशवासियोको रोनेकी, इस प्रकार रोनेकी आवश्यकता है जिससे भारतके इतिहासमे महात्माजी की मृत्युसे जो कलङ्कका धव्वा लग गया है वह ऑसुओंके प्रवाहसे धुल जाय। गाधीजीने हमे जो मार्ग दिखाया है उसका हमे अनुसरण करना चाहिए। उन्होंने भारतकी स्वतन्त्रता प्राप्त करनेके लिये अद्भुत वलिदान और त्याग किये तथा मरनेके पहले उनकी आकाङ्क्षा थी कि देशकी सेवाके लिये १२५ वर्षोतक जीवित रहूँ। उनकी कामना थी कि भारतका निर्माण मेरे उन आदर्शोंके अनुकूल हो, जहाँ विचार और कार्यकी पवित्रता, सत्यता, शान्ति और मानवीय करुणभावनाका साम्राज्य रहे। गाधीजीके नेतृत्वमे हमे स्वतत्रता मिली है और हमारा कर्त्तव्य है कि हम उसे खोने न दे।

कोई अकेला व्यक्ति ऐसी घृणित हत्याका अपराध तवतक नहीं कर सकता जवतक उसके पीछे संगठित समूहका हाथ और उन लोगों द्वारा

बनायी योजना न हो। अपनी योजनाको कार्यान्वित करनेमें वे अशतः सफल भी हुए और यह भी कहा जाता है कि ऐसी ही नीच योजनाएँ अन्य नेताओंके लिये भी बनायी गयी हैं।

हमारे नेता स्वतन्त्रता-पूर्वक रक्षाकी किसी व्यवस्थाके बिना विचरण करते हैं। गाधीजीके हत्यारेने कोई वीरता नहीं दिखायी। ऐसे साम्प्रदायिक विचारवाले बहादुर उस समय न जाने कहा लुप्त थे जिस समय सरदार भगत सिंह फाँसीके फदेमे झुलाये गये थे, जिस समय महाशक्तिशाली अंग्रेजी सत्ताके विरुद्ध अहिंसात्मक शस्त्रोंकी सहायतासे स्वतत्रताका युद्ध लडा जा रहा था। ऐसे अमानुषिक पाशव अपराधोंका निवारण केवल सेना और पुलिसकी सतर्कतासे ही नहीं हो सकता। इन्हें तभी रोका जा सकता है जब जनता भी स्वयं सचेष्ट रहे तथा लोकमत इनके विरुद्ध हो।

गाधीजी देशके बँटवारेके विरुद्ध थे, किन्तु पाकिस्तानका जन्म हमारी भीतरी दुर्बलताओं तथा मतभेदोंका परिणाम है। देशकी उन्नतिका सबसे बड़ा शत्रु साम्प्रदायिकता है। हमारे देशकी भाषा, धर्म-भावना, रीति और रिवाजोंमे अनेक भेद हैं। यदि ऐसी परिस्थितिमे भी लोग अपनी अनुदार संकुचित मनोवृत्तियोंको अपनाये रखेगे तो भारतीय राष्ट्रीय काग्रेसके नेतृत्वमे हमने जो स्वतत्रता प्राप्त की है वह नष्ट हो जायगी।

यदि जनता चाहती है कि हम राष्ट्रीय संकटसे अपनी रक्षा कर सके तो सबसे पहले साम्प्रदायिकताको पूर्णतः भस्म कर डालना अत्यावश्यक है। यदि शासनके सचालकोंमे कहीं साम्प्रदायिकताकी गन्ध हो तो उसका कठोरताके साथ दमन करना चाहिये, क्योंकि सरकारका संचालन सुरक्षाके साथ उस अवस्थामे हो ही नहीं सकता जब उसका प्रबन्ध देशद्रोहियोंके हाथोंमे हो। देशकी सभी साम्प्रदायिक और प्रतिगामिनी सस्थाओंको जड़से उखाड फेकनेके लिए हमे एक सुनिश्चित कार्यक्रम बना कर उसके अनुसार चलना चाहिये।

❀

आचार्य जीवतराम भगवानदास कृपालानी

[भूतपूर्व राष्ट्रपति भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस]

जो लोग हिन्दुत्वकी रक्षा करना चाहते है वे पहले यह समझे कि हिन्दू-धर्म वास्तवमें क्या चाहता है। सच्चा हिन्दुत्व तो वही है जिसकी शिक्षा महात्मा गांधीने दी है। हिन्दू-धर्मके तथाकथित समर्थक हिन्दू-धर्मके शरीरकी रक्षा तो करते है पर उसकी आत्माकी हत्या कर डालते है। प्रतिशोधकी सभी बातें बंद कर देनी चाहिये। इससे गाधीजीकी आत्माको चोट पहुँचेगी और भारतके लोग आपसमें ही लड़कर नष्ट हो जायेगे।

गांधीजीका शरीर हमारे बीच अब नहीं रह गया। किन्तु यदि हम उनका अनुसरण करे और उनके उपदेशोंसे आलोकित मार्गपर अग्रसर हो तो उनकी आत्मा सदा हमारे साथ रहेगी। उनकी मृत्यु यह सिद्ध करती है कि अब भी विश्व सत्य और अहिंसाके सिद्धान्तको सामूहिक या व्यक्तिगत जीवनमें उस भाँति स्वीकार नही करना चाहता जिस रूपमे गाधीजी उसका प्रयोग करते थे। सत्य और अहिसाका पथ आज भी वैसे ही मसीहोंका पथ है जैसे सदा इतिहासमे रहा है। आधुनिक घटनाओं द्वारा नैतिकतामे उनके विश्वासकी कठोर परीक्षा हुई और गांधीजी उस कसौटीपर खरे उतरे। जीवनकी बड़ीसे बड़ी कठिनाईके क्षणोंमे भी उनका विश्वास अडिग रहा।

'जो लोग अपने माने जाते है उनपर चाहे कुछ भी आ पडे हमें बदला न लेना चाहिये, प्रतिहिंसासे प्रेरित न होना चाहिये। मनमे भी हिंस्र भावोका उदय न होने देना चाहिये। हिन्दूके घरोंपर चाहे कुछ भी क्यों न आ पडे, पर भय और शक्ति-प्रयोगसे खाली कराये गये मुसलमानोके घरोंको (हिन्दुओं और सिखोंके लिए) उपयोगमें न लाना चाहिये। मुसलमानोंके जो गाँव खाली हो गये हैं उन्हे खाली ही पड़े रहने देना चाहिये। यदि पाकिस्तानकी मुस्लिम महिलाएँ अपहृत कर ली गयी हैं तो सुरक्षा और सम्मानके साथ उन्हे वापस कर देना चाहिये, चाहे हिन्दू और सिख महिलाओंके प्रति उनका उलटा व्यवहार ही क्यों न हो' यह थी उनकी नीति।

महात्माजीके अनुसार नैतिकताकी दृढ़ता तभी स्वीकार की जा सकती है जब उसका अनुसरण करनेवाला अपनी और अपने समाजकी तिल जैसी त्रुटिको ताड-सा समझे और दूसरोंकी तथा उनके समाजकी ताड़सी त्रुटियाँ भी तिलके समान देखे। इसी प्रकार नैतिक नियमोंके उद्देश्य पूर्ण हो सकते है। और इस भाँति जब हम उनका पालन करेंगे तब उनसे कल्याण ही होगा। जो

मनुष्य और राष्ट्र नैतिक पथका अनुसरण करते है उनकी दुर्गति कभी नहीं होती। जहाँ धर्म है, अन्तमे वहाँ विजय भी अवश्यभावी है।

गाधीजीने विश्वको यह दिखा दिया कि अपनेको चाहनेका अर्थ मानवतासे द्वेष करना नहीं होता, दोनोंका प्रेम परस्पर विरोधी नहीं है। उन्होंने हिन्दुओं, मुसलमानों, सिखों या किसी अन्य सम्प्रदायवालोको न कभी भेदभावसे देखा और न कभी भारतीयोंमे ही कोई भेद स्वीकार किया। उनकी दृष्टिमे मानव-समाज एक है, उसमे कोई अन्तर नही है, उसका एक धर्म है और नैतिकताके बन्धनसे समस्त विश्व बँधा और गुँथा हुआ है।

हमारा परम सौभाग्य था कि इतने महान और साधु पुरुषका जन्म हमारे बीच हुआ और उस समय हुआ जब हम परतत्र थे और हमारा नैतिक पतन हो रहा था।

आज हमारा मस्तक लज्जासे धरतीमे गडा जा रहा है। जिसे विदेशी विरुद्ध मतवालोने (क्योंकि गाधीजी अजातशत्रु थे) भी जीवित रखा, उस महामानवकी हत्या आज उसी समाजके एक व्यक्तिके हाथोंसे हुई जिस समाजकी उन्होने इतनी बुद्धिमत्ताके साथ सेवा की थी।

महात्मा गांधीके नीतियुक्त और बुद्धिसगत उपदेशोंकी जिस समय देशको सबसे अधिक आवश्यकता थी उस समय उनके महाप्रयाणसे देश अनाथ हो गया। केवल वही एक ऐसे पुरुष थे जिन्होंने हमे पराधीनावस्थामे भी आदरास्पद बनाया। उन्होंने हमारे आन्तरिक भेदोपभेदोंको दूर किया। हम अपनी व्यक्तिगत और सार्वजनिक कठिनाइयोंके समय उनका सहारा ढूँढने उनके पास जाते थे। उनके लिए जीवन और मृत्यु दोनोंका समान महत्त्व था। वे सदा कहा करते थे कि मेरा जीवन भगवानके हाथमे है। उनकी दृष्टिमे 'शरीर' का कोई मूल्य न था, 'आत्मा' ही सब कुछ थी। और शरीरकी कारासे मुक्त उनकी आत्मा आज सर्वत्र व्याप्त है।

हम उन्हे अपना 'आचार्य' कहते थे और उनकी छायामे रहकर हमने थोड़ी-बहुत योग्यता प्राप्त की है। इसलिये हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने वर्गभेद मिटाकर एक हो जायँ, उस स्वराज्यकी स्थापना करनेके लिए एक हो जायँ जिसका बापू स्वप्न देखा करते थे और जिसकी अभी वे केवल नींव ही डाल सके थे। उनका आशीर्वाद हमारे साथ रहे, यही हमारी कामना है। ईश्वरसे प्रार्थना है कि वह हमे शक्ति और उद्देश्यकी सत्यताका बल दे ताकि हम बापूके उस महान लक्ष्यको प्रचारित और कार्यान्वित कर सके जिस लक्ष्यने सम्प्रदायगत, जातिगत अथवा देशगत भेददृष्टिको अपनेसे सदा दूर ही रखा और उदारताके साथ जिसने समस्त मानवताको अपनाया।

हत्यारेने महात्मा गांधीकी दुर्बल कायाको नष्ट कर दिया किंतु हिंसा और प्रतिशोधात्मक कार्रवाइयों द्वारा हम उस दिवंगत आत्मापर ही प्रहार कर रहे हैं। उनकी पूजा करते हुए भी हम वह उपदेश भुला दे रहे हैं जिनके लिए उन्होंने प्राणोत्सर्ग किया। अगर हत्यारेने गांधीजीको कुछ भी समय दिया होता तो वे अपने अन्तिम क्षणमें उस अज्ञानीके लिए ईश्वरसे अवश्य क्षमा-याचना करते। ईसाकी भाँति उनका भी विश्वास था कि मनुष्यके सम्बन्धमें केवल ईश्वर ही न्याय कर सकता है। यदि हम वर्तमान साम्प्रदायिक स्थितिमें सतर्कतासे काम नहीं लेगे तो देशमें अव्यवस्था फैल जायगी। यद्यपि इस राजनीतिक और नैतिक संकट कालमे हम लोगोको महात्मा गाधीका पथ-प्रदर्शन प्राप्त नही है तथापि गांधीजीके आदर्शों और विचारोंका अनुसरण करनेपर हमारा राष्ट्र उनकी आहुतिसे और अधिक शक्तिशाली होगा।

महात्मा गांधीपर यह पहली बार ही आक्रमण नहीं हुआ है। बहुत दिन पहले दक्षिण आफ्रिकामे उनके एक पठान अनुयायीने भी यह समझकर कि गाधीजीने भारतीयोके साथ विश्वासघात किया है, उन-पर घातक आक्रमण किया था। गाधीजीने उसके विरुद्ध गवाही देना भी अस्वीकार कर दिया। कुछ दिन पूर्व जव उनकी प्रार्थना-सभामे बम फेंका गया था, तव उन्होंने खुले आम अपराधीको क्षमा कर देनेके लिए अनुरोध किया था। वापू प्रतिशोधमें विश्वास नहीं करते थे। उनका विश्वास था कि घृणापर प्रेमसे अधिकार किया जा सकता है। घृणा,हिंसा और युद्धसे पार पाना कठिन है। ब्रिटिश साम्राज्यवादके विरुद्ध युद्धमे उन्होने हमेशा व्यक्ति और व्यवस्थाका भेद सामने रखा। सावरमतीके मुकदमेमें उन्होंने जजसे कहा था कि अगर आप वर्त-मान शासन-व्यवस्थाको दोषपूर्ण नहीं मानते है, तो मुझे वड़ीसे वड़ी सजा दे सकते है। ६ वर्षकी सजा मिलनेपर उन्होने जजको धन्यवाद दिया था।

महात्मा गाधीका कोई शत्रु नही था। विरोधियोंको उन्होने हमेशा अपना भक्त वनाया। उन्होंने वारम्वार राष्ट्रको भय और क्रोधसे वचनेकी चेतावनी दी। एक बार हिंसात्मक प्रदर्शनोंके कारण उन्होंने सत्याग्रह-आन्दोलन तक स्थगित कर दिया।

वापूकी हत्यापर जनताका उत्तेजित हो जाना स्वाभाविक है। किंतु गाधीजी इसीको संयममे रखनेका हमेशा उपदेश देते रहे हैं। वे तो किसी भी जीवकी हिंसा न करनेके लिए शिक्षा देते थे। फिर क्या उस शान्तिदूतके नामपर हम वदला या प्रतिशोध लेंगे जिसने साम्प्रदायिक प्रतिशोधके विरुद्ध अपने प्राणोंकी वाजी लगा दी।

हालमें एक वार गांधीजीने अपने भाषणमें कहा था कि हमारी मृत्युके वाद हमारे देशवासी यदुवंशियोंकी भाँति आपसमे लड़कर नष्ट हो जायँगे। क्या

हम उस कथाकी पुनरावृत्ति करेंगे। राजनीतिक दृष्टिसे भी हमे अपनी हिंसात्मक वृत्तियोंको सयममे रखना चाहिये। हमारे सार्वजनिक जीवनमे अधिकार-प्राप्तिके लिए भीषण संघर्ष छिड़ा है। कुछ लोग वर्तमान स्थितिसे अनुचित लाभ उठाना चाहते है। उनका नारा है--'हम गांधीजीका वदला लेगे।' जनताको ऐसे लोगोंसे सावधान रहना चाहिये। वे लोग साधु-महात्मामे विश्वास नहीं रखते। राजनीतिक अधिकार हस्तगत करनेके लिए वे वदलेकी वात करते है। इनके लिए साधनका महत्व नहीं। किंतु वापूके लिये साधन और साध्य दोनों समान थे।

इसका यह अर्थ नहीं कि इस जघन्य कार्यके लिये जिम्मेदार व्यक्तियोंको, जिन्होंने विश्वके समक्ष राष्ट्रका अपमान किया है, दण्ड नहीं मिलना चाहिये। सरकारपर असावधानीका आरोप लगाया जा रहा है। कहा जाता है कि उसने साम्प्रदायिक पत्रोंका विष-वमन नहीं रोका और 'अपने ही कर्मचारियोंको ऐसे कामोमें भाग लेने दिया। अगर यह वात सच है तो सरकारको कड़ाईसे काम लेना चाहिये। प्रत्येक कांग्रेसजन तथा उन लोगोंका, जो वापूपर श्रद्धा रखते है, कर्त्तव्य है कि इस कांग्रेसको सुदृढ वनानेमे सरकारकी सहायता करे।

[भूतपूर्व सभापति : देशी-राज्य प्रजा परिषद]

मनुष्य मरनेके लिए ही पैदा होता है और शेष सृष्टिकी भाँति महापुरुप भी अपने समय पर मरते है, किन्तु वास्तविकता यह है कि महापुरुप अपने जीवनमे जो कार्य कर जाते हैं, मृत्युके पश्चात् भी वे उसके द्वारा सदैव जीवित रहते है। उनका यह कार्य समयकी गतिके साथ अधिकाधिक शक्ति एव व्यापकत्व संग्रह करते हुए चिरकालतक अक्षुण्ण रहता है। इस कार्यके आधारभूत सूक्ष्म सिद्धात चिर-स्थायी होते और परिवर्तनशील अवस्थामे स्वय परिवर्तित होते रहते हैं, इस प्रकार परिवर्तित होकर वे वदले हुए वातावरणके ही अनुरूप वन जाते है। यदि आज नहीं तो आगे कभी, गाधीजी इस ससारकी पचीस शताब्दियों-के महापुरुपोंमे सर्वश्रेष्ठ माने जा सकेंगे। इसका कारण यह है कि जीवनकी कार्यवाहियों एव पक्षोंको विभिन्न विभागोंमे पृथक् न करके उन्होंने जीवनकी धाराको एक और अविभाज्य समझा है। जिन्हें हम सामाजिक, आर्थिक तथा नैतिक पक्ष समझते अथवा कहते हैं, गांधीजीकी दृष्टिमे वे एक ही धाराकी सहायक सरिताएँ और एक ही ढाँचेके विभिन्न पहलू है। गाधीजीने जीवनके इस नवीन दृष्टिकोणकी व्याख्या किसी आन्दोलन-गीत या दार्शनिक-महाकाव्य के रूपमे नहीं की, वरन् मनुष्यकी आत्मामे एक ओर अपने वहुरुपी स्वार्थों

और दूसरी ओर न्यायके प्रति निष्ठा, सत्-पक्षकी सेवा तथा आदर्शके प्रति सत्यताके बीच निरंतर चलनेवाले द्वंद्वके रूपमें उसे प्रतिपादित किया है।

यदि हम बहुप्रयुक्तशब्द "राजनीति" को कुछ व्यापक अर्थोंमें ले, तो इन सभी कार्यवाहियों एवं द्वंद्वोंका हम उसमें समावेश कर सकते है। राजनीति और कुछ नही, केवल मानव-कल्याण-संबन्धी विज्ञान एवं कला है, जिसमें मानवताके सामाजिक, नैतिक तथा आर्थिक उत्थानका समन्वय रहता है। ये विभाजन उसी प्रकार कल्पनिक है, जिस प्रकार विभिन्न देशों एवं राष्ट्रोंमें विभाजित संसारका विद्यमान पार्थक्य। स्वाभाविक ही था कि शासन-सत्ता प्राप्त करनेकी अभिलाषा, राजनीतिसे उत्पन्न हो। यद्यपि यह नितात सत्य है कि हर सत्ता हमें पूर्णतया दुराचारी बनाती है, तथापि सबको इस दुराचरणसे मुक्त करनेकी उसी प्रकार अत्यन्त आवश्यकता है, जिस प्रकार काचनको तपाकर मैल दूर कर देनेकी। हमारी राजनीतिमे गाधीजीने यही दुष्कर कार्य सम्पन्न किया है, और वह भी, अपने जीवन एवं चरित्रकी विशुद्धताके द्वारा। निःसंदेह, राजनीतिसे मलिनता हटाकर और उसका परिष्कार करके उन्होने उसे धार्मिक पवित्रता प्रदान की और सर्वांगीण नैतिकताका जामा पहनाया। सत्य और अहिंसाके मार्गपर बढते हुए, धर्मराजकी भाँति, गाधीजीने कभी मुड़कर नहीं देखा कि मेरी इस महान और उच्चतम-यात्रामे कौन पीछे चल रहा है अथवा कौन गिर चुका है। दृढ संकल्पी मानवकी भाति वे अपने चुने हुए पथपर अविचल रूपसे आगे ही बढ़ते गये।

दक्षिण अफ्रीकासे लौट कर उन्होंने देखा कि राष्ट्रीय जीवन किस प्रकार अस्तव्यस्त है, आर्थिक शोषणसे गाव किस प्रकार तबाह है, सामाजिक असमानताओंसे किस प्रकार मनुष्य-मनुष्यके बीच न्याय एवं औचित्य दुर्लभ हो रहा है और सरकारकी पापपूर्ण आमदनीसे देशका कितना नैतिक पतन हो चुका है। यही सब देखकर उन्होंने खद्दर तथा ग्रामोद्योगोंद्वारा स्वावलम्बी समाजकी स्थापनाकी आवाज उठायी। ऐसा समाज बन सके जो अस्पृश्यता-निवारण और मद्य, अफीम, भाँग आदि मादक द्रव्योंके निषेध द्वारा स्वाभाविक एवं आत्मशुद्ध हो। इस रचनात्मक कार्यक्रम द्वारा उन्होंने भारतके पुनर्निर्माणका प्रयत्न किया और साथ ही, सत्य एव अहिंसा पर आधारित सत्याग्रह की अपनी योजना द्वारा विदेशियोंकी दासतासे उसे मुक्त किया। इस प्रकार उन्होंने अपने दोहरे उद्देश्यकी पूर्ति की, एक तो भारत की दासता हटायी और दूसरे, सत्य एवं सुंदर रूपमे भारतीय राष्ट्रीयताकी नींव डाली।

यद्यपि गाधीजी महामानव हैं, तथापि अन्तिम विश्लेपणमे वह केवल ऐसे मानव ही निकले, जिसमे मनुष्योंमे पाये जाने वाले मस्तिष्क एवं हृदय संबन्धी गुण मोजूद थे। १९३१ मे पंचम जार्जसे हुई उनकी भेटके सिलसिलेमे बालकोंसे उनके अत्यन्त प्रेमकी भी चर्चा हुई थी। उनकी परिहास प्रियताने ही जीवनकी

अनेक परीक्षाओंमे पीडाओंके वोझसे दवकर नष्ट हो जानेसे उन्हें वचाया। आद-र्शकी अपेक्षा वास्तविकताके प्रति उनका काफी ख्याल था और इसीलिये गांवोंके पुनरुद्धारका मुख्य साधन उन्होंने चरखेको माना। तुच्छ हरिजनके लिये उनका आशीर्वाद सरलतासे सुलभ हो सकता और उच्चसे उच्च नरेशकी भी वे भर्त्सना कर सकते थे, वाइसराय उनके शब्दसे दहल उठते, शासक उनकी कार्य-कुशलतापर मन्त्र-मुग्ध रह जाते और राजनीतिज्ञ उनकी साधन-सम्पन्नताका विचार करके थर्रा उठते थे। उनकी उंगलीके उठते ही करोडो मनुष्य मौन होकर उनकी आज्ञाका पालन करते, लाखों जेलोंमे धंस जाते, सैकडो अपना सव कुछ निछावर कर देते और सैकडों उनके उपदेशों पर आचरण करते हुए प्राण त्याग देते। इस प्रकार, वास्तविकताके क्षेत्रमे उन्होंने आदर्शकी महत्ता स्थापितकी और वास्तविकताको आदर्शके उच्च शिखर तक पहुचा दिया। उन्होंने ऊपर स्वर्ग और नीचे पृथ्वीके वीचकी एक कडीके रूपमे काम किया है। वे अवतार हैं जो इस कलियुगमे धर्म-स्थापनार्थ ससारमें अवतीर्ण हुए।

उन्होंने अपना कार्य पूरा किया और हमे छोड कर चले गये। यद्यपि इहलोकके हम लोगों को उनके निधन पर ऐहिक शोक है, किन्तु हमे समझना चाहिए कि कोई भी अवतार अपना कार्य समाप्त करनेके वाद उस क्षेत्रमे नहीं रुकता। निश्चय ही, पिछले जूनके महीने से, ऐसा विश्वास करनेके लिए उनके पास कारण मौजूद थे कि मेरी आवश्यकता अब नही रही और समाज एवं नीति सम्बन्धी उनके विचारों और उनके चतुर्दिक प्रचलित तत्सम्बन्धी अन्य विचारोके वीचकी खाई अधिकाधिक चौडी होती जा रही है। निर्वाणसे ठीक पहले, अवतारोंपर ऐसी ही वीती है। कुरुक्षेत्रके रण-प्रागणमे पाडवोंकी सफलताके बाद श्रीकृष्णके साथ भी ऐसा ही हुआ था। द्वारिका लौटनेपर उन्होंने देखा कि वहाँकी जनता पाप तथा व्यभिचारमे लीन हो चुकी है। इसीलिये उन्होंने वनको प्रस्थान किया और वहाँ, हिरणके धोखेमे, एक वहेलियेके तीरसे मारे गये। अपना कार्य पूरा कर लेनेके वाद श्रीरामचंद्रने भी पवित्र सरयू नदीमे जल-समाधि लेकर अपनी इहलीला समाप्त की। पश्चिमी देशोंमे भी ब्रूनोंको जला दिया गया, सुकरातने विष-पान किया, गेलिलियोकी कारामे मृत्यु हुई और अब्राहम गोलीके शिकार हुए। गांधीजी भी गोलोके शिकार हुए, किन्तु वे अवतार वनकर चिरजीवी रहेंगे। अपने अतिम अनशनमे ही वे समाप्त हो चुके होते, किन्तु इसीलिये वच गये कि उन्हें एक हत्यारेके हाथोंसे मरना था। उनके निधनपर शोक मनाना भी निरर्थक ही है, क्योंकि अपने जीवन पर्यन्त उन्होंने हम लोगोको यही शिक्षा दी थी कि इस ससारके लिए कोई भी व्यक्ति अनिवार्य नहीं है जिसके विना काम ही न चल सके, क्योंकि उनके जीवनकी पुस्तक सदैव हमारे सामने है और चिर-काल तक रहेगी। उनका अकित उपदेश यह था कि भारत अभी स्वतत्र नहीं

हैं, केवल स्वाधीन हुआ है। हिन्दू-मुस्लिम एकताका कार्य उन तीन महान कार्योंमें से था, जिन्हें लेकर उन्होंने राष्ट्रका नायकत्व आरंभ किया और जो कार्य शेष रह गया। उसके लिए उन्होने अपनी जान दे दी। क्या हम आशा नहीं कर सकते कि उनके परिश्रमके फलस्वरूप, उनके अनुयायियोंको सफलता प्राप्त हो और पहलेसे अधिक विचारवान् बनाकर वे अपनेको सुधार सके।

यह विश्व-विख्यात मानव, जिसके उपदेशोंका प्रभाव निश्चय ही दोनों गोलार्द्धोंके अनेक राष्ट्रोंके भविष्य-निर्माण पर पड़ेगा—अपने वैराग्यके लिए बुद्ध, कष्ट-सहनके लिए ईसा, सत्यताके लिए हरिश्चद्र, ईमानदारीके लिए श्रीराम और नीति-नैपुण्यके लिए श्रीकृष्णके यशोपूर्ण उदाहरण हमारे मस्तिष्कमे पुनः जाग्रत कर देता है। स्वदेशकी मुक्तिके लिए अवतरित तपोदूत गाधीने, पहले लिप्सा एवं भयपर विजय पायी और अपनेको ही मुक्त किया। यही वह संत है,जो जीवनमे नायक और मृत्युमे शहीद बना। युद्ध एवं अहिसासे त्रस्त इस संसारका वह आधुनिक मसीहा है। यदि किसीका यह कथन सच है कि ईसाई तो केवल एक ही था जो सूली पर मारा गया तो उतनी ही सचाईके साथ यह भी कहा जा सकता है कि ईसाई तो एक ही था जो गोलीसे मारा गया। ससारकी सेवा गांधीजीने अर्द्ध शताब्दीतक की और अपने कार्य-क्षेत्रसे विदा होते समय भावी सतानके लिए दोहरा कर्तव्य बता गये, एक अपने लिए और दूसरा राष्ट्रके लिए। मृत्युके बाद अपना स्मारक-वाक्य लिख सकनेका यश किसीको प्राप्त नहीं हुआ। किन्तु ३० मार्च १९३१ को कराचीमे अनजाने ही वे कह गये कि 'गाधी मरेगा किन्तु गाधीवाद सदैव ही जीवित रहेगा' वस्तुतः गाधीवाद क्या है और कहॉ वास करता है? न जिह्वापर, न परिधानोमे और न परिष्कृत अथवा गॅवारू उन अल्पकालीन सामाजिक रूपोमे, जिनसे मानव जीवनका स्तर चित्रित है। गाधीवाद जीवनकी एक प्रणाली है। न तो उस पर 'आश्रम' का ही एकाधिकार है, और न काग्रेसके स्तम्भाश्रित राजसी मंडपका। न उसका स्थान बीहड़ वनोंके वृक्षोके बीच हैं और न प्रवाहित जलाशयोंके तटोंपर। उसका स्थान है हृदयमे। गाधीवाद जीवनकी एक प्रणाली है। वह अनेक भाषाऍ बोलता है, पर एक ही जबानसे और एक ही आदर्शमे निष्ठा रखकर भी वह सहस्रों प्रकारसे सेवाऍ करता है। गाधी तो मरा पर गाधीवाद अमर हो गया।

❀

डाक्टर सर तेज बहादुर सप्रू

[भारतके प्रमुख विधान-शास्त्री और राजनीतिज्ञ]

मैं इस शोकपूर्ण समाचारको सुनकर अवाक् हो गया। सर्वश्रेष्ठ साधु-पुरुष, सर्वश्रेष्ठ देशभक्त और भारतीय स्वाधीनताके जनकने भारतीय एकताके लिए अपने प्राणोंकी आहुति दे डाली। मैं आशा करता हूँ जो कांग्रेसी गांधीजीके पीछे रह गये हैं वे उनकी परम्पराकी रक्षाके योग्य अपनेको सिद्ध करेंगे। आज समस्त देश इस आघातसे विचूर्ण हो गया है, कहना चाहिये।

० ० ०

हमारे इतिहासमे १९४७ का १५ अगस्त, जिस दिन भारत ने स्वतन्त्रता प्राप्त की, चिरस्मरणीय रहेगा। पर हमे यह भूल न जाना चाहिये कि इस स्वतन्त्रताके जन्मदाता महात्मा गांधी थे, जो स्तुति और निन्दाको चिंता न करते हुए स्वतत्रता-प्राप्तिके लिए अनवरत रूपसे कर्मशील रहे। और अन्तमें उस स्वतन्त्रताको, जो उनके हृदयकी सवसे अधिक अभीष्ट वस्तु थी, प्राप्त करनेमे सफल हुए। किन्तु स्वतन्त्रता-प्राप्तिका उल्लास वहुत ही अल्पकालीन रहा। स्वतन्त्रता मिलते ही देशके कुछ भागोंमे ऐसे दुष्कर्म हुए जो हमारे विख्यात इतिहास-ग्रन्थके सवसे कलकित पृष्ट होंगे। हम लोग शोक और संघर्षसे मुक्त होना ही चाहते थे कि ३० जनवरी सन् १९४८ की सन्ध्याके समय सवसे वड़े सकटका पहाड़ हमारे ऊपर टूट पड़ा।

उसी सन्ध्याकी वेलामे स्वतन्त्रताके जन्मदाता और जीवनकी समस्त उदात्त सद्वृत्तियोंके प्रेरणास्रोत महात्माजी, दिल्लीमे एक हत्यारेके कायरतापूर्ण घातक आक्रमणके शिकार हुए। हममेसे किसीने भी यह कल्पना कभी नहीं की थी कि सत्य और अहिंसाके इतने वड़े पैगम्बर एव स्वतत्रता और समता की स्थापनाके लिए निरन्तर लड़ते रहनेवाले महा योद्धाको अपने जीवनके ७९ वें वर्षमे अपने शुभ्र तथा सन्तोंके समान आचरणका मूल्य इस भॉति चुकाना होगा। महात्मा गाधीका महाप्रयाण केवल हमारे देशके ही इतिहासका नहीं वरन् समस्त विश्वके इतिहासकी एक युग-समाप्तिका सूचक है। यह सोचना कि महात्मा गाधी भारतके महान देशभक्त थे, नितान्त भ्रम है। सत्य तो यह है कि वे आधुनिक युगके सवसे वडी जीवित नैतिक-शक्ति थे जिसका संदेश आजके सघर्षपूर्ण त्रस्त विश्वके कोने-कोनेमे श्रद्धाके साथ सुना जाता था, चाहे कलहशील मानवता उस पथका अनुसरण भले ही न कर सकी हो। कदाचित

मानव जातिके इतिहासमें दो या तीन महापुरुषासे अधिक अबतक ऐसे मनुष्य नहीं हुए हैं, जिनकी तुलना नैतिक उत्कर्ष और सत्य तथा अहिंसामें अविचल विश्वासकी दृष्टिसे महात्मा गाधीके साथ की जा सके। ऐसे पुरुप किसी एक देशके नहीं होते, वे समस्त विश्वके होते हे। ऐसे महापुरुष यदि उत्पन्न न होते तो विश्वकी मानवताका इतिहास महत्वहीन रहता। ऐसे ही मानव अपने उपदेशो और आचरणों द्वारा मनुष्य-जातिके इतिहासको महत्वशाली वनाते है। वे लोग किसी एक दल या देशके न होकर समस्त विश्वके, समस्त मानवजातिके, होते हैं।

महात्माजीके जीवनके महत्वपूर्ण कार्य भारतभूमिपर सम्पन्न हुए। स्वतन्त्रताकी सिद्धिके लिए, समता और विश्वबन्धुताकी स्थापनाके लिए तथा शोषित और निर्दलित मानवताके अभ्युत्थानके लिए महात्माजीने अपना जीवन समर्पित कर दिया था। न्याय, पवित्रता,सत्यता तथा उदारताके द्वारा अपने लक्ष्य-साधनमें वे अनवरत लगे रहे। जिस समय आजका उत्तेजनापूर्ण वातावरण शान्त हो जायगा और हम शान्तचित्तसे विचार करने योग्य हो सकेंगे, हमें पूर्ण विश्वास है. उस समयका निष्पक्ष इतिहासकार वतायेगा कि भारतवर्षके विशाल इति-हासमे केवल महात्मा गाधी अकेले व्यक्ति थे जिन्होने जाति, रग और सम्प्र-दायके कारण कभी किसीको भेद-दृष्टिसे नहीं देखा और जो इस देशका निर्माण सद्भावना और मेलजोलकी दृढ भित्तिपर करनेके लिये सदा उत्सुक रहे। उन्होंने अपने उक्त सिद्धान्तो और विश्वासोंकी साधनामे अपने प्राणोकी आहुति दे दी।

अनातोले फ्रासकी एक कहानीमे एक स्थलपर वताया गया है कि जहाँ एक ओर मानव समाजने प्लेटोको भुला दिया वहीं दूसरी ओर महात्मा ईसाको आज भी सभी स्मरण करते है, उनका सम्मान करते है, उनकी पूजा करते है और उनके उपदेशसे न जाने कितने लोगोंके आन्तरिक विचार प्रभावित होते रहते है। इसी प्रकार हम पूर्ण विश्वासके साथ यह कल्पना कर सकते है, यद्यपि महात्मा गांधीके हत्यारेको संसार थोड़े ही दिनोंमे भूल जायगा तथापि महात्मा गाधी चिरकाल तक सदैव सभी सत्कर्त्तव्यो और देशके कल्याणार्थ निःस्वार्थ सेवा-कार्योंकी ओर मानव जातिको उन्मुख और प्रेरित करते रहेगे।

इस समय मेरा हृदय इतना भरा हुआ है कि उन सभी वातोंको, जिन्हें इस समय मैं कहना चाहता था, नहीं कह पा रहा हूँ

[प्रयाग हाइकोर्ट की बैठकमें पठित वक्तव्य

❀

महर्षि अरविंद घोष

[सुप्रसिद्ध संत और दार्शनिक]

जो प्रकाश स्वतन्त्रता-प्राप्तिमें हम लोगोंका नेतृत्व करता रहा वह ऐक्य प्राप्ति नहीं कर सका। परन्तु वह प्रकाश बुझा नहीं है, अभी प्रज्ज्वलित है और जबतक विजयी न हो जायगा जलता रहेगा। मेरा विश्वास है कि इस देशका भविष्य अत्यन्त महान है तथा एकता अवश्य स्थापित होगी। जिस शक्तिने इस संघर्ष कालमें भी हम लोगोका नेतृत्व किया और हम लोगोको स्वतन्त्रता दिलायी वही शक्ति हमे उस लक्ष्यतक भी ले जायगी जिसके लिए महात्माजी अंततक सचेष्ट रहे और जिसके कारण उन्हें इस दुर्घटनाका शिकार बनना पड़ा। जिस प्रकार हमने स्वतन्त्रता प्राप्त की उसी प्रकार हमे ऐक्य-प्राप्तिमें भी सफलता मिलेगी। भारत स्वतन्त्र और संघटित रहेगा। देशमे पूर्ण ऐक्य होगा तथा हमारा राष्ट्र अत्यन्त शक्तिशाली होगा।

डाक्टर भगवान्दास

[प्रथम कुलपति काशी विद्यापीठ]

उसने दूसरोंको बचाया, वह अपनेको न बचा सका। क्या दूसरोंको बचानेकी यह शर्त नहीं है कि वे ही लोग उसे सूलीपर चढ़ा दे जिनके कल्याणके लिए वह जीवनभर प्रयत्न तथा परिश्रम करता रहा है? गौतम बुद्ध और महावीर सरीखे विरले अपवादोंको छोड़कर, संसारके सभी मसीहोंका यही अनिवार्य एव वांछित अन्त रहा है। महात्माजीके महान जीवनका भी यही सगत तथा पूर्वनिश्चित दिव्य अन्त हुआ। जो राजनीतिमे उनके शत्रु थे अथवा दोष देखने वाले थे वे भी आज उनके दोषोंको भूल गये है, केवल उनके उत्तम गुणोंका और सतत आत्मबलिदानका स्मरण करते है और मानवताके उस हितैषी और प्रेमीके लिए अभीतक शोक मनाते और भग्न हृदयके ऑसू बहाते है।

किन्तु जहॉ महात्माजीके लिए यह सुखद अन्त रहा है वहीं भारतके लिए इसका अर्थ होगा कि हिन्दू और मुसलमानोंके बीच जो भयंकर कुहराम और आपसी मारकाट मची हुई है वह दस गुनी बढ जायगी और वह न केवल हिन्दू और मुसलमानोंके आपसी कत्लतक ही सीमित रहेगी वरन् हिंदुओ और हिंदुओं, हिंदुओ और सिखो और मुसलमानो-मुसलमानोंके पारस्परिक सहारका

स्वरूप धारण करेगी। पाकिस्तानके गवनर-जनरलकी हत्याके तीन प्रयत्न हो चुके है और गवर्नर-जनरल महोदय तभीसे छिपकर रह रहे है। शीया तथा सुन्नी आपसमें लड़ते ही आये है और लखनऊमें हालमें लडे थे। और चूँकि महात्माजी एक महाराष्ट्रीयके हाथ मारे गये और यह बात प्रसिद्ध है कि हिन्दू महासभाके सदस्य मुसलिम लीगियों और पाकिस्तानियोके सम्बन्धमे पक्षपातके कारण उनसे घृणा करते थे, दैनिक पत्रोंकी रिपोर्टके अनुसार हिन्दुओंने पूना तथा अन्य स्थानोंमें हिन्दू महासभाके नेताओंके घरोको जलाना और लूटना शुरू कर दिया है। बहुसंख्यक मोमिन सम्प्रदायके अनेक भारतीय मुसलमान नेता पाकिस्तानके गवर्नर जेनरल और उनके अनुयायियोंकी जोरदार शब्दोंमे निन्दा कर रहे हैं। हरि इच्छा!

डाक्टर सर सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

[भूतपूर्व कुलपति : हिन्दू विश्वविद्यालय]

गाधीजीपर होनेवाले इस प्राणघातक प्रहारसे मुझे शब्दातीत क्लेश पहुँचा। जिसकी कभी कल्पना नहीं की जा सकती थी, जिसपर विश्वास नहीं किया जा सकता वह हो ही गया। पवित्रतम, उत्कृष्टतम सत्प्रेरणाके स्रोत बापूके पुनीत व्यक्तित्वपर एक विक्षिप्त द्वारा प्राणान्तक,प्रहार तो यही सिद्ध करता है कि सुकरातको विषपान करानेवाले और ईसाको सूली देनेवाले मानव अबतक जहाँके तहाँ ही रह गये।

o o o

अतीतके एकमात्र सजीव प्रतीक महात्मा गाधी अब नहीं रहे। हमने उनके शरीरकी हत्या कर डाली। किन्तु उनकी वह ज्योति जो, सत्य और प्रेमके प्रकाशपुञ्जसे उद्भूत थी, कभी बुझ नही सकती।

आखिर यह संसार महात्माओंके रहने योग्य कब होगा? आज हिन्द और पाकिस्तानके उपनिवेश ही नहीं वरन् समस्त विश्वको भलीभाँति समझ लेना चाहिये कि यदि हम हिंसा, नृशंसता और अनाचारके महागर्तमे पतित होनेसे बचना चाहते है तो उन आदर्शोंके अतिरिक्त दूसरा पथ नहीं है जिनके लिए महात्माजी जिये और मरे।

यदि हम अपनेको गाधीजीका भक्त मानते हैं तो हमको उन्हींके सिद्धान्तों के अनुसार चलना चाहिये और मनसा, वाचा, कर्मणा क्रोधसे परे रहकर उन्हीं का अनुसरण करना चाहिये। गाधीजीने विदेशी शासनका बोझ हटानेके लिए दोनों प्राचीन प्रणालियोंका, सशस्त्र विद्रोह तथा अनुनयात्मक याचनाका, बहिष्कार किया। उन्होंने पूर्ण स्वतन्त्रताका ध्येय तो स्वीकार किया किन्तु अन्य नेताओंसे उनकी दृष्टि भिन्न थी और उन्होंने सिद्ध कर दिया कि राजनीतिक स्वतंत्रता ऐसे साधनोंसे भी प्राप्त की जा सकती है जो मानव मर्यादाके अनुरूप हों। उनका ध्येय केवल विदेशी साम्राज्यके पंजेसे स्वाधीनता प्राप्त करना ही नहीं था वरन् देशको अन्य संघर्षोंसे भी मुक्त करना था। शताब्दियोंतक नैतिक और आध्यात्मिक सिद्धान्तोंके द्रष्टा महर्षिके समान वे पूजित रहेंगे। उन्हींके बताये हुए पथपर चलकर पथभ्रष्ट विश्व शान्ति प्राप्त कर सकता है।

डाक्टर सच्चिदानंद सिंहा

[प्रथम अध्यक्ष : भारतीय विधान परिषद]

भारतके महापुरुषोंमे गान्धीजी एक हैं। उनमें आध्यात्मिकता एवं व्यावहारिक आदर्शका विचित्र एवं अनुपम समन्वय था।

मैं महात्माजीको महान सन्तके रूपमें मानता रहा हूँ। भारतवर्षने जिन महत्तम विभूतियोंको जन्म दिया उनमेंसे वे एक थे। उनमें उच्चकोटिकी आध्यात्मिकता तथा साधारण-तम सक्रिय आदर्शवादिताका समन्वय रूप देखनेको मिलता था। ऐसे व्यक्ति इस वसुधापर अनेक युगों बाद जन्म लेते हैं। जहाँतक भारतका सम्बन्ध है, इस सकटके क्षणोंमे उनका हमारे बीचसे उठ जाना देशकी भारी अपूरणीय क्षति है।

जगद्गुरु शंकराचार्य

[ज्योतिष्पीठाधीश्वर : बदरिकाश्रम]

भारत ही नहीं, समस्त विश्वका एक देदीप्यमान नक्षत्र सदाके लिए अस्त होगया। इस आकस्मिक महाविपत्तिसे भारत ही नहीं वरन् समस्त विश्व गम्भीर दुःख सागरमे डूब गया है भगवान् उनकी आत्माको शान्ति प्रदान करें।

सर मिर्जा इस्माइल

[भूतपूर्व दीवान · मैसूर तथा जयपुर राज्य]

गांधीजीने भारतके मुसलमानोंके लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया और इसमें सन्देह नहीं कि भारतके मुसलमान उनके बताये रास्तेपर चलकर उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करेंगे और उनकी स्मृतिको चिरस्थायी बनायेंगे। इस समय प्रत्येक भारतीयका कर्तव्य है कि वह सरकारको पूरी तरहसे मदद करे। गांधीजीकी मृत्युसे सारे राष्ट्रको बहुत गहरा नुकसान पहुँचा है। अतः भारत और पाकिस्तानको अपने मतभेद दूर कर परस्पर सद्भावकी भावनाएं उत्तेजित करनी चाहिये।

श्री शरच्चन्द्र बोस

[भूतपूर्व सदस्य : भारतीय अंतरिम सरकार]

राष्ट्रपिताकी जघन्य हत्याका हृदय-द्रावक शोक-समाचर सुनकर मैं स्तब्ध रह गया। ऐसे कुकृत्यकी निन्दा करनेके लिए शब्द नहीं मिलते। देश अनाथ हो गया है। ईश्वर ही जाने कि भविष्यमें क्या होने वाला है। महात्माजीका देहान्त हुआ, देखें अब दूसरा महापुरुष कब अवतार लेता है।

श्री पुरुषोतमदास टण्डन

[अध्यक्ष युक्तप्रान्तीय व्यवस्थापक सभा]

स्वतन्त्र-भारतकी महत्ता और महात्मा गाधीका व्यक्तित्व दोनों अभिन्न है। संसारके किसी कोनेमें जब भारतकी महत्ताका नाम लिया जायगा गांधीजीका नाम भी साथ रहेगा। जिस हिन्दूने भ्रान्त हिन्दुत्वके पागलपनमें उनकी हत्याकी है उसने सबसे अधिक हानि हिन्दुओंको ही पहुचायी है।

❀
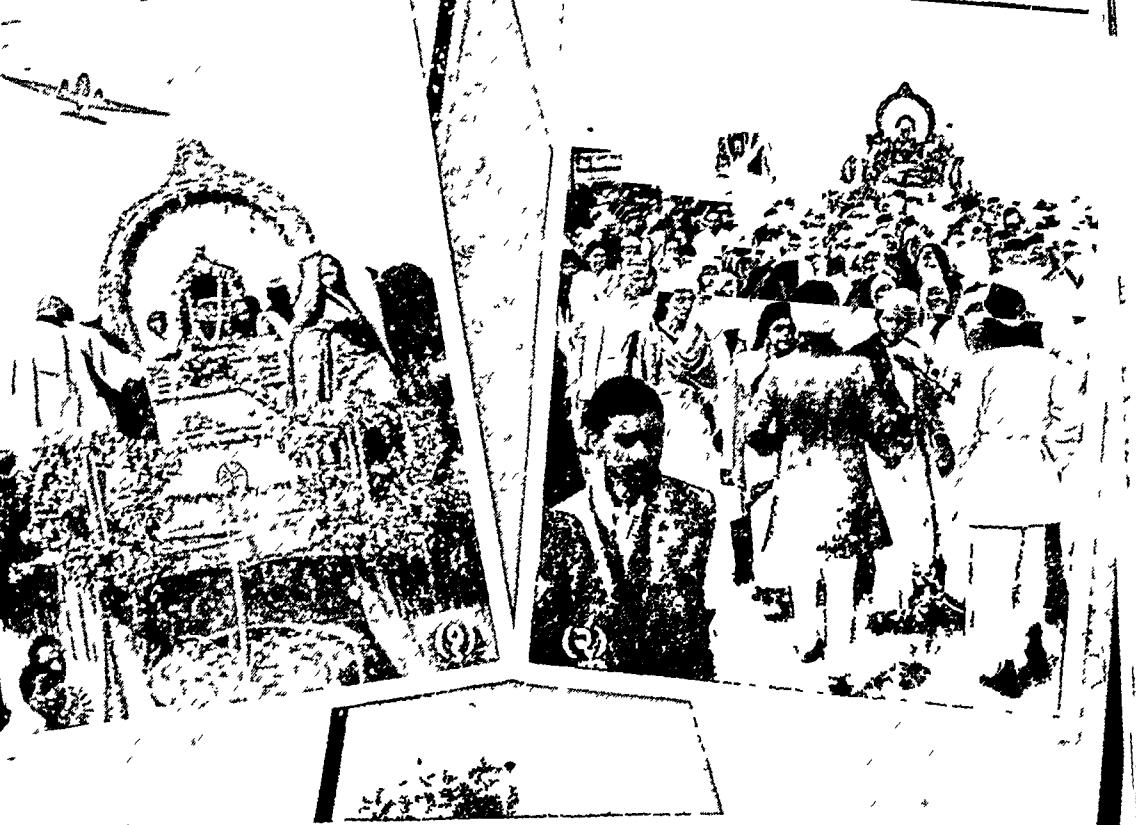
१—अस्थिघट वाही रथ-पर वायुयान द्वारा पुष्प वृष्टि।

२—अस्थिघटके जलूसमें 'रामधुन' का [illegible]

३—रथ के आगे नेहरू जी पैदल चल रहे हैं।
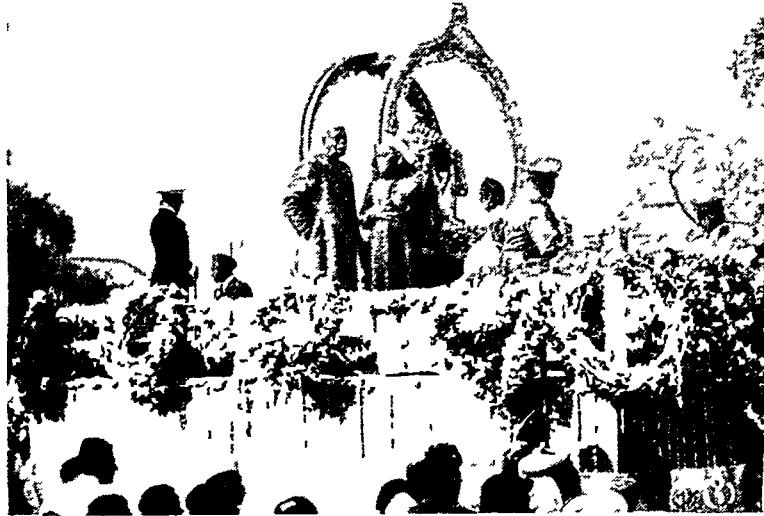
१—-प्रयागमे वह सुसज्जित रथ, जिसपर पुनीत अस्थि-
घट रखा गया। रथपर युक्तप्रातके प्रधान मत्री
पतजी और रफी अहमद किदवई साहब खडे हैं।
२—जल-थलमे समान रूपमे चलनेवाली नौका जो
अस्थिघट लेकर सगममे जल सतरण कर रही है।

श्री चद्रशेखर व्यकटरमण

[विश्व-विख्यात वैज्ञानिक तथा नोवुल-पुरस्कार-विजेता।]

कठिनाईके समय मनुष्यके व्यवहारका अध्ययन तथा ऋतु-शास्त्रका अध्ययन—दोनोंमे वहुत समता दिखाई पडती है। निरीक्षक देखता है कि सागरमे वायुका दवाव कम हो रहा है और वह वता देगा कि किनारे आँधी आने ही वाली है। उसकी भविष्यवाणी समय तथा स्थानके संवधमे कितनी भी निश्चित हो, परन्तु आँधीको वह रोक नहीं सकता और उससे होनेवाली हानिसे रक्षा भी नहीं कर सकता। गत कई महीनोंकी दुःखद घटनाएँ हमारे अभागे देशमे वहनेवाली प्रचड आँधी थी जिसके परिणामस्वरूप मनुष्यके जीवन और सुखका ध्वस हमे देखनेको मिला है और उसका अन्तिम प्रहार वह दुखमय घटना है जिसने हममेसे ऐसे व्यक्तिको हरा दिया जो अपनी मानवताके कारण तथा मानवताकी भलाईके लिए सदा तत्पर रहनेके कारण इस युगका अद्वितीय व्यक्ति था। मैं समझता हूँ कि इस विषयपर विचार करना वेकार है कि भावी इतिहास महात्माजीके संवधमे क्या कहेगा अथवा महात्माजीके जीवन तथा शिक्षाका प्रभाव हमारे देश अथवा एशियापर आगे क्या पड़ेगा। यह सब भविष्यके गर्भमे है। किन्तु हम लोगोंको, जो उस स्वाधीन भारतके निवासी हैं जिसे वह हमे दे गये हैं, यदि अपने भाग्यमे विश्वास है और यदि हममे वर्तमान दुःख तथा कठिनाइयोंपर विजय प्राप्त करनेकी और महान भविष्य निर्माण करनेकी शक्ति है तो महात्मा गाधीने भारतको पुनः स्वतत्र करनेके लिए जो कार्य किया है और जिस प्रकार उन्होंने इसमे अपना जीवन विताया है उसे हम कभी भूल नहीं सकते।

गत चालीस वर्षोसे मै जिस कार्यमे लगा हूँ वह राजनीतिक क्षेत्रसे सर्वथा भिन्न है और इधर भारतमे मुख्यतः इन दिनों राजनीतिक कार्य ही होता रहा है। मैने इस प्रयत्नमे किसी प्रकारका सहयोग नहीं दिया, न किसी राजनीतिक नेतासे सपर्क स्थापित किया किन्तु महात्माजी तो सभीसे भिन्न थे। मैंने जब उन्हे देखा, उनकी वाते सुनीं तभी मेरे ऊपर उनकी गहरी छाप पडी। पहली वार मैने उस ऐतिहासिक अवसरपर उन्हें देखा जब वनारस हिन्दू विश्वविद्यालयकी नींव पडी और भीडके सम्मुख उन्होंने भाषण किया। जिस समय वे राजाओंको उनके अपव्यय तथा प्रजाके प्रति निर्मम उपेक्षाके लिए फटकार रहे थे,जनता मूर्तिवत सुनती रही। राजा लोग उपस्थित थे। उनमे सव इस आलोचनाके पात्र थे या नहीं, यह दूसरी वात है किन्तु एक एक करके सव हालसे चले गये और श्रीमती एनी

बेसेण्टने उनका साथ दिया, जो उनको असफल रूपसे सांत्वना देनेकी चेष्टा कर रही थीं। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया और महात्मा गांधीकी शिक्षाके कारण जीवनकी समस्याओंको नये ढंगसे लोग देखने लगे, और उनके विचारोंसे लोग परिचित होते गये उनका प्रभाव देशवासियोंके मनपर अधिकसे अधिक पड़ने लगा और धीरे धीरे यह स्पष्ट होने लगा, सब लोग जान गये कि भारतकी स्वतन्त्रताकी लड़ाईमें वे सर्वप्रथम हैं। यह भी स्पष्ट हो गया कि जीवनकी समस्याओंके प्रति उनका दृष्टिकोण उदारतापूर्ण तथा व्यावहारिक था। उनकी रुचि मनुष्यके जीवन तथा उसके सुखमें थी। विज्ञान, अर्थशास्त्र अथवा राजनीति आदिमें, जिनका इनसे संबध न था, उनकी रुचि न थी। इस मनोवृत्तिके कारण साधारण मनुष्यके हृदयमें उनके प्रति भक्ति थी चाहे उन लोगोंको, जिनके लिए यह ज्ञान-विज्ञान मानवतासे ऊपर है, उतनी श्रद्धा न रही हो। इसमें सन्देह नहीं कि महात्मा गांधीकी हत्यापर जो श्रद्धा और भक्तिपूर्ण शोक तथा प्रदर्शन संसारके सभी भागोंमे हो रहा है वह महात्मा गांधीके उन्हीं भावों तथा सेवाओंके बदलेमें हो रहा है, जो उन्होंने मनुष्य-समाजके लिए की है। उनकी सेवाएँ जाति और धर्मसे परे सारी मानवताके लिए रही है। एशियामें ऐसे उदार व्यक्ति और भी हुए हैं जिनके जीवनका प्रभाव देशपर शाश्वत रहा है। महात्माजी उनमें सबसे प्रमुख है।

डाक्टर हृदयनाथ कुँजरू

[अध्यक्ष . सर्वेण्ट आफ इण्डिया सोसायटी]

अपनी आत्माके प्रति सच्चा रहनेका हमें उपदेश देते हुए तथा भारतके प्राचीन पावन आदर्शोंको अपने आचरण द्वारा साकार करते हुए महात्मा गाधीका साम्प्रदायिकताकी ज्वालामे भस्म होना एक अत्यंत हृदय-विदारक घटना है। भारत ही नहीं समस्त विश्वमे ऐसा उपदेशक अनेक शताब्दियोंमें अवतरित नहीं हुआ है। उनका निधन समस्त मानवताकी हानि है। यद्यपि वे अब नहीं रहे तथापि उनकी आत्मा हमें प्रकाश देती रहेगी। यह परम दुःखका विषय है कि वे हमारे बीच अब नहीं रहे किन्तु हमारे विचारों और कार्योंको प्रभावित करनेकी उनकी जितनी शक्ति आज है, उतनी पहले कभी नहीं रही। उनका जीवन देश-विदेशमे करोड़ों व्यक्तियोंको प्रेरणा और स्फूर्त्ति देता रहेगा। एक फारसी कविके शब्दोंमें हम कह सकते हैं—"भावी युगके महापुरुष तेरे चरण-चिन्होंपर सम्मानपूर्वक नतमस्तक होते रहेंगे।"

युक्तप्रांत

माननीय सरोजिनी नायडू

[गवर्नर : युक्तप्रान्त]

उस महापुरुषके सबधमे मेरे लिए कौन-सी नयी बात कहनेको शेष रह गयी है, जिसके सबधमे समस्त विश्वके राष्ट्रोंने अपनी-अपनी भाषाओंमे श्रद्धाजलि अर्पित कर उनकी अन्तर्राष्ट्रीय महत्ता स्वीकार कर ली है। ससारके सभी धर्मनिष्ठ, आदर्शवादी, विवेकशील तथा शान्तिप्रिय व्यक्तियोंके मनमे उनके प्रति आदर और प्रेम था। मुझे स्मरण है, महात्माजीका प्रथम अनशन हिन्दू-मुस्लिम एकताके लिए हुआ था। उस समय मैं उनके साथ थी। उस अनशनके साथ सारे देशकी सहानुभूति थी। उनका अन्तिम अनशन भी हिन्दू-मुस्लिम ऐक्यके निमित्त ही हुआ था। पर इस अन्तिम अनशनमे सारा देश उनके साथ नहीं था। इस समय इस देशमे प्रचलित सभी मतोंकी धर्मशिक्षाओंके विपरीत, देशवासियोंमे आपसी मतभेद, परस्पर विरोध, घृणा और आशका इतनी बढ गयी थी कि कुछ पक्के गाधीवादियोंके सिवा और कोई भी गाधीजीके अनशनके रहस्यको नही समझ सका। हिन्दू-समाजके लिए कितने खेदकी बात है कि ससारके सर्वश्रेष्ठ हिन्दूकी, हिन्दू धर्मके सिद्धान्तों, आदर्शों और दर्शनके एकमात्र सच्चे प्रतीककी, एक हिन्दूके ही हाथों हत्या हुई।

हममेसे कुछ लोगोंका गाधीजीके साथ इतना निकट सबध था कि हमारा और उनका जीवन एक दूसरेसे अविच्छिन्न हो गया था। हम लोगोंमेसे कुछ तो उनकी मृत्युसे सचमुच ही मृत-से हो गये हैं। हममेसे कुछ लोग उनकी मृत्युसे जीवित रहकर भी निष्प्राण हो गये हैं, क्योंकि हमारे स्नायु, मासपेशियाँ,

तन्तु, नस, नाडियाँ, हमारे हृदय और रक्त उनके जीवनके साथ घुले-मिले थे, गुँथे हुए थे।

पर उनकी मृत्युसे यदि हम निराश हो जायँगे और यह विश्वास करने लगेंगे कि सचमुच ही वे मर गये, उनके चले जानेसे सब कुछ चला गया तो हम उनके विरोधी, उनका साथ छोडनेवाले अर्थात् पथभ्रष्ट वन जायँगे। उनके प्रति हमारी निष्ठा और आस्थाका मूल्य ही क्या होगा यदि हम विश्वास करने लगे कि उनके नश्वर शरीरके उठ जानेके साथ ही सब कुछ समाप्त हो गया।

क्या उनके उत्तराधिकारी, उनके आध्यात्मिक वंशधर, उनके महान आदर्शोकी थाती सम्हालनेवाले तथा उनके बाद उनके कार्योको आगे बढानेवाले हम जीवित नहीं है ? दुःख और विलापका अब समय नहीं रहा, छाती पीटने और बाल नोचनेका समय भी समाप्त हो गया। अब तो वह समय है जब हमे उन लोगोकी चुनौती स्वीकार करनी है जिन्होने महात्मा गाधीका विरोध किया है।

हम उनके जीवित प्रतीक है, और इस युद्ध-रत विश्वमे उनकी शाति-पताका फहरानेवाले है। सत्य हमारी पताका है, अहिसा हमारी ढाल है और बिना किसी रक्तपातके विश्व-विजय करनेवाली आत्माकी करवाल हमारा शस्त्र है। क्या हम अपने धर्मगुरुके पथका अनुसरण न करेंगे ? क्या हम राष्ट्र-पिताकी आज्ञाओका पालन नहीं करेंगे ? क्या हम उनके सैनिक न बनेंगे ? क्या हम उनके द्वारा पशुता और अशान्तिके लिए छेड़े गये युद्धको विजयप्राप्ति तक नही चलायेंगे ? क्या हम उनके उपदेशोंका विश्वके सामने उस रूपमे न रख सकेंगे जिस रूपमे वे चाहते थे ? यद्यपि अब उनकी वाणी हमे न सुनाई पड़ेगी किन्तु क्या हम लोगोंके पास, उनके महान संदेशको विश्वके कोने कोनेमे फैलानेके लिए, अगणित वाणियाँ नहीं है ? केवल अपने इस समकालीन विश्वके लिए ही नहीं वरन् भावी सभी पीढियोंके लिए हमे उनके उपदेशोका अगणित कण्ठोंसे प्रचार करना है।

मै आज समस्त संसारके सामने, जो मेरी काँपती हुई वाणी सुन रहा है, ३० वर्ष पूर्वकी तरह अपनी ओरसे महात्मा गांधीकी सेवाके लिए प्रतिज्ञा करती हूँ। मृत्यु क्या है ? इस संबधमे मेरे पिताने मरनेके पूर्व कहा था—"मृत्यु, मृत्यु नहीं वरन पुनर्जन्म है। सत्यके उच्चसे उच्च स्तरकी खोजमे जीव बार बार जन्म ग्रहण करता है।"

महात्मा गाधीका दुर्बल शरीर कल अग्नि-शिखाओंमे भस्मसात् हो गया। पर सचमुच वे मरे नहीं हैं। प्राचीन युगमे ईसामसीहकी भाँति अपने भक्तों तथा विश्वके मानवोंकी पुकारके उत्तरमे, अपने पथ-प्रदर्शन, प्रेम, सेवा और प्रेरणाका क्रम जारी रखनेके लिए वे मृत्युके तीसरे दिन पुनः उठ खड़े हुए हैं।

बादशाहोंकी समाधिस्थल दिल्लीमें उनकी अन्त्येष्टिका होना ठीक ही हुआ क्योंकि वे बादशाहोंके बादशाह थे। शान्तिके अग्रदूतके शवका श्मशान भूमितक एक योद्धाके शवकी भाँति सज-धज और प्रतिष्ठासे ले जाना उचित ही था, क्योंकि वह लघुकाय व्यक्ति उन सभी योद्धाओंमे महान और वीर था जिन्होंने युद्ध-स्थलमे बडी बडी सेनाओंका नेतृत्व किया है। वे सबके विश्वस्त मित्र थे। दिल्ली उस महान क्रान्तिकारीका केन्द्र और तीर्थ-स्थल बन गयी जिसने अपने परतत्र देशको विदेशी दासतासे मुक्त कर स्वाधीनता और राष्ट्रीय झडा प्रदान किया। मेरी प्रार्थना है कि मेरे गुरु, मेरे नेता, मेरे पिताकी आत्मा शात होकर निष्क्रियता न प्राप्त करे। पिता, तुम्हारी आत्मा सुप्त न हो। हमे दृढप्रतिज्ञ रखो। हमे, जो तुम्हारे उत्तराधिकारी है, तुम्हारे वशज है, तुम्हारे शिष्य है, तुम्हारे स्वप्नोंके संरक्षक है, भारतके भाग्य-निर्माता है उन्हे अपनी प्रतिज्ञाका पालन करनेकी शक्ति प्रदान करो।

० ० ०

युगोंकी प्राचीन गङ्गा तथा यमुना नदियोंके संगममे असख्य नर-नारियोंका अस्थि-प्रवाह हुआ है जो यहाँ मिलकर विलीन हो गये है। पर भारतके इतिहासमे इतने बड़े महापुरुषका अस्थि-पुष्प पानेका इन्हे कभी सौभाग्य नही मिला, जिसका जीवन-मरण भावी सन्ततिके लिए एक अमर और सनातन आदर्श रहेगा। हमारे प्रान्तमे देशकी अनेक पावन नदियाँ हैं। मुझे अभिमान है कि जनताके सहयोगसे हमारे प्रिय महात्माजीके अस्थि-प्रवाहका ऐसा सुन्दर और समुचित प्रबन्ध हुआ। इतिहासमे महात्माजीके अन्तिम संस्कारका अपूर्व आयोजन मानवताको उनके प्रेम, सत्य एव अहिंसाका प्रकाश प्रदान करेगा।

❀

माननीय पुरुषोत्तमदास टडन

[अध्यक्ष युक्तप्रान्तीय व्यवस्थापिका सभा]

मै गत बुधवारको गांधीजीसे मिला था और लगभग एक घटेतक काग्रेसके विषयमे बातचीत करता रहा। उनके चले जानेसे हमारा पथ-प्रदर्शक चला गया। भारतीय स्वतंत्रताके वे जन्मदाता थे और विश्व-इतिहासमे वे चिर-स्मरणीय रहेगे। इस देशमे वे एक महान अवतारकी भाँति सदा पूजित रहेंगे।

इस देशके प्रत्येक व्यक्तिका हृदय आज रो रहा है। हत्यारेने समस्त राष्ट्रको जो महान क्षति पहुँचायी, उसे उसने तनिक भी नही समझा। उसने सोचा कि हिन्दू जातिकी वह बड़ी भारी सेवा कर रहा है, पर अपने कुकृत्यसे उसने हिन्दुओंकी बड़ी भारी हानि की। महात्माजी केवल हिन्दुओके लिए ही कार्य नहीं करते थे वरन सभी जाति ओर वर्गवालोंके वे समान रूपसे सच्चे सेवक थे।

० ० ०

वापूको खोकर आज हम लोग सचमुच पितृ-हीन, बिना बापूके, हो गये। वह केवल हमारे देशके ही नहीं, किन्तु यदि ससार पहचानता तो, वह सब देशोंके सच्चे बापू थे। उनके हृदयमे सबकी रक्षाका भाव था और वह सबके शिक्षक थे और सच्चे अर्थमे वह जगद्गुरु थे। हमारे देशके तो वह सर्वस्व थे ही, किन्तु उन्होने केवल अपने देशके लिए ही नहीं वरन ससार भरके लिए एक नया युग बनाया। वह युग-प्रवर्तक थे। हमारे देशमे तो वह अवतारी पुरुष माने जायेगे। वह उसी शृखलामे है जिसमे राम, कृष्ण, बुद्ध और ऋषभदेव हुए। उनका भी नाम उन्हीं अवतारी पुरुषोके साथ गिना जायगा। जैसा अवतारी पुरुषोंके कामके ढगोंमे अन्तर था उसी तरह उनके कामका ढग भी अद्भुत और निराला था। जब जब अवतारी पुरुष आये है उन्होंने समयके अनुरूप शिक्षाएँ दी है। धर्मकी रक्षा करनेके लिए, बुराइयोको हटानेके लिए ही अवतारोका आना होता है। "सम्भवामि युगे युगे" मे जो वचन है कि मै युग-युगमे आता हूँ बुराइयोका नाश करनेके लिए, वह वाणी महात्माजीके जीवन-कालमें सफल होती दिखाई पडती है। हमने तो उनको अपने पिताके रूपमे, अपने नेताके रूपमे देखा। परन्तु वह केवल हमारे देशकी स्वतत्रताके लिए नहीं आये। इस देशमे पैदा होनेके नाते वह तो उनका सीधा काम था, किन्तु सारा ससार किस तरह ऊँचा हो यही उनका असली अभिप्राय था। यदि हम उनके कामोको थोडा विचार करके देखे तो ऐसा जान पड़ता है कि दृष्टिकोणके अन्तरसे कुछ बातोंमे हममेसे कुछ लोगोंका और उनका मतभेद था। हम अपने ही राष्ट्रके मसलोंको सामने रखते थे। वह उनके सामने भी थे, लेकिन उनकी निगाह सारा ससार किस तरह ठीक हो, इसपर थी। राष्ट्रीयता और ससार-व्यापक दृष्टिकोण, इन दोनोमे कुछ अन्तर कभी कभी होना स्वाभाविक है। यही बात हम महात्माजीके कामोंमे, उनके जीवनमे देखते है। राष्ट्रके साथ साथ वह ससार भरका ध्यान रखकर कभी कभी कुछ ऐसी बाते भी कहते थे जो हमारे देशके लोगोंको ऐसी लगती थीं कि मानो वे राष्ट्रीयताकी सहायता करनेवाली नहीं हैं, यद्यपि राष्ट्रीयतासे ऊपर हैं।

लोक-संग्रहका काम महात्मा गाधीजीके हृदयमे बैठा हुआ था। लोक-संग्रहके भीतर धर्मकी एकता मुख्य बात है। सब धर्मोंमें जो एक अभिप्राय और

एक ईश्वरका पूजना बताया गया है उसकी ओर विशेष रीतिसे ध्यान दिलाना, देश-जन्य अन्तर होते हुए भी ससार भरकी एक सस्कृति है, इसकी घोषणा और शिक्षा महात्मा गाधीजीने अपना मुख्य कर्तव्य बनाया। अन्तिम दिनोंकी उनकी उपासनाका एक वाक्य था—"**ईश्वर अल्ला एकहि नाम**"

यही उनकी भावनाका द्योतक था। हमारे देशमे पहले भी भक्त-जन और धर्म-प्रवर्तक हमको सिखला गये है कि राम-रहीम एक है। यह बात हमारे बहुतसे भक्तोंने सिखलायी परन्तु हम उसे बार-बार भूल जाया करते है और उन बातोंके भूलनेका ही यह पापमय परिणाम हुआ जो हमने पिछले दिनोंमे-देखा। इधर साल भरके भीतर जो हमारी भूले हुई, बहुत गहरी भूले हुई, आज उनके याद करनेका अवसर नहीं है। धर्मके नामपर हमने प्रेम, जो धर्मका वास्तविक तत्त्व है, नहीं फैलाया, किन्तु हमने आपसमे घृणा पैदा की। ईसाके समान पूज्य बापूजीने भी हमारी भूलोंका प्रायश्चित्त किया। मुश्किल है यह कहना कि क्या महात्मा गाधीके प्रायश्चित्तके बाद भी हम कुछ सम्हलेगे? ईसाने प्रायश्चित्त किया किन्तु जगत उसके बाद बहुत नहीं बदला। क्या गाधीजीके प्रायश्चित्तके बाद हमारी भावनाएँ सचमुच सच्ची राहपर आवेगी?

आज हमारे लिए यह सोचना भी एक कठिन बात हो गयी है कि वह चले गये और अब हमारा मार्ग-प्रदर्शन नहीं करेगे। यह दिलको दहलानेवाली बात है। हमारे समाजके कोने कोनेमे, केवल राजनीतिमे नहीं सब दिशाओंमे, वे इतने फैले हुए थे, हमारी रगोंमे उनका प्रभाव इतना छा गया है कि हमारे लिए यह सोचना भी मुसीबत है। मुश्किलसे हमारे देशका कोई प्रश्न होगा जिसपर गाधीजीने मार्ग-प्रदर्शन न किया हो। आज केवल उनकी याद ही हम कर सकते है। वे धार्मिक पुरुष थे, वे अर्थशास्त्रके भी अद्वितीय ज्ञाता थे, वे शिक्षण-गुरु थे, वे एक सच्चे वैद्य भी थे। समाजका ऐसा कौन-सा कोना था जिसमे उन्होंने प्रवेश कर मानवमात्रकी भलाईकी बात न सोची हो। आज उनकी स्मृतिमात्र रह गयी है। वह हमको ठीक रास्तेपर ले चले, हम उनके योग्य हों, इस योग्य हो कि हम उनके साथ भारतवासी कहलाये, आज हृदयसे हमारी यही प्रार्थना है। इसीमे हम उनकी आत्माको शान्ति दे सकते है।

❀

"जब पानीसे जमीन कटने लगती है तो अच्छी जमीन भी बरबाद हो जाती है। यह काफी बुरी चीज है। मगर जात-पात रूपी घुन उससे भी बुरा है। वह आदमियोंको बरबाद कर देता है और उन्हें एक दूसरेसे अलग करता है।"

—गाधीजी

माननीय सर सीताराम

[अध्यक्ष : युक्तप्रांतीय कौंसिल]

महात्मा गांधीके आकस्मिक महाप्रयाणसे आज हम अनाथ हो गये। देशकी इस विपत्तिपूर्ण वेलामें हम किसके पास पथ-प्रदर्शनके लिए जॉय, इसे हम आज नही जानते। विश्वके उस सर्वश्रेष्ठ पुरुषके चले जानेसे आज संसार दरिद्र हो गया है।

o o o

स्वातन्त्र्य-लाभके पश्चात् हमारी उच्च आकाक्षाएँ आज ध्वस्त हो गयीं। हत्यारेकी उस गोलीने—जिसने बापूकी हत्या की—समस्त राष्ट्रको व्याकुल कर दिया है।

माननीय गोविन्दवल्लभ पन्त

[प्रधानमत्री : युक्तप्रान्त]

आज हमारे देशमें सर्वत्र शोक छाया हुआ है। सबके हृदय उदास है। महात्मा गाधीके देहावसानके कारण सबको महान वेदना हो रही है। महात्मा गाधी हमारे राष्ट्रके पिता थे। उन्होंने स्वतंत्र भारतको जन्म दिया। वह हमारे इस नवजात राष्ट्रके उत्पादक, निर्माता और पोषक थे। उनके निधनसे हमारा राष्ट्र और हम सब अनाथ हो गये। हमें उन्होंने गड्ढेसे उठाकर ऊँचे शिखरपर पहुँचाया। उनके नेतृत्वमे ही देशकी असाधारण उन्नति हुई। जो बात कल्पनामे नहीं आती थी उसे उन्होने सिद्ध और प्राप्त करके दिखाया। वे इस युगके अवतार थे। हमारे इस प्राचीन देशमे धर्मकी ग्लानि हो रही थी, अधर्म बढा हुआ था, कायरताने सबको ग्रस्त कर रखा था, सब बन्धनोंमे जकडे हुए थे। किसीको भी अधकारमे रास्ता नहीं दिखाई देता था। महात्मा गाधीने हमारे निर्जीव और मृतप्राय देशमे नवजीवनका सचार किया, मुर्दनीको दूर किया तथा जर्जर अस्थि-पंजरके ढाँचेमे आत्म-विश्वास और स्वावलम्बनका स्रोत प्रवाहित करके ससारमे हमे उचित स्थानपर स्थापित किया।

उन्होंने ४० करोड़ स्त्री-पुरुषोंको केवल राजनीतिक स्वतन्त्रता ही नहीं दिलायी बल्कि सभी क्षेत्रोंमे अपने आध्यात्मिक प्रभावसे जड़ताके स्थानमे चेतनाका

सचार किया। भारतीय-संस्कृतिका पुनरुद्धार उनके द्वारा हुआ। उन्होंने हमें भारतीय-सभ्यताके मौलिक सिद्धांत वतलाये। उनके उपदेशसे हमने अपने खोये हुए रत्न और लुप्त निधिको फिर पा लिया। महात्माजी मोहसे परे और निस्पृह थे। प्रतिदिन प्रार्थनामे वह गीता-पाठ करते और सुनते थे। वास्तवमे वे स्थित-प्रज्ञ थे। वे असहायोंके सहायक, दलितोंके उद्धारक और दरिद्रनारायणके उपासक थे। वह सभी जातियों, वर्गों और सारेमानव-समाजके हित-चिन्तनमें निरंतर लगे रहते थे और सब कुछ करते हुए भी निर्लिप्त रहते थे। वे मन, वचन ओर कर्ममे असाधारण सामञ्जस्य रखते हुए सबकी सेवा-सुश्रूषा करने और सबको सवल, सुखी और आत्मोन्नत वनानेमे प्रयत्नशील रहते थे।

उनकी ख्याति ससार भरमे सर्वत्र अनंत काल तक वनी रहेगी। उनकी मुक्त आत्मा सत्यलोकसे सदा हमारा पथ-प्रदर्शन करती रहेगी। उनके वताये हुए मार्गको हमारा देश कभी न भूलेगा, वह पथ-भ्रष्ट नही होगा। उनका स्मरण करके हम सभी संकटोंसे पार हो जायेंगे और जव भी हमे कोई कठिनाई होगी, हम सोचेंगे कि वापू ऐसी अवस्थामे क्या कहते? उसे सोचकर, उनका ध्यान करके हम उसको सुलझानेकी विधि निकालेंगे। गाधीजीका शरीर हमारे वीच नहीं है, पर गाधीजी अमर है। हमारे उद्धारक 'वापू' जहाँ भी होंगे वहींसे हमे उन्नत करते रहेंगे। हमे उनके सत्य, अहिंसा, निर्भीकता और मानवताके सिद्धातोंको निरंतर अपने सामने रखना है। उनके उपदेशोंके अनुसार पारस्परिक प्रेम और सद्भावका व्यवहार करना है। इस लज्जाजनक घटनासे हमारे देशपर जो कलक लगा है उसे उनके पावन आदेशों और शिक्षाओंके अमृतसे धो देना है। इस घोर विपदासे हमे यह विदित हो गया है कि साम्प्रदायिक द्वेष फैलानेसे कितनी भयकर हानि हो सकती है।

कमसे कम प्रत्येक भारतीयको यह प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि हम सव देशवासियोंमे सहिष्णुता, सहृदयता और एकताको वढानेका प्रयत्न करेंगे और इसके विपरीत कोई वात न होने देंगे।

o o o

महात्माजी अपने युगके मसीहा थे। ऐसे समय जव भारत अनेक वधनोंमे जकडा था, महात्माजीने उसे नवीन जीवन प्रदान किया और ससारमे उसे सम्मानका स्थान दिलाया। महात्माजी राष्ट्रके पिता थे। और कुछ नही तो उन्होंने स्वतत्र भारतका निर्माण तो किया ही और उसे ऊँचा पद प्रदान किया, जो उनकी सहायताके विना सम्भव नही था।

उन्होंने भारतवासियोंको स्वतत्रता ही नहीं दिलायी, वरन उन्हे उनकी सस्कृति तथा सभ्यताका ज्ञान भी कराया। पददलितोंके वह सवसे वडे सरक्षक थे

और सब संप्रदायोंके सेवक थे। उनकी वाणी और उनके कार्य सबको सुख देनेके लिए होते थे।

महात्मा गांधीकी आत्मा अब भी हमारा पथ-प्रदर्शन करेगी और उन्होंने जो कुछ सिखाया उसे भारतवासी कभी नही भूलेंगे। जब हमें कठिनाइ पड़ेगी तब हम उनकी शिक्षाओंको सम्मुख रखकर और उसी प्रकार आचरण कर, जिसे महात्माजीने उचित समझा होता, हम उन कठिनाइयोंपर सहज विजय प्राप्त कर सकेंगे।

महात्मा गांधीकी हत्या हमारे ऊपर कलंकका धब्बा है। हम उनकी बतायी राहपर चलकर ही उसे धो सकते हैं। लोगोंको समझ लेना चाहिये कि सांप्रदायिकतासे बड़े अनर्थ हो जाते हैं। हम लोगोंको फिरसे एकताके लिए तथा मेलजोलके लिए प्रयत्न करना चाहिये। आशा करता हूँ कि महात्माजीकी शिक्षाएँ हमारा पथ-प्रदर्शन करेंगी और जिन सिद्धांतोंके लिए वह जिये और मरे उन्हें हम कभी न भूलेंगे।

o o o

चार दिन हुए महात्मा गाधीके भौतिक शरीरका अंतिम संस्कार हम लोगोंने प्रयागमे किया। उस दिन महात्माजीकी अस्थियाँ गगा-यमुनाके सगममे, उस पवित्र धारामें समर्पित की गयीं। महात्माजीकी इहलौकिक यात्राका अत हुआ। आज हम लोग यहाँ पर एकत्र हुए है। इस बीच सारे संसारने महात्माजीके प्रति अपनी श्रद्धा और भक्ति प्रकट की है और जिस आदरके साथ ससार उनको देखता था उसका कुछ अणुमात्र दिग्दर्शन कराया है। आज हम इस व्यवस्थापिका सभामे उस घोर पापके बाद जो दिल्लीमे १७-१८ दिन पूर्व हुआ था, एकत्र हुए है। किसी भी भारतवासीके लिए इस अवसरपर कुछ कहना कठिन होता है। उनके लिए, जिनका कुछ सौभाग्य रहा और महात्माजीके चरण-कमलोंमें अपनी श्रद्धांजलि और समय देनेका भी जिन्हें अवसर मिला है, उनके लिए इस अवसरपर कुछ कहना कठिन हो जाता है। जो लोग भावुक नहीं है उनके लिए भी यह एक कठिनाईकी बात होती है।

मैने आजतक यथासभव इस सबधमे कुछ भी कहनेमे सकोच किया क्योंकि मैं उसको कठिन पाता था। पर जब सारे ससारसे महात्माजीको श्रद्धाजलि दी गयी, इस व्यवस्थापिका सभाका भी कर्त्तव्य हो जाता है कि वह अपनी श्रद्धाजलि उनकी पवित्र स्मृतिके प्रति अर्पित करे। इस पुनीत कर्त्तव्यको पूरा करनेके लिए ही मै खडा हुआ हूँ।

महात्माजीके बारेमे कुछ भी कहना कठिन है, परतु जो इस व्यवस्था-

पिका सभाको शोक, वेदना, लज्जा, गम, अफसोस, रंज और शर्म इस वातसे हुई उसका इसकी कार्रवाईके पन्नोंमे आ जाना आवश्यक है। मै समझता हूँ कि इस वारेमे किसीमे भी, इस सूवेके अन्दरके और वाहरके लोगोंके विचारोंमे भेद नहीं है। कोई नीच व्यक्ति ही होगा जो दूसरी भावना रखता हो, वर्ना सवकी एक ही भावना है। और जहाँ तक इस सभाका संवध है, यह तो महात्माजीकी ही देन है। इसके जो कुछ अधिकार है, इसे जो गौरव मिला है भारतीय स्वतत्र राष्ट्रका अग होनेका, वह महात्माजीके ही परिश्रम, नेतृत्व और अलौकिक प्रभाव का ही फल है, उन्हीकी तपस्यासे हम इस व्यवस्थापिका सभामे एकत्र होकर सेवा करनेका अवसर पाते है। महात्माजीके वारेमे किन्हीं शब्दोंमे कुछ कहना किसीके लिए भी सभव नहीं है। हमारे भारतवर्पकी पिछले तीस सालकी जो भी घटनाएँ है, जो कुछ भी इतिहास हमारे देशका है, वह महात्मा गाधीके जीवनका इतिहास है। महात्माजीने ऐसी अवस्थामे, जव कि हमारा देश जर्जर था, हमारे यहाँ लोगोंमे पराधीनताके भारसे जकड़े होनेके कारण जो निर्वलता रोम-रोममे वस जाती है, उसने जव घर कर लिया था, जव कि देशमे कहीं भी स्वावलवन और आत्म-विश्वास नहीं रह गया था, जव कि सव जगह एक मुर्दनी-सी छायी हुई थी, महात्माजीने अवतार लेकर हमारे इस जर्जर देशमे एक नये जीवनका सचार किया, नयी विजली, उन हड्डियोंमे जो विल्कुल घिस चुकी थीं पैदा की और फिर ससारको एक नया चमत्कार दिखलाया, जिसके परिणामस्वरूप अहिंसा द्वारा चालीस करोड़ स्त्री-पुरुप, वाल-वृद्ध अपनी जजीरोंसे, वेड़ियोंसे मुक्त और आजाद हुए। यह ससारके इतिहासमे ऐसी वात है जिसकी मिसाल कहीं मिलती नहीं और जव तक इस ससारमे कोई भी मनुष्य जीता रहेगा, जिंदा रहेगा, वह इस वातको भूलेगा नहीं कि एक ऐसे दुर्वल शरीरवाले महापुरुषने किस ढगसे वेजान लोगोंमे जान डाल दी और जो विल्कुल जर्जर थे उनको पुनर्जीवित कर दिया। महात्माजी हमारे देशके उद्धारक थे। आज यदि भारतवर्ष स्वतंत्र है, चाहे वह भारतीय संघ है चाहे पाकिस्तान है, तो वह महात्माजीके ही पराक्रमका परिणाम है। जहाँ तक मनुष्य देख और समझ सकता है, हमारी वेड़ियाँ टूटती नहीं और पाकिस्तानके सव हिस्से उसी तरह वधनोंमे वँधे होते जैसे पहले थे। पाकिस्तानके रहनेवालोंको भी महात्माजीका उतना ही कृतज्ञ और अहसानमद होना है जितना भारतके किसी और दूसरे प्रांतके रहनेवालेको। क्योंकि सभीकी आजादी महात्माजीके पराक्रमसे, उनकी एक अलौकिक शक्तिसे और उनके एक आश्चर्यजनक नेतृत्वसे ही प्राप्त हुई है। महात्माजीने ऐसे समयमे, जव कि पहली लड़ाई मे (सन् १९१४ से १९१८) विजयी होनेसे अग्रेजोंके साम्राज्यका वल पहलेसे भी वढ गया था और ससार भरमे छाया हुआ था, जव कि आधेसे ज्यादा दुनियामे उनका एकच्छत्र राज्य था और ससारकी तमाम नाशकारी शक्तियाँ अग्रेजोंके हाथमे थीं, ऐसे समयमे इस देशमे आत्म-सम्मान, आत्म-गौरव और

स्वावलंवनका ऐसा स्रोत प्रवाहित किया कि उसके अमृतसे हमारे यहाॅ एक नव-जीवनकी धारा बह चली। और, इससे ही बढते-बढते हम उनके ही प्रभावसे उनके बताये हुए रास्तेपर बढ़े। हम बरसोसे गाधी-जयंती मनाते आये है और महात्माजीके प्रति प्रतिवर्ष हम अपनी प्रतिज्ञा करते है कि हम उनकी आज्ञाओका पालन करनेका प्रयत्न करते रहेंगे, पर महात्माजीके महत्वको संसार अभी क्या, सैकडों बरस तक भी,पूरी तरह नहीं समझ पायेगा। महात्माजी केवल एक भारतीय ही नहीं थे। यद्यपि उन्होने भारतके राष्ट्रीय सग्राममे, उसके स्वतत्र करानेमे पूर्ण भाग लिया, उसमे सबसे आगे रहे, तथापि वह तो यहाॅके चरित्रको सुधारनेके लिए। यद्यपि यहाॅकी जनताकी अवस्था सुधारनेके लिए, यहाॅके गिरे हुए लोगोको ऊँचा उठानेके लिए,यहाॅके भूखो-नगोको खाना दिलानेके लिए, यहाॅके दवे हुए आदमियोको फिर ससारमे पुनः जीवित करानेके लिए एकमात्र महात्माजी ही थे और इन कार्योंमे उन्होंने अपनी शक्ति भी लगायी तथापि उनकी आत्मा और उनके विचार किसी देशकी सीमाके भीतर सीमित नहीं थे। वह तो सारे ससारके महापुरुष थे। भारतको स्वतत्र करानेकी उनकी अभिलापा उतनी ही थी जितनी ससारके अन्य दवे हुए परतत्र लोगोकी। पर वह हमेशा यह समझते थे कि जिस त्तेत्रमे वह है वही उनका क्षेत्र है और वहीं उनको काम करना है। वह दुनियाॅमे अपना कर्तव्य कर गये और उनके कारण दुनियाॅके सब देश जागे। हुआ भी ऐसा ही कि भारतकी स्वतंत्रताके साथ सारा एशिया स्वतत्र हो गया। महात्माजीके कार्यने सभी गिरे हुए देशोमे जान डाल दी और सव लोगोंमे यह भावना फैलायी कि वे भी उठ सकते है, उनके लिए भी ससारमे स्थान है और वे भी स्वतंत्र हो सकते है। हमारे देशमे ही नहीं, वरन समस्त एशिया मे एक आत्मविश्वास उत्पन्न करके महात्माजीने केवल हमे ही नही वल्कि सारे एशियाको ऊपर उठाकर ससारमे उच्च स्थान दिलाया है।

महात्माजी केवल राजनीतिक कार्योंको करनेवाले ही नहीं थे, वह तो उनके जीवनका छोटा-सा अग था। उनकी तो अपनी एक फिलासफी थी, जीवनका एक आदर्श था। उसीके लिए वह प्रयत्नशील रहते थे और उसीके ढाॅचेपर वह समाजका निर्माण करना चाहते थे। महात्माजीके समान क्रातिकारी आजतक कोई शायद ही हुआ हो। उन्होने जो क्राति हमारे देशमे की उसका पूरा परिणाम हमने देख लिया और उसको देखनेके वाद उसकी तुलना या मुकावला किसी दूसरे कामसे कठिनाईसे हो सकता हे। किस अनोखे ढंगसे उन्होंने कार्य किया यह तो लोगोंको भौचक्का करनेवाली वात है जिसको संसारके लोग सुनते है और उनकी समझमे नहीं आता कि कैसे यह परिवर्तन हो गया। पर महात्माजीने सदैव जहाॅ भी हुआ, भारतीय आत्माको उठानेमे, हमारा गर्व और राष्ट्रीय उत्थान जहाॅ भी आवश्यक हुआ उसमे, उन्होंने हमारा पूरा-पूरा नेतृत्व किया। दक्षिण अफ्रीकामे,जहाॅ हिन्दुस्तानियोंपर अत्याचार होता था, अकेले उन्होंने स्मट्ससे, जो

उस जमानेमे वहाँ लेफ्टिनैण्ट था तथा वहाँके अन्य गोरोंसे भारतीयोंके लिए उनके अधिकारोंको सुरक्षित और स्वीकार करवाया। यहाँ आकर उन्होंने जगह-जगह पर, चम्पारनमे तथा अन्य स्थानोंपर गरीबोंकी मर्यादाको ऊँचा उठाकर, उनको स्वतन्त्रता प्राप्त करायी। उन्होंने जिसको दुखी पाया उसको सुखी बनानेमे अपनी शक्ति लगायी, मगर सबसे अधिक निर्बलोंको बलवान बनानेमे। उन्होने प्रत्येक व्यक्तिको यह समझा दिया कि वह अपनी कौमको ऊँचा उठा सकता है। उन्होने किसानों, मजदूरों और हरिजनोंको एक नया पाठ बतलाया और सबके लिए एक नयी दुनियाँ पैदा कर दी। उन्होने हमारे स्त्री-समाजमे भी अद्भुत क्रांति कर दी। जो देश मुर्झाया हुआ था वह पूरी तरहसे जानदार बन गया। उन्होंने ये सब बाते कीं और भी कई बाते की। उनका कोई विशेष क्षेत्र नहीं था। वह हर जगह यह भी देखते थे कि समाजमे किस तरीकेपर लोगोंको कमसे कम तकलीफ करके खानेके लिए अपने स्वास्थ्य और तन्दुरुस्तीको आगे बढानेका मौका मिल सकता है। खेती कैसे सुधर सकती है। उनका राजनीतिक क्षेत्र भी था और उन्होंने भारतकी संस्कृतिको भी ऊँचे उठाया। हमारे राजनीतिक क्षेत्रमे महात्माजीके आनेसे पहले एक विदेशी हवा ऐसी चलती थी कि किसीको, खासकर राजनीतिक नेताओंको, जमीनपर बैठना या धोती पहनना या टोपी देना एक गैरमामूली-सी बात जान पड़ती थी। उन्होंने भारतीयताको हमारे देशमें स्थापित करके हमे मनुष्य बनाया और संसारके सामने हमारी जो पुरानी आभा थी उसको रखकर हमारे राष्ट्रका गौरव बढाया। ऐसे महात्माके प्रति श्रद्धाजलि देना किस तरीकेसे हमारे लिए पर्याप्त हो सकता है और किन शब्दोंके द्वारा हो सकता है? हम कुछ भी करे, प्रत्येक भारतीय अगर बीसो बार भी महात्माजीके लिए अपने प्राण दे दे, तब भी उऋण नहीं हो सकता और जबतक मानव-इतिहास रहेगा तबतक महात्माजीका स्थान ससारके ऊँचेसे ऊँचे महात्माओंमे रहेगा। महात्माजीने यह सब कुछ किया था। वह अनासक्ति-योगका पाठ किया करते थे और उन्होंने हमको यह बतलाया कि पुराने जमानेके ऊँचे आदर्शोंको अपनाकर भी कैसे संसारकी और राष्ट्रकी उन्नति की जा सकती है। महात्माजीके बराबर अनासक्त और निरासक्त व्यक्ति कोई आजतक नहीं हुआ जिसने समाजके कल्याणमे अपना तमाम समय और शक्ति लगायी हो। जो आसक्ति छोड़कर समाजसे अलग होते वे ससारको छोडकर सन्यास लेकर चले जाते परतु महात्माजीने वास्तविक कर्मयोगका पालन किया और अपने सयमके द्वारा अपनेको बनाया।

महात्माजीने बचपनसे ही प्रत्येक छोटी-सी छोटी बातको सोचकर कि आगे क्या करना चाहिये, अपनी शैली अपने लिए नियत की और इसी ढगसे कायकर अपनेको अजेय बना लिया। महात्माजीकी निर्भीकता, महात्माजीका अदम्य उत्साह और सब काम करते हुए उसपर आसक्त न होना दुनियाकी सब

बातोंसे अलौकिक बात है। और इसी कारण महात्माजीका निर्णय हमेशा सही होता था। इससे जब भी कोई गुत्थी और समस्या देशके सामने आती थी तो सब दौड़ दौडकर महात्माजीके पास जाते थे और वे अपना निर्णय बतलाते थे, उसकी विवेचना करके अपना निर्णय बतलाते थे कि आगे क्या करना है। इसलिए उनके सिद्धांतोंको सामने रखकर हमें आगे चलना है। जिसे सत्य और अहिंसाके आधारपर उन्होने जीवनमें बराबर एक नये ढाँचेपर चलनेका उद्योग किया हमे उन सिद्धांतोंको सामने रखना चाहिये। जिन दीन-हीन व्यक्तियोको ऊँचा उठानेके लिए उन्होने हमें आदेश दिया है उन्हें निभाना और उनके प्रति अपने कर्तव्यको हमे भूलना नही है। विधिकी कैसी विडंबना है, कि जिन महात्माने अहिंसाके लिए अपना सर्वस्व अर्पण किया, जिन्होने आतकवादको, हिसावादको अपने मुल्कसे खत्म किया, हिसक क्रान्तिकारियोंको अपनी बात और अपने उद्देश्यको दिखाकर अहिंसा-त्मक बना दिया उन्हीं महात्माजीको हमारे देशके एक देशवासीके ही हाथसे, उनके सहधर्मी कहलानेवाले किसीके हाथसे, इस प्रकारकी हत्याका शिकार होना पड़ा। इससे और अनर्थकी बात कोई हो ही नहीं सकती। सिर्फ यह एक ऐसी बात है, ऐसा कलंक है जो हमारे देशके माथेसे कभी धुलेगा या नहीं, हम जानते नहीं है। हमें गौरव होता था, हम समझते थे, हम संसारमें कभी भी कह सकते थे कि हमारे यहाँ महात्मा गाधीने जन्म लिया तो हमारे लिए वह भी काफी श्रेयकी बात है और संसारके सामने हम घमंडसे अपना सर ऊँचा करके, इस प्रकार कह कर उसके साथ ही अपनी हैसियत हासिल कर सकते थे। और आज जब हम ससारमे यह बात कहे और वह यह पूछे कि उनकी हत्या करनेवाला तुम्हारे ही देशका था या नहीं, तो उसी बातपर हमारा घमड चूर हो जाता है। यदि हमारे देशने गाधीको उत्पन्न किया, जिसका हमें गर्व है और हमेशा रहेगा, तो हमे इस बातकी लज्जा भी है, शोक है और हम कभी इसको भूल नहीं सकते कि हमारे ही देशके किसीने यह महापाप—हमारे राष्ट्रके पिताका वध—किया। आज जब हम यहाँपर एकत्र है, हमे इससे सबक सीखना है कि हमे करना क्या है। ऐसे उपद्रव क्यो हुए। इस तरहकी बाते किसीके मनमे क्यों आयीं। आज अगर हम अपने दिलको टटोले, अगर हम गहरी तहमे जाकर हर एक चीजको सोचे तो मालूम पड़ेगा कि हममेसे बहुतोका शायद दोष था जिससे वह जहरीली हवा पैदा हुई, जिस जहरीली हवासे किसीके मनमें ऐसा पाप करनेकी धारणा आयी और इस पापको करनेके लिए उसने अपनेको उद्यत किया।

हमे यह याद रखना चाहिये, जो महात्माजी कहा करते थे कि छोटा-बडा कोई नहीं होता है। छोटेसे ही बडी बाते होती हैं। वह कहते थे कि मेरे लिए तो आजकी मंजिल काफी है, कल क्या होगा देखा जायगा। वह कहते थे कि मुझे कर्तव्य करना है, मै तो ड्यूटीको मानता हूँ और उसीको हृदयसे पूरा करना है।

वह कहते थे कि मनसा, वाचा और कर्मणा किसीके प्रति कभी भी दुश्मनीकी भावना न हो। बुराइयोंको दूर करें मगर किसीके लिए कोई बुराई अपने हृदयमें न रखें। अपने देशसे हमने उनके उद्देश्य और सिद्धांतको, उनकी रात-दिनकी दिनचर्याको एव जो वाते वे करते और कहते थे उनको किस तरह विसराया, आज हमें उन सवको फिर पूरी तरहसे जाच करके पूरा करना है और जॉच करके यह देखना है कि यदि हम महात्माजीके उद्देश्योंको निरतर सामने रखते तो क्या यह लज्जाजनक दुर्घटना होती अथवा नहीं। अभी मैंने एक दो वातें सुनी हैं कि कुछ जगहोंमें महात्माजीके निधनपर कुछ लोगोंने शोक मनानेके वदले कुछ और तरहका आचरण किया। मैं नहीं समझता कि यहाँ तक कोई पतित हो सकता है परंतु यदि कोई ऐसा हो तो उसको भारतमे रहनेका कैसे साहस होता है और वह कैसे अपना चेहरा किसीको दिखा सकता है, मै नहीं समझ सकता। जब कभी कोई दुश्मन भी मरता है तब भी कोई खुशी नहीं मनाता है। उस संसारके साधु, शान्तिके अवतार, मानवताके पुजारी, अहिंसाके व्रती, सवके प्रति दया, हित आर प्रेमकी भावना रखनेवाले महापुरुषकी हत्या हो और उसमे कोई भी व्यक्ति ऐसा निकले जो शोकमें व्यस्त न हो तो वह मनुष्य नहीं किंतु मनुष्य-जीवनका कलक है। मैं समझता हूँ कि यदि ऐसी कोई वात हुई होगी तो हमको सोचना है कि हम कहॉतक गिर चुके हैं जो हमारे वीच ऐसे किसी व्यक्तिका होना सभव हो सका है। यदि कोई ऐसा है तो उसका कभी कल्याण नहीं हो सकता है। हमने और ससारने यह मान लिया है कि बम और पिस्तौलके जरिये परिवर्तन नहीं हुआ करते। अगर वह हो सकता है तो ज्ञानके जरिये, मनुष्योंपर प्रभाव डालकर उनके विचारोंको वदलकर ही हो सकता है। इसलिए कमसे कम इतना तो हर एकको मानना चाहिये कि किसीके राज-नीतिक विचार कैसे भी हों, पिस्तौलके जरिये या हिंसाके जरिये कभी कोई परिवर्तन नहीं हो सकता है और न कभी ऐसा करनेसे परिवर्तन हुआ करता है। और न इस वक्तकी वनी हुई शासन-प्रणालीमे ही परिवर्तन हो सकता है परतु उसके भयकर परिणाम क्या होते हैं यह आपको देखना है। जो साम्प्रदायिक कलह भडक रहा था, फिरकेवाराना विचार पैदा हो रहे थे, जो तगदिली वढ रही थी, उसे हमे देख लेना चाहिये। समझ लेना चाहिये कि उसके कितने भयंकर परिणाम होते है और कहॉतक वात हुई। हिन्दू, मुसलमान और सिखका सवाल नहीं है। आज तो सवसे पहला सवाल यह है कि इस साम्प्रदायिक उन्मादने उसीको मार डाला है जिसने सभी संप्रदायोंका कल्याण किया। साम्प्रदायिकताका इससे अधिक और क्या बुरा परिणाम हो सकता है? वह कहींपर ठहरता नहीं। वह कहींपर संप्रदायों या फिरकोंके अन्दर वन्द नहीं रह सकता। वह हरएकपर पडता है। वह घर-घरमे कलह पेदा करता है। वह भाई-भाईको लडाता है। वह कहीं ठहरता नहीं। इसलिए हमको याद रखना है कि महात्माजी हमारे लिए जिये

और हमारे ही लिए उन्होंने अपने जीवनको समाप्त भी किया। महात्माजीने देशको, जो एक पागलपनमें आ गया था, उससे बचानेके लिए अपनी आहुति दे दी। वह अकेले नोआखालीमे घूमते रहे, कलकत्ते गये, दिल्ली आये। सब जगह उन्होंने फिर इस बातका उद्योग किया और हमको उस बातकी याद दिलानेकी कोशिश की जिसे हम भूले जारहे थे। आज जिस उद्देश्यको, जिस आदर्शको जिस मकसदको पूरा करनेमे हमारे जमानेका, हमारे देशका सबसे बड़ा महापुरुष चला गया, उस मकसदको हम न भूलें—कमसे कम इतना तो हमारा फर्ज और कर्तव्य हो ही जाता है। और हम यह सोचे कि एक सेक्यूलर डेमोक्रेटिक स्टेट बनानेका हमने ऐलान किया है, घोषणा की है, इकरार किया है, प्रतिज्ञा की है, तो हम जो कुछ भी करे अपने इस आदर्शके मुताबिक करे, सच्चाईसे करे। महात्मा गांधीके उद्देश्योंको आगे रखे और उनको कभी भूले नहीं। महात्माजी गरीबोके, दरिद्रनारायणोंके पुजारी थे। उनके प्रति इस देशके प्रत्येक मनुष्यका विशेष कर्त्तव्य है। उनका उद्धार करना और उनको उठाना यह हम सबका सबसे बड़ा कर्तव्य है। उन्होंने अपनी रचनात्मक कार्य-प्रणाली हमारे बीच रख छोड़ी है और वही उनकी सबसे बड़ी स्मृति होगी। अब जो महात्माजीका स्मारक बनाया जा रहा है उसके द्वारा महात्माजीके सिद्धातोका प्रचार होगा, महात्माजी, जो हमलोगोको शिक्षा और उपदेश देते थे, हमको मिलते रहेंगे और यदि हम उनके अनुयायी होनेके योग्य अपनेको प्रमाणित कर सके तो हम अपने ही देशका नहीं वरन संसारका भी कल्याण कर सकेंगे।

[व्यवस्थापिका सभा मे

माननीय सम्पूर्णानन्द

[शिक्षा और श्रम-मन्त्री युक्तप्रान्त]

महात्माजी महापुरुष थे, क्योंकि उनका जीवन सर्वांगीण था। उनके जीवनका प्रत्येक अग शिक्षा-प्रद था, महात्माजीने हमलोगोको विविध आदर्श दिये और सबसे बडा आदर्श धर्मका था। धर्मका अर्थ परोपकार है।

हिन्दू धर्म-शास्त्रोंमे अधिकारोंका उल्लेख नहीं है, उनमें केवल कर्त्तव्योंका लेख है। प्राचीन ऋषियोंका यह मत था कि कर्त्तव्योंसे अधिकार स्वतः प्राप्त होते हैं। आधुनिक जगतके 'अधिकार' शब्दने सर्वत्र सघर्ष एवं विघटन उत्पन्न कर दिया है। स्वतंत्र होनेपर हमारे कर्त्तव्य बढ गये है। महात्माजी सदैव गीताके 'कर्मयोग' का अनुसरण करनेके लिए कहा करते थे।
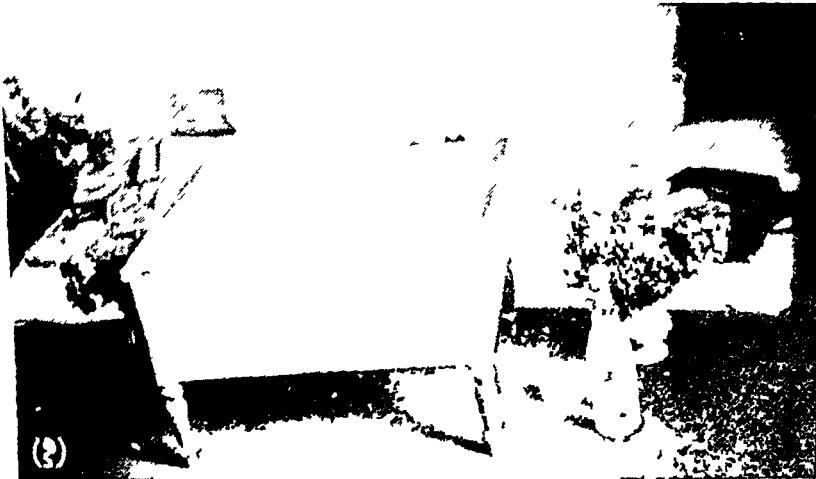
१—वह आसन और चौकी जिसपर गाधीजी बैठकर लिखते थे।
२—वह स्थान जहाँ गोलीसे आहत होकर गाधीजी गिरे।
३—उसी पवित्र स्थानपर एक पीठिका बना दी गयी है।
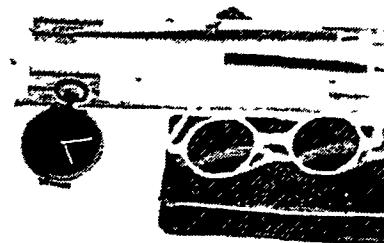
ाधीजीका चर्खा 'यर
ादा चक्र' जो सदैव
वावलम्बनकी सूचना
'ता रहेगा ।
ाधीजीका कलमदान,
त्र घडी, चश्मा,
ाश्रम - भजनावली
स्तक तथा तीन बन्दर-
ाला गाधीजीका प्रिय
वलौना, जो निन्दा
नकर, निन्दा मत सुन,
ाई मत देख—इसकी
ाक्षा देता रहा है ।

३—गाधीजीकी चरणपादु
और चप्पल ।

४—गाधीजीके भोजनके ३ पा
और एक चम्मच ।

५—गाधीजीको बर्माके प्र
मत्री द्वारा उपहार
गयी दो हैटें । ऐसी है
बर्माके किसान पहनते हैं।

माननीय हाफिज मोहम्मद इब्राहीम

[यातायात-मत्री युक्तप्रात]

हमारे इतिहासका यह सबसे अधिक शोकपूर्ण क्षण है। समस्त राष्ट्र दु:खसे भर उठा है। महात्मा गाधीने अपने जीवनकी आहुति उन आदर्शोंके लिए दे डाली, जिसका वे आजीवन प्रचार करते रहे। अब हमे उनके दिखाये हुए पथपर चलना है। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् आज हमे उनकी सबसे अधिक आवश्यकता थी, पर हत्यारेके क्रूर हाथोंने हमारे बीचसे उन्हे छीन लिया। हमारी भगवानसे प्रार्थना है कि उनके आदर्श इस राष्ट्रका पथ-प्रदर्शन करते रहें।

० ० ०

महात्मा गाधीका निधन सामान्यतः विश्वकी और विशेषतः भारतकी अपूरणीय क्षति है। वर्तमान संकटके समय देशको पथ-प्रदर्शन करनेके लिए उनकी सबसे अधिक आवश्यकता थी। इस निकृष्ट हिंसक हत्यारेने मानव जातिकी सबसे बडी हानि की है। उसका यह कलुषित आचरण इतिहासका सबसे दुःखपूर्ण पृष्ठ सदैव बना रहेगा। ईश्वरसे प्रार्थना है कि अब भी यह देश महात्माजीके चरण-चिह्नोंपर चलता हुआ उनके सत्य, प्रेम और एकताके सिद्धातका अनुसरण करे और उनके जीवनके आदर्शसे धर्मका उचित और मानवीय तत्व समझे।

❀

माननीय श्रीकृष्णदत्त पालीवाल

[सूचना एवं अर्थ-मन्त्री युक्तप्रान्त]

हिन्दू-मुस्लिम एकताके लिए गाधीजी शूलीपर चढ़े। साम्प्रदायिक एकताके उनके पवित्र संदेशको हमे पूरा करना या उसके लिए मरना है। शहीद गाधी महात्मा गाधीसे सौगुना शक्तिशाली है। साम्प्रदायिक अधिनायकवादका सामना करनेमे उनकी दैवी-शक्ति हमारी सहायता करे।

० ० ०

महात्माजी राष्ट्रके पिता थे और ससारके उद्धारक थे। गाधीजीने देशकी जनतामे चेतना उत्पन्न की। उनकी राष्ट्रीयतासे अन्तर्राष्ट्रीयताका पथ प्रशस्त हुआ। मुसलमान गांधीजीको अपना शत्रु समझते थे, पर मुसलमानोंकी रक्षाके

लिए गांधीजीने अपना महाबलिदान कर दिया, जैसा कोई मुसलमान भी नहीं कर सकता। कुछ हिन्दुओंने परिगणित जातियोको हिंदू-समाजसे बाहर जानेसे बचाया है, पर गांधीजीने अपने जीवनकी बाजी लगाकर परिगणित जातियोका वर्ग पृथक करनेकी अंग्रेजी कूटनीति ही विफल कर दी। गांधीजीने देशको बलवान बनानेके लिए राजनीतिक एवं सामाजिक क्रांतियाँ की। इसके अतिरिक्त उन्होने आर्थिक जनतंत्र स्थापित करनेका प्रयत्न किया। मार्क्सने भी साम्यवादके सिद्धातो द्वारा जनताकी दरिद्रता दूर करनेकी चेष्टा की, पर यह सत्य है कि गाधीजी द्वारा निर्दिष्ट मार्गपर चलनेसे ही समाजमे सच्ची समता प्राप्त हो सकती है।

माननीय निसार अहमद शेरवानी

[कृषि एव ग्राम-सुधार मन्त्री : युक्तप्रान्त]

जिस व्यक्तिके हृदयमें सत्यके प्रति तनिक भी आस्था होगी, उसे अवश्यमेव यह अनुभूति हुई होगी कि सम्प्रदायवादियों द्वारा तथा उनकी राजनीति द्वारा फैलाये गये विषके विरुद्ध सघर्ष करते हुए बापूने अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया। हमे आज प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि हम बापूके उज्ज्वल आदर्शोंपर चलनेका सतत प्रयास करे, जिससे उनकी महान आत्मा शान्तिके साथ विश्राम करे। भारतीय इतिहासको अपने जीवनमे इतनी बडी विपत्तिका सामना कभी नहीं करना पड़ा था। हमारे इस कुकृत्यने हमे पतनके भयकर गर्त्तमे ढकेल दिया है।

माननीय हुकुम सिह

[न्याय एव माल मत्री . युक्तप्रान्त]

वह महान व्यक्ति हमारे देशका ही नहीं, समस्त विश्वका अनमोल रत्न था। आज उसे खोकर हम निर्धन हो गये है। भारत तो सदैव उनका आभार मानेगा, क्योकि उन्होने ही इसे प्राचीन लुप्त गौरव और स्वतत्रता प्रदान की।

माननीय लालबहादुर शास्त्री

[मत्री पुलिस-विभाग युक्तप्रान्त]

सबसे बड़ा पाप कर डाला गया। विश्वके न्यायालयके सामने भारतका मस्तक इसलिए लज्जासे झुक गया कि उसीके एक देशवासीने अपने देशके ही नहीं वरन समस्त विश्वके सर्वश्रेष्ठ महामानवकी हत्या कर डाली। शान्तिके अग्रदूतसे आज विश्व वचित हो गया। शान्तिके लिए वे जीते रहे और उसीके लिए उनका अत हुआ। हमारी कामना है कि इस संकटपूर्ण कालमे उनका आत्म-बलिदान हमारे हृदयोमे शाति और साम्प्रदायिक एकताके परिपालनका भाव जागरित करे।

❀

माननीय आत्माराम गोविन्द खेर

[स्वास्थ्यतथा स्वायत्त शासन-मन्त्री युक्तप्रान्त]

महात्माजीके निधनसे आज सारा विश्व दुःखी है। पीड़ित संसार अमानुषिकताकी अग्निमे तडफड़ाता हुआ पूज्य बापूकी ओर टकटकी लगाये हुए मार्गप्रदर्शनकी याचना कर रहा था। उनका एक-एक शब्द विश्वके दलित राष्ट्रोको, समाजोंको तथा व्यक्तियोको ढाढ़स देता था। भारतके दलितोंके तो बापू साक्षात् मसीहा थे। उनके सत्य, अहिसा, प्रेम और विश्व-बन्धुत्वके अटल सिद्धातोंने सारे विश्वमे दलितोंको सहारा दिया है। भारतवर्षके हरिजनोंका तो बड़ा ही उपकार हुआ है। उनकी सर्वांगीण सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक उन्नति करनेका कार्यक्रम महात्माजीके पूरे जीवनका महत्वपूर्ण कार्य रहा है।

महात्मा गाधीजीका जीवन ही दुनियाँके लिए सदेश था। उनकी कार्य-शैलीसे स्पष्ट है कि उनका मुख्य जीवनोद्देश्य संसारके दुःखी, दरिद्र, दलित वर्ग तथा कुचले हुए देशोंको दुःखोंसे छुडाना था। इसी कारण उन्होंने हिन्दुस्तानमे दलित वर्गोंकी उन्नति तथा उन्हे समाजमे बराबरीका स्थान प्राप्त करानेका कार्यक्रम अपने सभी कार्योंका प्रमुख अग बनाया था। उन्होंने अपने देशको अपना कार्यक्षेत्र बनाया, यह स्वाभाविक ही था। यहाँकी पतनावस्थासे वह विह्वल हो गये और यहाँकी सामाजिक व्यवस्थाको, जिनके कारण दलित वर्ग सदियोंसे कुचला जा रहा था, वह हमारे राजनीतिक पतनके मुख्य कारणोमे समझते थे। हमारा देश अगरेजी साम्राज्यकी गुलामीसे दुःखी था और दलित वर्ग गुलामोंका

गुलाम था। गुलामीके विरुद्ध लड़नेवाला समाज अपने ही बीच अपने ही समाजके एक अंगको दलित तथा अस्पृश्य बनाकर रखे तो ऐसी हालतमें गुलामीसे देशका छुटकारा कैसे सम्भव हो सकता है, यह सत्य उन्होने हमारे देशवासियोको सिखाया। उन्होंने राष्ट्रीय कांग्रेसको सचमुच राष्ट्रीय बनानेकी योजना तैयार की। इस ओर उन्हे हमारी सामाजिक दुरव्यवस्थाका उपचार सोचना पडा। वह जानते थे कि ऊँच-नीच तथा छूआछूतके दानवने समाजको खोखला बना दिया है। यह सामाजिक रोग जहाँ उनके सिद्धातोंको चुनौती दे रहा था वहाँ इसका अस्तित्व भारत जैसे प्राचीन गौरवशील देशके लिए कलक था।

माननीय चन्द्रभान गुप्त

[खाद्य तथा पूर्ति-मन्त्री युक्तप्रान्त]

विश्व-शान्तिके लिए महात्माजी प्राचीन भारतके शान्ति-सदेशका पुनः प्रवर्त्तन करना चाहते थे। कुछ लोगोकी रायमे उनका यह सिद्धांत अव्यावहारिक था। पर जिस महापुरुषने भारतको स्वतंत्रता दिलायी, उसका सिद्धात अव्यावहारिक कैसे हो सकता है? मृत्युके उपरांत गांधीजीकी शक्ति बढ गयी है। एकता गांधीजीका सदेश था। अतः हम लोगोका कर्त्तव्य है कि हम विभिन्न सम्प्रदायोमे एकता स्थापित करे और भारतकी अतीत विभूतिको पुनः वापस लाये।

गाधीजीकी पुण्य-स्मृति सारे विश्वमे युग-युगातर तक जीवित रहेगी। उन्होंने न केवल भारतवासियोको उनकी शक्तिकी चेतनता और स्वतन्त्रताकी गौरव-पूर्ण कामना प्रदान की अपितु समस्त ससारके हितके लिए सत्य, अहिंसा और प्रेमके उस अनादि सदेशको पुनर्जीवित किया, जिसको मानव जातिने तिरस्कृत कर रखा था। वह हिमालयके समान उच्च और महान तथा गगाके समान निर्मल और पवित्र थे। वह शान्तिके अग्रदूत थे। उनके आत्म-निग्रह, आत्म-सयम और आत्म-विश्वासका उदाहरण इतिहासमे नहीं मिलता। उनके संकल्पकी दृढता अद्वितीय थी। उनकी मानसिक-शक्ति, नैतिकता और आध्यात्मिक चेतनासे सभ्यताके विकासमे सहायता पहुँची है। यद्यपि हमने आज अपनी वह अमूल्य निधि खो दी है, परन्तु उनका त्याग और बलिदान, साहस और उत्साह मानव जातिको अनत कालतक कर्तव्यपथसे विचलित न होनेके लिए प्रेरणा प्रदान करता रहेगा और आधुनिक जगतमे नयी क्रान्तिकी ओर हमे अग्रसर करेगा।

इस देशका पिछले तीस वर्षोमे पथ-प्रदर्शन करके गांधीजीने जो सेवाएँकी है वह इतिहासमे अमर रहेगी। इस महान् क्रान्तिको पूर्ण करनेका उत्तरदायित्व

अब भारतीय जनतापर आ पड़ा है। इतिहासमे यह प्रथम अवसर नहीं है कि प्रतिक्रियावादी शक्तियॉ रूढिवादितामे पड़ी रहकर समयानुकूल परिवर्तनकी उपेक्षा करे, अपनी इच्छाके विरुद्ध क्रान्तिको आगे वढते देखकर चकित तथा भयभीत हो और अतमे निराश होकर उस उपायका प्रयोग करे जो हिन्दू-राष्ट्रके नामपर प्रतिक्रियावादके एक प्रतिनिधिने गाधीजीके साथ किया। उन्होंने नहीं समझा कि ऐसा करनेसे क्रान्तिको वल तथा स्फूर्ति मिलेगी और स्वय उनकी शक्ति क्षीण होगी। मुझे पूर्ण आशा है कि इन प्रतिक्रियावादी शक्तियोंका अव स्वय ही विनाश होगा और इस अभागे देशका अनैक्य, जो लक्ष्यतक पहुँचनेमे सवसे अधिक वाधक था, मार्गको अधिक समय तक न रोक सकेगा। गाधीजीके अपूर्व अन्तिम वलिदानसे उनका नश्वर शरीर अब ससारमे नहीं रहा, परन्तु उनका क्रान्तिकारी संदेश अमर हो गया। वह हमे कठिनाइयोंमे सदैव दीपककी भॉति प्रकाश देता रहेगा और उस कामके पूरा करनेमे सहायता देगा जिसे पूरा पूरा करके ही यह देश पीडित ससारका नेतृत्व कर सकेगा तथा अपने प्राचीन गौरवको फिरसे प्राप्त करनेमे समर्थ होगा। उस लोकका गाधी जीवित गांधीसे अधिक शक्तिशाली है। क्रान्तिकारी गाधी चिरजीवी हो।

माननीय केशवदेव मालवीय

[विकास एव उद्योग-मत्री युक्तप्रान्त]

गाधीजीने सारे जीवनमें हमे यही बताया और स्वयं काम करके यह दिखाया कि छोटे-छोटे कामोंमे देशकी समृद्धि है और यदि हम इन छोटे कामोके करनेमे गर्व नहीं करते तो हम हर मानीमे ओछे है, तुच्छ है और ससारमे रहने योग्य नही है।

मै अपने देशके नवयुवकोसे यह कह देना चाहता हूँ कि यदि तुम्हे अपने देश तथा जातिका मान रखना है और साथ ही साथ दूसरे देशोंके वरावर अपने देशको सुदृढ वनाना है तो तुम गांधीजीके निधनके वाद उनके वताये हुए वही काम करना सीखो जो गाधीजी पिछले ३०-४० वर्षोंसे हमसे और तुमसे करनेको कहते आये है। यानी जो काम हरिजनोंके लिए हमने अलग कर रखा था, जिस कामको राजगीरोंकी वपौती हम समझे हुए थे, उन्हें करनेमे हमे उतना ही अभिमान करना चाहिये जितना दफ्तरोंमे वैठकर लिखापढी करने या पढने-लिखनेमे अथवा ड्राइग रूमको सुसज्जित करनेमे हम किया करते हैं। आज देशके आर्थिक गठनके लिए ऐसा विचार जरूरी है। इसके लिए कानून

बनाना पड़े तो भी कोई हर्ज नही। पर कानूनसे कभी किसी देशके नवयुवक अपने समाजकी रचना नहीं करते। शिक्षा और बड़ोके आदेश ही उन्हे सच्चा मार्ग दिखाते है। आज हमारे और तुम्हारे लिए जरूरी हो गया है कि हम गरींबो और अपढ कहे जानेवाले लोगोंके कधेसे कधा सटाकर श्रमिककी मानमर्यादाको ऊँचा करे और उन श्रमिकोका उतना ही आदर करे जितना आज हम बड़े बड़े इजीनियरो, केमिस्टो या वकीलोंका किया करते है। याद रखो, हमारे और तुम्हारे ऐसे सवर्ण जातिके बाबू लोग यदि इन कामोको नहीं करते तो अपने देशका उत्थान नहीं कर सकते। ऊँच और नीचका भेद रखकर या मजदूरी करने वालोंको नीच समझकर आजतक कोई देश नही पनपा। तुम भी नहीं पनप सकते। जिस दृष्टिसे चाहो विचार कर लो, तुम्हारे बापूकी यही शिक्षा हिमाचलकी तरह अचल है और हमारे देशका उद्धार करनेके लिए अनमोल है। इस पथपर चलनेके लिए अपनेमे शक्ति पैदा करो। गांधीजीके रचनात्मक कार्यका सिद्धात ऐसा अनमोल रतन है जिसका मूल्य सैकड़ो कोहेनूर हीरोंसे भी नहीं आँका जा सकता है।

माननीय गिरधारी लाल

[मत्री आबकारी एव जेल विभाग युक्तप्रांत]

महात्मा गाधीके प्रति यह देश सदैव ऋणी रहेगा। उन्होने इस देशको, इस देशके शोषितों, पीड़ितो और उपेक्षितोंको ऊँचा उठाया, मान और सम्मान दिया। हम उनके बताये हुए मार्गपर चलकर ही उनके प्रति अपनी सच्ची श्रद्धाजलि अर्पित कर सकेगे।

सेठ दामोदर स्वरूप

[अध्यक्ष सयुक्त प्रान्तीय काग्रेस कमेटी]

ससारमे हजारों ऐतिहासिक जीवनियाँ लिखी जायँगी फिर भी किसीकी कलममें वह शक्ति न हो सकेगी जो देशके लिए राष्ट्रपिता द्वारा किये गये सभी कार्योंका सागोपांग वर्णन कर सके। आज उनकी अनुपस्थितिमे हम अनाथ, लाचार और पतित हो गये हैं। उनके निधनसे जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति हो सकेगी,

इसमें सन्देह है। यदि उनके आदर्श हमारे हृदयोंमें जीवन तथा ज्योति पैदा कर सकें तो यह सिद्ध होगा कि महापुरुष मरनेपर भी दुनियाँका पथप्रदर्शन करते हैं।

उनकी जय हमने बहुत मनाई पर उनके आदर्शोंका पालन नहीं किया। गांधीजीने अपनी तपस्यासे देशको ऊँचा उठाया। भविष्यमें भी अगर हम गांधीजीके बताये मार्गका अनुसरण करेंगे तो इतना कहा जा सकता है कि हम उनको जीवनमें संतुष्ट नहीं कर सके, पर शायद उनकी आत्माको संतुष्ट कर सकेंगे।

❀

पंडित बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

[प्रान्तके तेजस्वी नेता और साहित्यकार]

मुझसे कहा गया है कि मैं एक लेखक और कविके रूपमें महात्माजीकी वन्दना करूँ। वास्तवमें मेरे जैसे जनके लिए महात्मा गांधीको खण्ड खण्ड करके देख सकना संभव नहीं है। मैं उन लक्षावधि जनोंमेंसे एक हूँ जिनके ऊपर गांधीजीका प्रभाव सर्वरूपसे सब दिशाओंसे पड़ा है और इस कारण मैं यदि गांधीको केवल एक लेखक या एक साहित्य-निर्माताके रूपमें देखनेका प्रयास करूँगा तो मुझे ऐसा लगेगा जैसे मैं गांधीजीको ठीक ठीक देख नहीं रहा हूँ और न उन्हें समझनेका प्रयास कर रहा हूँ। एक उदाहरण यदि मैं आपके सामने रखूँ तो आपको मेरी बात स्पष्ट हो जायगी। गीताको लीजिये। उस महान ग्रन्थकी भाषा आप देखिये। आप गीताकारको साहित्यकार कहते हुए कदाचित संकोच करेंगे किन्तु यदि आप स्वर्गीय पुण्यश्लोक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ऐसे महान विद्वानके मतको देखेंगे तो आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि उन्होंने गीताकारके संबंधमें कहा है कि वे एक अद्भुत साहित्यिक थे क्योंकि उन्होंने जीवनमें ऊँचेसे ऊँचा तत्व सरलसे सरल भाषामें व्यक्त करनेका अद्भुत प्रयास किया है। गांधीजीके संबंधमें भी यही बात कही जा सकती है। जीवनके गहरेसे गहरे तत्वोंको उन्होंने भी सरलतापूर्वक जिस प्रसादगुणमयी भाषामें व्यक्त किया है उसे देखकर आश्चर्य होता है। आपको कदाचित् ज्ञात ही है कि उन दिनों हमारे देशमें इस प्रश्नकी अत्यधिक चर्चा थी कि ईसाईयोंको भारतवर्षमें लोगोंको ईसाई बनानेका काम करना चाहिये या नहीं। हमारे गांधीजी महाराज इसके विरुद्ध थे। खुद ईसाई लोग उनसे वार्तालाप करनेके लिए आये। इस समय उन्होंने जो एक बात कही वह आप देखें—कितनी बड़ी बात थी। उन्होंने कहा—'भाई तुम ईसाई धर्मका प्रचार करते हो न।' तो वे बोले—'हाँ'।

गांधीजीने कहा—'जो गुलाबका फूल है वह छतपर चढकर इस बातकी घोषणा नही करता है कि लोगों मुझे सूँघो। मै गुलाबका फूल हूँ, आओ भाई। उसकी तो आतरिक सुगंध ही ऐसी होती है कि भौरे भी आ जाते है और फूलके लोभी भी उसके पास पहुँच जाते है। अतः यदि तुम्हारा जीवन इसानियतसे सुगधित हो जाय तो लोग अपने आप तुम्हारे पास आवेंगे। लोगोको धर्म-परिवर्तित करनेकी, उनको ईसाई बनानेकी जो प्रक्रिया तुम करते हो उससे क्या लाभ।' यह ऐसी बात उन्होंने कही जिसे सुनकर सब लोग दग रह गये और किसीका साहस नहीं पड़ा कि बहस करे। जितने महापुरुप, जितने युगावतार पुरुष होते है, जितने सत पुरुष होते है, सब ऊँचे कोटिके साहित्यकार होते है। कोई उपन्यास लिख लेना या कविता कर लेना ही उच्च कोटिकी साहित्य-रचना नही है। उच्च कोटिके साहित्यकार तो वे ही होते है। प्रभु ईसाको देखिये, उनकी नीतिकथाएँ देखिये। उनकी प्रतियोगितामे, उनके मुकाबिलेमे, क्या विश्व-साहित्यमे कोई कहानी आपको मिल सकती है? हाँ, टालस्टाय अवश्य कुछ समान होते है नीतिकथाओंमे. अपनी कहानियोंमे। किन्तु भगवान ईसा-मसीहके मुखसे जो कहानियाँ उद्घोषित हुई है, वह तो इस पृथ्वीके साहित्यकी अमर निशानी है। इस प्रकार महात्मा गाधीके एक एक वाक्य अमर रहेंगे। गायके सबंधमें उन्होंने एक बार कहा—'गाय करुणाका काव्य है।' मै आपसे पूछना चाहता हूँ कि क्या एक भी साहित्यकार ऐसा उत्पन्न हुआ है जिसने गायको काव्य कहा हो, काव्यकी धारा लिखा हो। आप तुलना कीजिये, करुणाकी काव्य-धारा और उसके दुग्धकी धारा!! फिर कहते है—उसकी आँखोकी ओर मेरी दृष्टिसे देखो। तुमको समूची करुणा उसकी आँखमे एकत्र मिलेगी।' जिसने भी गायको देखा है वह समझता है कि कितनी करुण आँखे होती है उसकी। भला बताइये, जो आदमी इस रूपमे वस्तु-स्थितिके दर्शन कर सकता है वह कितना महान साहित्यकार है। और साहित्यकी मै क्या कहूँ। उन्होंने तो गुजराती साहित्यको प्रायः सात-आठ सौ नये-नये शब्द दिये। गुजरातीको, हमारे देशकी भाषाको, हमारे देशके विचारको, हमारे देशकी शैलीको जो उन्होंने एक नयी दिशा सुझायी है वह ऐसी है जिसके लिए महानसे महान साहित्यकार भी गौरवका अनुभव कर सकता है। अतः मै गाधीजीको एक बहुत ऊँची श्रेणीका साहित्यकार-महारथी मानता हूँ और इस नाते भी उनकी पुण्य-स्मृतिमे अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

डाक्टर अमरनाथ झा

[कुलपति काशी हिन्दू विश्वविद्यालय]

महात्माजीका पार्थिव शरीर अब नहीं है। किन्तु उनकी आत्मा सदैव अमर रहेगी। उनका शोकपूर्ण अन्त हमारे हृदयमें भय और आक्रोशकी भावना उत्पन्न करेगा, पर इस भीषण संकटके समय प्रेम, दया, उदारता और क्षमाकी भावना हममें जागे, यही हमारी प्रार्थना है। ईश्वर करे, इस दुर्घटनासे समस्त देशमें सद्भावना उत्पन्न हो। देशके करोड़ों नर-नारियोंके लिए यह व्यक्तिगत और महत्वपूर्ण क्षति है। इतना ही नहीं, यह अन्तर्राष्ट्रीय क्षति भी है। भगवान करे, उनका लक्ष्य पूर्ण और सफल हो।

डाक्टर ताराचन्द

[कुलपति . प्रयाग विश्वविद्यालय]

महात्मा गाधीका निधन उनका पुनर्जन्म है। अपने ही लोगों द्वारा उन्होंने वीर गति प्राप्त की और अब वह सब युगोंके महत्तम व्यक्तियोंमे श्रेष्ठ हो गये है। अपने पुनीत आदर्शोंके लिए महात्माजीने अपना सब कुछ निछावर कर दिया था और जीवनके अततक निर्भीकतासे उन्होंने अपने कर्त्तव्यका निर्वाह किया। गांधीजी मर नहीं सकते। जिन आदर्शोंके लिए उनका जीवन था, वे अमर हैं। सत्य और अहिंसाके लिए उन्होंने आत्म-बलिदान किया। उनके हृदयमे न किसीके प्रति द्वेष था, न ईर्ष्या। वह स्नेह और प्रेमकी मूर्ति थे। उनसे मिलकर आत्मा उत्फुल्ल हो उठती थी। दुर्निवार्य कठिनाइयोंमे भी वे हँसते रहते थे। उनके पास सभी नेता विचार-विमर्श एव परामर्शके लिए जाते थे और उनका प्रभाव ऐसा था कि अधकारमे भटकनेवालोंको भी वहाँ आशाकी किरण दिखलायी पडने लगती थी।

"मेरे पास सिवा प्रेमके और कुछ नही है। उसीसे मै अपने विरोधीको अपने समीप खींचता हूँ। मनुष्य और मनुष्यमें वैरकी कल्पना भी मै नही कर सकता। मै इसी आशामें रहता हूँ कि इस जन्ममें नही तो दूसरे जन्ममें मै अपने प्रेमपूर्ण आलिंगनमें सारी मानवताको हृदयसे लगा सकूंगा।" —गाधीजी

डाक्टर नारायणप्रसाद अष्ठाना

[कुलपति आगरा विश्वविद्यालय]

इस सकट कालमे महात्माजीकी मृत्युसे अपूरणीय क्षति हुई है। इस समय उनकी बड़ी आवश्यकता थी। महात्माजीने अपने शान्तिमय प्रभावको अमर कर दिया है।

❀

महापंडित राहुल सांकृत्यायन

[अध्यक्ष . अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन]

आजसे पहले भारतमे मतभेदके कारण कहीं ऐसी कायरतापूर्ण हत्या नहीं की गयी थी। बुद्धने कठोरसे कठोर सत्य कहा तथा समाजकी कुरीतियोंपर प्रहार किया किंतु सपूर्ण जीवनका उपयोग किया और अतमे निर्वाणको प्राप्त हुए। महावीरने अपने युगकी सामाजिक दुर्व्यवस्थाकी आलोचना की किन्तु किसीने उनपर आक्रमण नहीं किया। इस घृणित कार्यने, जिसकी तुलना हमारी परपरामे, हमारी सस्कृतिमे नहीं है, हमारे इतिहासको कलंकित कर दिया है।

महात्मा गाधीकी हत्या वहुत कायरतापूर्ण कृत्य है। उनकी हत्या करनेमें कोई कठिनाई नही थी। वह तो विना किसी प्रकारकी रक्षाके लाखो प्राणियोके वीच चला करते थे। अपनी रक्षाकी कभी उन्होंने चिता नहीं की। उन्होंने अपने जीवनके प्रत्येक क्षणका पूर्ण उपयोग किया। देशकी स्वाधीनताका उनका सपना साकार हुआ। जो उनकी इच्छा थी, पूर्ण हुई। अपने जीवनका ध्येय वह पा गये। इस निकृष्ट कृत्यसे हत्यारेको मिला ही क्या?

गांधीजीकी हत्याका अपराध केवल गोडसेका नहीं है। उसके पीछे वहुतसे लोग है जिनकी कुचेष्टाओंका वर्णन हम लोग इधर सुनते रहे है। हम लोग सुन रहे थे कि यह लोग वर्तमान शासनको उलट देनेका षडयंत्र कर रहे थे। गाधीजीने, यदि वे होते तो अपने हत्यारेको क्षमा कर दिया होता किंतु राष्ट्र उसे कभी क्षमा न करेगा। यदि हम अपराधियोंको दड नहीं देते तो अपने कर्तव्यसे च्युत होगे।

गांधीजीके जीवनका प्रत्येक क्षण कर्तव्यसे पूर्ण था और उनकी मृत्यु भी निरर्थक न होगी। उनका अस्सी सालका जीर्ण शरीर वुद्धके शब्दोंमे शकटके समान

चलता था।। तभी तो उसको शाति प्राप्त होती थी किंतु इस प्रकारकी शाति महत्व-पूर्ण थी। उनकी मृत्यु उनके जीवनके समान ही महान है। गाधीजीका स्थान शताब्दियोंतक दिव्य रहेगा। गाधीजी सच्चे अर्थोंमे राष्ट्रके पिता थे। देशके जागरणमे उनका वड़ा हाथ था। भारत कभी मर नहीं सकता, गाधीजी भी कभी मर नहीं सकते। गाधीजीने हमे राह दिखायी है। उन्होंने हमे वह दीपक प्रदान किया है जिसके प्रकाशमे हम अपना पथ देख सकेगे। यदि ऐसा न होता तो गाधीजीका सारा जीवन व्यर्थ होता।

निर्वाणके समय जैसा वुद्धने कहा था, उसी प्रकार हमारे राष्ट्र-पिताने कहा—"अपने ऊपर निर्भर रहो, स्वयं अपने प्रकाश वनो।"

❀

श्री विधुभूषण मलिक

[प्रधान न्यायाधीश : उच्च न्यायालय, प्रयाग]

हम परम विपत्तिमे मिल रहे हैं। महात्माजीकी मृत्युसे केवल भारत तथा हिंदू समाजकी ही हानि नहीं हुई, समस्त मानवताकी क्षति हुई है। हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई सवका अहित हुआ है। जैसे भारतकी वैसे ही पाकिस्तानकी की भी क्षति हुई। सभी शान्तिप्रिय देशोंका अहित हुआ है। स्वतन्त्रताके द्वारमे प्रवेश करते ही हमको आश्रय देनेवाला राष्ट्र-निर्माता चला गया। यह देशके लिए भयकर विपत्ति है। युगोंसे भारत सहिष्णुताके लिए प्रसिद्ध है। यह सदाके लिए कलंक हो गया कि शान्ति एव अहिंसाके इस महर्षिका वध एक भारतीय द्वारा अनायास किया गया। वधिकको पागल कहा गया है, पर यह हमारे देशके नैतिक पतनका चिन्ह है।

महात्माजी ईश्वर-भक्त थे। उनका विश्वास था कि ईश्वरकी इच्छाके विना मेरी मृत्यु नहीं हो सकती। मुझे आशा है कि उनकी मृत्युके वाद हम उनके सत्य तथा अहिंसाके उपदेशोंको मानेंगे। महात्माजीकी दृष्टिमे सभी मनुष्य समान थे। उनकी दृष्टिमे शूद्र, ब्राह्मण तथा हिन्दू, मुसलमान सव वरावर थे। दो राष्ट्रोंका सिद्धात उन्हें मान्य नहीं था।

सहिष्णुताके इस देशमे सर्वदा असहिष्णुता व्याप्त है। उनका कहना था कि यदि पाकिस्तानमे हिन्दू और सिख उत्पीडित हुए तो उसके लिए यहाँके मुसलमानोंको दण्डित करना उचित नहीं।

हम उनके अनुयायी बने और हृदयसे समस्त द्वेष निकाल दे। उत्पीड़ितोंको यहाँके मुसलमानोके प्रति द्वेष नहीं रखना चाहिये। वे निर्दोष है। दण्डको दण्ड देना चाहिये। द्वेषसे द्वेष बढता है। विधानके अनुसार दण्ड देनेका काम न्यायालयोका है, व्यक्तियोंका नहीं। केवल विशेष अवसरोपर ही उन्हें बदला लेनेका अधिकार है। यदि हमारा जीवन शुद्ध और सेवा-भावसे पूरित हो, यदि हममे भ्रातृ-भावना हो और ईश्वरको हम पिता समझे तो गाधीजीकी मृत्यु व्यर्थ न होगी।

❀

मौलाना हफिजुल रहमान

[प्रधानमन्त्री : जमैतुल उलमा हिन्द]

महात्माजीके लिए शोक प्रकट करनेका सबसे अच्छा ढग यह है कि हम देशसे साम्प्रदायिकता दूर करे और उनके सिद्धातोको कार्यान्वित करे।

उस सबसे बड़े अभागेने, जिसने यह कुत्सित कृत्य किया, विश्व-शान्तिका चुनौती दी है। हम हिन्दुओ, मुसलमानों, सिखों और समस्त भारतवासियोंका कर्त्तव्य है कि उनके एकता और शान्तिके सदेशको जीवित रखे और निकृष्ट शक्तियोंको सदाके लिए समाप्त कर दे।

❀

बाबा राघवदास

[तेजस्वी कार्यकर्त्ता और सुप्रसिद्ध गाधीवादी]

महात्माजीकी हत्या हमारे लिए कलक है। भारतके वह भाग्य-विधायक थे। उनके त्याग और तपस्यासे ही हमे स्वराज्य मिला था। आज भारत अनाथ हो गया है। वह उन प्रातःस्मरणीय पुरुषोंमे है जिनपर सारा ससार गर्व कर सकता है। हमे आँसू बहाकर नहीं, बल्कि उनके बतलाये पथपर चलकर ही अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करनी चाहिये और यही सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

नवाब मुहम्मद सईद

[छतारीके नवाब]

भारतने आज अपनी आत्मा खो दी, इसका बड़ा भारी दुःख मुझे है।

जहीरुल हसन लारी

[विरोधी दलके नेता : युक्तप्रांतीय व्यवस्थापिका सभा]

हृदय दुःखी है और आँखे भींगी, मानवता शोकमे है । हिन्दुस्तान लज्जित है कि उसीके पुत्रके हाथोने इस कौमके पिता, सत्याग्रहके बानी, सच्चाईके पुजारी और हिन्दू मुस्लिमके दायीको हमारे दर्मियानसे उठा दिया। जिस्म तो चला गया लेकिन उनकी रूह आज भी हममे बाकी है और उनका पैगाम मुल्क और दुनियाँके सामने रोशन है। तीस वर्ष हुए, जब हमारा मुल्क गुलाम था, हमारी कौम मुर्दा हो चुकी और बस उस वक्त इस महात्माने हममे वह कूवत पैदा की जो साम्राज्यकी हुकूमतका मुकाबिला करे और आज मुल्क जो आजाद है, आज जो हम सरबुलन्द है, आज जो हम दुनियाँके सामने खड़े हो सकते है वह उसी महात्माकी कोशिशोंका नतीजा है। उन्होंने वह इखलाकी कूवत पैदा की जिस इखलाकी कूवतके बायस आज हम आजाद है। उन्होने इन्सानियतको बतलाया, साम्राज्यी कूवतोको बतलाया कि हम इखलाकी तरीकोंसे भी गुलामी खत्म कर सकते है और मुल्कको आजाद करा सकते है। महात्माने समझा कि शायद आजादीका जिस्म तो हमे हासिल हुआ लेकिन रूह हममेसे उड गयी। शहादत पानेवाला कभी मरता नहीं, वह हमेशा जिन्दा रहता है और अगर दुनियाँकी तवारीखपर हम नजर डाले तो बहुत कम ऐसे सानहे नजर आयेगे। वह एक हिन्दूके घरमे पैदा हुए, लेकिन मुसलमानकी खातिर जान दी। तवारीखमे चन्द ही ऐसी मिसाले है। हमे वह वक्त याद आता है जब सुकरातने अपने उसूलोंकी खातिर जहरका प्याला नोश किया। हमे याद आता है वह जमाना जब हजरत ईसाने दूसरोंके गुनाहोंकी खातिर अपनी कुरबानी कर दी। हमे याद आता है वह जमाना जब इमाम हुसैनने वहशियाना कूवतका मुकाबला करनेके लिए खुदको दुश्मनोके सामने पेश कर दिया। यह उसी किस्मकी एक मिसाल है जो फिर इस मुल्कने दुनियाँके सामने पेश की। इस मुल्कने महात्मा बुद्ध ऐसा फिलासफर दिया, अशोक ऐसा हुक्मरा दिया, अकबर ऐसा सुलहजू दिया, लेकिन शायद इनमेसे इतना अमीक, इतना हमगीर और इतनी कुरबानी करनेवाला कोई नहीं था जितनी महात्माकी जात थी।

❀

"मुझे नाशवान ऐहिक राज्यकी कोई अभिलाषा नहीं है। मै तो ईश्वरीय राज्यको पानेका प्रयत्न कर रहा हूँ। वही है मोक्ष। मनुष्य जातिकी सेवा करनेके लिए सतत परिश्रम करना ही मुक्ति का मार्ग है।" —गांधीजी

राजा जगन्नाथबख्श सिह

[जमींदार पार्टीके नेता : युक्तप्रातीय व्यवस्थापिका सभा]

जो दुर्घटना हुई है वह ऐसी महान है जिससे यह देश ही नही परन्तु सारा संसार शोकग्रस्त हो गया है। महात्मा गाधीका आत्मत्याग, उनकी देशसेवा, उनका दिल ऐसा था जो ससारका परिवर्तन कर सकता है और ऐसी महान आत्मा मिलनी दुर्लभ है।

ऐसी अमर आत्मावाले महात्माजी, नश्वर शरीरके नष्ट हो जानेसे भी नाशको नहीं प्राप्त हो सकते। हमको स्मरण है कि महात्मा बुद्धके भौतिक शरीरके नाश होनेपर उनके विचारोने किस प्रकार संसारमें अपना प्रकाश फैलाया। शकरस्वामीके इस शरीरके नाश होनेपर उनके ज्ञानके विचारोसे जिस प्रकार हमको शिक्षा मिली उसी प्रकार इस दुर्घटनामे भी यह शान्तिकी ज्योति दिखलायी पड़ती है। महात्माजीके प्रस्थान करनेपर यद्यपि हम बहुत दुःखी है तथापि उनके विचार दिनों-दिन फैलते जायेंगे। उनके अनुयायी और उनके विचार इसी प्रकार बढेंगे जिस प्रकार महात्मा बुद्ध और शंकरस्वामीके बढ़े है। महात्माजी अनेक महात्माओंके आदर्शोंकी सामूहिक शक्ति माने जाते है। महात्मा बुद्ध जैसे शान्तिके विचार, शकरस्वामी जैसे वेदान्ती विचार और भीष्म जैसे दृढप्रतिज्ञावाले महात्मा गांधीजी थे। ऐसे महात्माके निधनपर यद्यपि हम बहुत दुःखी है और जो धक्का हमको लगा वह इस भारतवर्षका प्रत्येक व्यक्ति अनुभव कर सकता है, पर हमे सतोष है कि उनके विचारोंसे हमे दिनो-दिन सहायता मिलेगी। उनके स्मारकसे इस देशको वही कल्याण प्राप्त होगा जो उनकी जीवित अवस्थासे इस देशको प्राप्त होता। मै इस दुःखद अवस्थामे इससे अधिक कह नहीं सकता।

ई० एम० फिलिप्स

[ईसाई नेता युक्तप्रान्तीय व्यवस्थापिका सभा]

मै दीगर अकलीयतोंकी तरफसे यह कहना चाहता हूॅ कि यह ऐसा मौका है जब आज हम लोग बड़े अफसोसके साथ हाजिर है और इस बातका इजहार करते है कि हमारे बापूजी, महात्मा गाधी, जो अब हमारे बीच नहीं है और इस घटनाके जरिये मार डाले गये है उनके देशमे न रहनेसे हमको बहुत सख्त

नुकसान हुआ। इसमे शक नहीं कि महात्मा गाधी हमारे दरम्यान ऐसी वातोंको वतलाते रहे जिनपर न सिर्फ हिन्दुस्तान ही बल्कि दूसरे देशोके तमाम लोग भी अमल करते रहे और उनसे फायदा उठाते रहे। इसमे कोई शक नहीं कि वे मसीहाके वहुत पूरे पैरो थे।

इसमे कोई शक नहीं है कि वापूजी सव कौमोको साथ लेकर चलते थे और सवको वह वाते सिखाते थे जो एक इसानको दूसरे इंसानके साथ करना चाहिये। इसमे कोई शक नहीं कि महात्माजीके पास वडीसे वड़ी वे वाते जो पिछले गुजरे हुए जमानेमे वड़े वडे कवियोंने कही है उनके अमलमे मौजूद थीं। वाइविल,भगवद्-गीता, इजील, और कुरान यह सव उनकी निहायत पसंदीदा किताबे थीं। उनके दरमियान जो विचार है उनसे वह हमे और आप सवको आगे वढना सिखाते रहे। मै आपको याद दिलाना चाहता हूॅ कि उन्होने किस तरीकेसे हमेशा ऐसी सव वातोंका संदेश आपके सामने पेश किया जो हमे और आपको सवको मिलाकर, सवको एक दूसरेसे सहयोग सिखाकर मजवूत वनाता है। उन्होने हमारे दर्मियान मुहव्वतका इतना प्रचार किया जितना मसीहने वताया और जो पहले कवियो के १३ वावमे इजीलमे दर्ज है। यह वहुत मुश्किल है कि कोई दूसरा इसान इस हदतक पहुॅच सके। मैं आपके सामने यह भी याद दिलाना चाहता हूँ कि जिस शख्सने उनके ऊपर वम फेका था, उन्होंने किस तरहसे रहम-दिलीका उससे वर्ताव किया। उनका मसीही उसूल था कि अपने दुश्मनके साथ रह-मका वर्ताव करो और उसके लिए दुआ मागों। उनको वख्श दो। उनको साथ लेकर चलो। उनका वैसा ही वसूल था जैसा हजरत ईसाने सलीवपर फर्माया था कि 'हे पिता! इनको माफ कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि हम क्या कर रहे है।' इस मसीही उसूलके सच्चे पुजारी, हमारे वापूजी, महात्मा गाधी थे। आपका वडा मसीही प्रचार यह था कि सव मुवारक रहे। हम तो यह समझते है कि वे हिन्दु-स्तानके लिए सलीवपर चढा दिये गये। न सिर्फ हिन्दुस्तानके लिए वल्कि तमाम दुनियॉको इससे सवक मिला। ओर सव अखवारवालोंने यह मसीहाकी मिसाल पेश की जिससे यह पता चलता है कि वह हजरत ईसाके कैसे सच्चे मानने-वाले थे। ओर यह भी सच है कि अगर हमारे दर्मियान उसी तरीकेसे उनकी वातो-पर अमल होता रहेगा, तो उनके वह उसूल हमारे दर्मियान कायम रहेंगे जिनके वे सच्चे पुजारी थे। काश, हमारे मुसलमान भाई इस वातको कुछ अर्सा पहले समझ गये होते तो हमारा मुल्क आज एक होता और वापूजी भी मारे न जाते। अव उनको मालूम हो गया कि वह सच्चाई पर थे और उनके लिए जान देनेको तैयार थे। महात्मा गाधीकी सच्चाईको मिस्टर जिन्ना मान लेते तो यह मुल्क वॅट कर दो न होता। हम जानते हैं कि अव हमारे मुसलमान भाइयोंपर इस वातका इतना असर है जो हमेशाके लिए उनके दर्मियान कायम रहेगा।

आप लोगोंके सामने याद दिलाना चाहता हूँ कि महात्माजीका एक पसंदीदा गीत था जो हमारे दर्मियान हमेशा पेश किया जाता था। उसका तर्जुमा यों है—

(१) जिस क्रूसपर ईसा मरा था,
उस क्रूसपर जब मैं ध्यानता हूँ,
संसारी लाभको टोटा - सा,
और जसको अपजस जानता हूँ।

(२) मत फूल जा मेरे मन निर्बुध,
इस लोकके सुख और संपतपर,
तू खीष्टके मरनकी कर सुध
और उसपर सारी आशा धर।

(३) देख उसके सिर, हाथ, पाँवके घाव,
ये कैसा दुःख और कैसा प्यार,
अनूठा है ये प्रेम-स्वभाव,
अनूप ये जगका तारनहार।

(४) जो तीनों लोक दे सकता मैं,
इस प्रेमके जोग ये होता क्यों,
हे यीसू प्रेमी आपके तईं,
मैं देह और प्रान चढाता हूँ।

महात्माजीके बारेमे जो कुछ भी कहा जाय वह थोडा है। मै आप सब लोगोसे यह दरख्वास्त करता हूँ कि हम सब लोग गाधीजीकी उन बातोंको याद करे और उसीके मुताल्लिक उनके ख्यालको सामने रखे।

❀

नवाब मुहम्मद यूसुफ

[प्रसिद्ध मुसलिम नेता]

इससे ज्यादा बदकिस्मती किसी कौम या किसी मुल्ककी क्या हो सकती है कि महात्माजी ऐसी हस्ती, जो दुनियाँमे आज रोशन है, जिसके फलसफे-जिन्दगीने आज वह काम किया है जिसकी वजहसे हम दुनियाँके बुलन्द लोगोंमे समझे जाते है, हमसे जुदा हो जाय। हम हिन्दुस्तानके लोग और हमारे फलसफे इस कदर बुलन्द है कि हम दुनियाँको रोशनी दिखाते

रहे हैं और आगे भी दिखायेंगे। गांधीजीकी तालीम, मुहब्बत, सच्चाई, रवादारी, अमन, चैन, इन्साफकी थी। गांधीजी उन उसूलोंके एक जिंदा तसवीर थे क्योंकि हर एक शख्सके दिलमें उनके लिए जगह थी। बादशाहोंने, प्राइम मिनिस्टरोंने, गरीब व अमीर सबने, दुनियाके हर कोनेसे दर्द भरे अल्फाजमें बयानात दिये और उनकी इज्जत की। हमसे ज्यादा बदकिस्मत कोई नहीं हो सकता। जब हमे उनकी सबसे ज्यादा जरूरत थी और ऐसे मुश्किल वक्तमें वह हमारे दर्मियान नहीं रहे। उन्होंने हमे आजाद कराया। हमें सही रास्तेपर चलानेकी कोशिशमे थे कि सारे हिंदोस्तानके हिन्दू-मुसलमानोंके दिलमे ऐसी मुहब्बत पैदा हो जाय जिससे बुलंदी न सिर्फ अपना मुल्क हासिल करे, बल्कि एशिया और सारी दुनिया हासिल करे।

आज वह हममे नहीं हैं। वह शहीद हो गये है। मगर बड़े लोग और फिलासफर जिनकी जिन्दगी कौमको बनाती है, मरनेके बाद मुर्दा नहीं हो जाते, बल्कि वह फिर जिन्दा हो जाते हैं। लिहाजा यह तो खुली हुई बात है कि जितना भी हम गम करे वह कम है। मगर हम अब अमल करनेको तैयार हो जावें। उनकी हिदायत, मोहब्बत, रवादारीकी बिनापर, हमको वह फेल करने चाहिये जिससे हम उनकी बुलन्दीको साबित कर सके, क्योंकि वह सिर्फ हमारी कौमके लिए नहीं थे, वह तो सारी एशियाके लिए, बल्कि सारी दुनियाके लिए थे। हमने गलतियाँ कीं, उनका नतीजा और फल हमने पाया। मगर आयन्दा कोई गुन्जाइश न रहे कि हम गलतिया करे। हम सही रास्तेपर चलकर उनकी तालीमको मद्दे नजर रखकर वह तरीका इख्त्यार करें जो गांधीजीने हमको सिखाया है। हम अपने मुल्ककी, बल्कि सारी दुनियाकी खिदमत करनेको तैयार हों। उनके उसूलोंपर, यानी इत्तहाद, हिन्दू-मुसलिम यूनिटी (इत्तहाद) पर खास तौरसे हमको चलना चाहिये। मै खुदासे दुआ करता हूँ कि हम लोगोंके कुलूबपर ऐसा असर हो कि हम सही मानोंमे उनकी तर्जुमानी कर सके और उनके बतलाये हुए रास्तेपर चले।

❀

"हमारा प्रेम हृदयगत चीज है। हमारा रास्ता तलवारका नहीं है। गालीका उत्तर हम गालीसे नहीं दे सकते, और न घूँसेका घूँसेसे। प्रेमकी सची परीक्षा तो यही है कि हम मरकर दूसरोंके अप्रेमका उत्तर दें।"

—"गाधीजी"

श्री सुन्दरलाल

[मत्री हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी]

गाधीजीसे अपने लगभग तीस बरसके साथके आधारपर मै यह कह सकता हूँ कि अगर कोई मनुष्य मैने गीताके अनुसार या योग-सूत्रोके अनुसार या मनुके दस लक्षणोंके अनुसार जीवन बितानेकी कोशिश करते हुए देखा है तो गाधीजीको। इस दृष्टिसे वे एक आदर्श पुरुष थे। इस संबंधमे उनका जीवन ऊँचेसे ऊँचे मुसलमान सूफियोंके जीवनसे मिलता था। इमाम गिजालीके अनुसार वह सच्चे सूफी और सच्चे मुसलमान थे। 'इमिटेशन आव क्राइस्ट' के लेखक कैम्पिसके अनुसार वह सच्चे ईसाई थे। उनकी जिदगी सब धर्मोंका संगम थी। वह आदर्श धर्मात्मा और सच्चे दीनदार थे। उनकी राजनीति भी इसीलिए ऊँची थी कि वह धर्मकी कसौटीपर कसकर सामने आती थी। जिस किसीके दिलमे दीन या धर्मकी प्यास हो, वह महात्मा गाधीकी जिंदगीसे अनमोल, असली सबक सीख सकता है।

❀

श्री ए० जे० फैन्थम

[प्रसिद्ध एग्लो इडियन नेता]

मै इस वक्त ऐवानके सामने आकर खड़ा हो गया हू। मेरा इरादा भी था कि उनकी तारीफ करूँ और उनके न होनेकी वजहसे अपना रज व गम जाहिर करूं। मगर जब मै यह ख्याल करता हू कि किस शख्स की तारीफ करूं और अपना रज व गम जाहिर करूं तो मेरी अक्ल हैरान हो जाती है। वह सिर्फ एक महात्मा ही नहीं थे बल्कि वह महात्माओंके महात्मा थे। वह महात्मा गाधी जी थे।

इंसानकी यह कमजोरी होती है कि जब हम लोगोंके बीच कोई आदमी होता है तब हम लोग उसे पहचानते नहीं हैं, उसकी सही-सही कद्र नही करते हैं। मै तब समझता हू कि खुदाने अपने भेजे हुए पैगम्बरको ७९ साल रखा और उसने बिल्कुल उसकी बतायी हुई बातोंपर अमल किया, पर जब उसने देखा कि इसान अब मेरी बाते नहीं मानता, या पूरी बात नहीं मानता, थोडा हिस्सा ही मानता है तब खुदाने कहा समय आ गया कि मै उसे वापस बुला लू

और अव मै खुद इसकी तारीफ करूं, क्योंकि इसने मेरी वतायी हुई तमाम वाते फैलायी।

गाधीजीने दो वातोंकी कोशिश की। एक तो उन्होंने आजादी हासिल करनेकी कोशिश की और वह १५ अगस्तको मिल गयी। यहांपर कोई आदमी नहीं होगा जो न कहे कि महात्मा गांधीजीकी वजहसे हमे आजादी मिल गयी। इस आजादीके मोकेपर सव खुश थे पर क्या वह खुश थे ? नहीं, वह खुश नही थे। व्रिटिश गवर्नमेंटको उन्होंने निकाला, क्योंकि वह हम लोगोंके ऊपर सख्ती करती थी। महात्माजीकी वजहसे हमको आजादी मिली। हम लोग असेम्वली वेचोंपर, गवर्नमेंट वेचोंपर वैठे हुए है। अगर वह चाहते तो वह भी गवर्नमेंट वेचोंपर वैठ सकते थे। लेकिन उन्होंने कोई ओहदा नहीं लिया क्योंकि वह समझते थे कि मेरी जगह यहापर नहीं है।

वह समझते थे कि हमारी जगह दुनिया भरमें है। हमारी जगह गरीव आदमियोंको ऊपर उठानेके लिए है। अगर हम भी वहीं वाते मानेगे,हम लोग भी उन्हींकी वतायी हुई वातोपर अमल करेंगे, गरीव आदमियोंको ख्यालमे रखकर जव हम कोई कायदा-कानून पास करेंगे, तभी हम उनके कामको पूरा कर सकेंगे।

मै मजहवका ईसाई हू। अगर मै यह कहू कि महात्माजी हमारे ईसा मसीहके वाद सवसे वड़े ईसाई थे तो कोई शख्स मेरा विरोध नहीं कर सकता। गाधीजी चाहते थे कि मजहवोमे एका हो। इसीलिए वह गीता, कुरान और वाइविल पढते थे। यही दिखानेके लिए वह पढते थे कि मै यह चाहता हूँ कि सव मजहव आकर एक हों। और इससे वढकर कोई वात नहीं हो सकती।

❀

वेगम ऐजाज रसूल

[नेत्री विरोधी दल : युक्तप्रान्तीय कौंसिल]

महात्मा गाधीके निधनसे मानवता शोकके सागरमे डूव गयी है। अव हम लोगोंको चाहिये कि महात्माजीके आदर्शोपर चलकर यह दिखा दे कि उनके शहीद होनेका प्रभाव हमपर क्षणिक नहीं अपितु स्थायी है।

❀

बंबई

मानननीय राजा सर महाराज सिह

[गवर्नर : बंबई प्रात]

पहले पहल मैने महात्मा गांधीको बम्बईमें सन् १९१६ के भारतीय राष्ट्रीय-कांग्रेसके अधिवेशनमें देखा था। दक्षिण अफ्रीकामे भारतीयोंके साथ होनेवाले दुर्व्यवहारके खिलाफ उन्होंने जो आन्दोलन किया था, उसके सिवा उन दिनों लोग उन्हें बहुत कम जानते थे। अतिम बार मै उनसे लगभग सात सप्ताह पहले १९ दिसम्बरको नयी दिल्लीमे मिला था। बीचके अनेक वर्षोंमे मै उनसे बहुत ही कम मिल सका। किंतु मुझे अच्छी तरह याद है कि बहुत साल नहीं बीते जब वे मेरे स्वर्गीय पिताके मकानमें शिमलेमे ठहरे थे और वहीं मेरी बहन अमृत कौरके मकानमे भी ठहर चुके है और सन् १९४५ और सन् १९४६ में मेरे भाई शमशेर सिहके यहॉ भी ठहरे हैं।

महात्मा गाधीका वह गुण, जिसका प्रभाव मेरे ऊपर अत्यधिक पड़ा, उनकी विशाल मानवता थी। सारी दुनियामे ही उनकी दिलचस्पी थी और वस्तुतः उनका दृष्टिकोण अन्तर्राष्ट्रीय था। वर्ण, धर्म, जाति आदिके भेदमे उनका विश्वास न था और उनके विचार कहीं अधिक व्यापक थे। बच्चोंसे उन्हें प्रेम था। मुझे याद है कि सन् १९२१ मे लार्ड रीडिंगसे मुलाकात करनेके बाद ही शिमलेमे मेरे पिताके मकानपर उन्होंने मेरे सबसे बड़े बेटे रणवीर सिंहको, जो उस समय छोटा ही था, किस प्रकार गोदमे उठा लिया और उसे खिलाने लगे। मुझे उनकी परिहास-प्रियताकी भी याद आती है। उन्हें हॅसनेसे प्रेम था और हॅसी-मजाकमे

वे पूरा आनंद लेते थे। इस सिलसिलेमें मुझे याद है कि सन् १९४५ में शिमलेके मकानमे जब मै अपनी गुड़ियासे अप्रत्यक्ष रूपसे बात कर रहा था, तब उन्होंने उसमे कितनी दिलचस्पी दिखायी थी।

पिछले दिसम्बरमे जब मैं उनसे मिला तब मैने देखा कि सांप्रदायिक अशातिके कारण वे बहुत ही चिंतित थे। मेरे एक प्रश्नके उत्तरमे उन्होंने कहा कि जबतक सांप्रदायिक स्थितिमे निश्चित तौरपर कुछ सुधार नहीं हो जाता, तबतक मै दिल्लीसे बाहर न जाऊँगा और इसीमे उनकी मृत्यु भी हुई। हिसा एव साम्प्रदायिकतासे उन्हे घृणा थी और हमारी सामान्य मानवतामे उनका अमिट विश्वास था।

❀

मानीय बालगंगाधर खेर

[प्रधान मत्री ' बम्बई]

आधुनिक भारत तथा विश्वका महामानव आज प्रार्थना-स्थलपर जाते समय मृत्युको प्राप्त हुआ। इस सकट-कालमे जनतासे मेरी प्रार्थना है कि वह शाति तथा सद्भावना बनाये रखे जिसके लिए गाधीजीने यह आत्माहुति की है। उन्होने भारतको स्वराज्य दिलाया और सुराज्य बनानेके लिए प्रयत्नशील थे।

गांधीजी मानवताकी आत्मा थे और मानव सर्वदा आत्माका तिरस्कार किया करता है। उनके शिष्योंका कर्त्तव्य है कि उनके अपूर्ण कार्योंको पूरा करे। यह हमारे लिए महासंकट है कि जब वह शाति, सद्भावना तथा मेल बढानेके लिए अत्यत प्रयत्नशील थे और जब उनकी अत्यत आवश्यकता थी, वह एक क्रूर ढगसे हमसे छीन लिये गये।

उनके परवर्त्तियों द्वारा उनका कार्य पूरा होना चाहिये। प्राचीन कालमे भी ऐसी घटनाएँ मिलती हैं, पर सत्कार्य सफल होते ही रहे। गाधीजी मर गये, पर वे अमर है।

° ° °

रोना इस समय व्यर्थ है। हमे महात्माजीकी शिक्षा और उनका व्यक्तित्व समझनेकी चेष्टा करनी चाहिये। एक बार गाधीजी अस्वस्थ थे। हम लोगोंको उस समय उनके पथ-प्रदर्शनकी बडी आवश्यकता थी। मैं डर गया था, क्योंकि हमारा सब कुछ नष्ट होने जा रहा था, उस समय मैने डाक्टर राधाकृष्णन्से कहा था—

'जब महात्माजी न रह जायँगे तब क्या होगा ।' राधाकृष्णन् मुस्कुराकर बोले—'गाधीजीकी मृत्यु उपवाससे अथवा किसी हत्यारेकी गोलीसे होगी ।' महात्माजी ऐसे व्यक्ति थे जिनकी वाणी, जिनके कार्य और जिनके विचार समान थे। उनके जीवनका केन्द्र सत्य था । महात्माजीके जीवनमे सत्यके सामने किसी भी वस्तुका कोई महत्त्व न था और उनका सारा जीवन सत्यका ही प्रयोग था। सारी वसुधा उनका कुटुम्ब थी । चालीस वर्षोंतक वे अपने देशवासियोकी दरिद्रता और पीड़ाको दूर करनेके लिए संघर्ष करते रहे। आइस्टीनके शब्दोंमे हम कह सकते है कि आनेवाली पीढीको यह विश्वास न होगा कि गांधीजीके समान मनुष्य भी इस धरित्रीपर उत्पन्न हुआ था। हम महात्माजीके इतने निकट थे कि उनकी महत्ता और उनके व्यक्तित्वका मूल्यांकन नहीं कर सकते है। हममे समुचित दृष्टिका अभाव था। इतिहासके प्रकाशमे ही उनके व्यक्तित्वका गौरव प्रकट हो सकेगा।

किंतु इतना तो सभी मानते है कि निर्दलित और पीडित जनताके हित-साधनमें वे सदैव निरत रहे। तीस वर्ष हुए जब उन्होने हरिजनोंको अपनी गोदमे लेकर अपनाया था, जिसका परिणाम यह हुआ कि अहमदाबादमें रहनेके लिए उन्हें घर नहीं मिला। उन्होंने मनुष्योंके हृदय और विचारोमे अपने क्रातिकारी विचारो और कार्यों द्वारा अद्भुत परिवर्त्तन कर दिखाया।

० ० ०

गाधीजी सारी मानवताकी चेतना-शक्ति थे, किंतु आश्चर्य है कि मनुष्य अपनी ही चेतना-शक्तिको बुझा देनेका प्रयत्न करता है।

महात्माजीने भारतको स्वतंत्रता प्रदान की। अब वह यही प्रयत्न कर रहे थे कि उसे अच्छी सरकार भी दे सकें।

जो लोग महात्माजीके बाद इस देशमे बच गये है, जो उनकी शिक्षाओका आदर करते हैं, उनका महान कर्तव्य है कि वे उनके अपूर्ण कार्यको पूरा करे।

महात्मा गाधी शाति और मैत्रीका प्रसार करनेमे अपनी सारी शक्तियोंका व्यय कर रहे थे। जिस समय देशको उनकी उपस्थिति और प्रकाशकी आवश्यकता थी, उसी समय इतनी निर्दयताके साथ उनके जीवनका अंत कर उन्हें हमसे छीन लिया गया।

महात्माजीसे पूर्व अन्य देशोंमे भी इसी प्रकारका कार्य करनेका अनेक महान आत्माओंने प्रयत्न किया था और वहाँ भी उनके देशवासियोंने उनकी हत्या कर दी, फिर भी उनके जीवन-लक्ष्यका अंत नहीं हुआ। उनका जलाया हुआ दीपक शताब्दियोंतक जलता रहा और उसका परिणाम हमारे सामने है।

मुझे ज्ञात है कि इस देशमे वहुत वडी संख्या ऐसे लोगोंकी है जो महात्माजीके सिद्धांतोंका घोर विरोध करते है। किंतु मै कहूँगा कि यदि वे स्वतंत्रताके प्रेमी हैं, यदि वे देश-प्रेमी है, यदि वे नहीं चाहते कि हमारी नव-पल्लवित स्वाधीनता सूखकर नष्ट हो जाय, तो मेरा उनसे अनुरोध है कि वे देशमे सुव्यवस्था, शाति और सद्भावना वनाये रखे। गाधीजी अमर है।

o o o

महात्माजीके निधनसे जो असीम क्षति पहुँची है वह किसी एक वर्ग, जाति या देशकी ही नहीं हुई है, समस्त मानवताको उससे धक्का लगा है। महात्माजी किसी देश विशेषकी ही सम्पत्ति न थे, वह सारे ससारके धन थे।

महात्माजीने ससारको जो दार्शनिक ज्ञान दिया है उसका उज्ज्वलतम अश अहिंसात्मक असहयोगकी रीति है। जो निर्णय पहले युद्ध या विना हिंसाके नहीं किये जा सकते थे, उन्हें अहिंसात्मक असहयोग द्वारा पूरा करनेकी रीति गाधीजीने वतायी। जीवनकी अतिम घड़ीतक जो वात महात्मा गाधीके मस्तिष्कमे गूँजती रही, वह थी—अहिंसा।

❀

माननीय मोरारजी देसाई

[गृह-मत्री : ववई]

राष्ट्रपिताके प्रति सर्वश्रेष्ठ श्रद्धाञ्जलि यही हो सकती है कि हम उनके द्वारा प्रदर्शित सत्य, अहिंसा और शांतिके मार्गपर चलें।

❀

माननीय वैकुठ लालूभाई मेहता

[अर्थ-मन्त्री वम्वई]

महात्माजीकी मृत्युसे हमारा हृदय शोकमग्न हो गया है। वह समस्त पीडित मानवताके उद्धारक थे और हरिजनोंका दैन्य और कष्ट दूर करनेमे उन्होंने वडा महत्त्वशाली कार्य किया। हमे आज प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि जिस ध्येयके लिए महात्माजी जिये और मरे उसे हम आगे वढावें।

भारत और उसके बाहर होनेवाले धर्मगुरुओंमे तथा गांधीजीमें यह अंतर था कि गांधीजीकी अंतरात्मा क्षण-क्षणपर उन्हें स्मरण दिलाती थी कि भूखे पेट भगवानका भजन करना अशक्य नहीं तो कठिन अवश्य है। यही कारण था और गांधीजीकी दृढ मान्यता थी कि जबतक सबका पेट नहीं भरेगा तबतक थोड़े व्यक्तियोंका ऐश-आराम भोगना मानव-जातिके प्रति द्रोह करना है। खादीका कार्य-क्रम उनकी इस विचारधाराका प्रतीक है। राष्ट्रीय वृत्तिवाली प्रजाकी खादीकी पोशाक राष्ट्रीय प्रवृत्तिमे स्वाश्रय, स्वावलंबन एवं समताके सिद्धातको प्रत्यक्ष स्वीकार करती है। ज्यों ज्यो कारखाने बढते गये, ग्रामोद्योग टूटते गये। बढती हुई वेकारी और भीषण दरिद्रता महात्माजीके मनमें सर्वदा उद्वेग उत्पन्न करती रही। और इन्हीसे बचानेके कार्यको वे दरिद्रनारायणकी सेवा मानते थे, जो आत्म-शुद्धिका एक मार्ग है। ऐसी आत्म-शुद्धि बिना अहिंसाका पालन हो नहीं सकता। अहिंसाके पालन बिना सत्य-शोध व्यर्थ है। यह विचार-परंपरा गांधीजीके अर्थशास्त्र और धर्मशास्त्रका संबंध जोड़ती है। जीवनके निकट प्रश्नोंका हल धर्मके मार्गमे लानेका प्रयोग गांधीजीके जीवनकी विशेषता है।

❀

माननीय दिनकरराव एन० देसाई

[न्याय तथा पूर्ति-मत्री : बम्बई]

यह अप्रत्याशित दुर्घटना है। भारतीय इतिहासमें सर्वाधिक शोकपूर्ण और लज्जाजनक विषय यह होगा। ऐसी विभूतिको खोकर न केवल भारत अपितु संसार भी एक प्रकारसे श्री-हीन हो गया है।

❀

माननीय गुलजारीलाल नन्दा

[श्रम-मत्री : बम्बई]

आज सारा संसार क्षुब्ध और व्यथित है। गांधीजी युगावतार थे। उन्हें पाकर भारतका मस्तक गर्व और गौरवसे ऊँचा था। हम उनके निर्दिष्ट पथपर चलकर ही उनके प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।

राष्ट्रपति
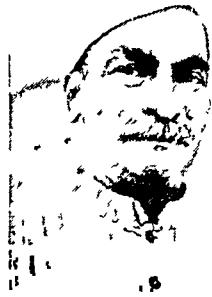
डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद

भारतके गवर्नरजनरल तथा गवर्नर

कुर्सीपर बैठे हुए: १—माननीय राजा सर महाराज सिंह (बबई), २—माननीय सर आर्चिबाल्ड नाय (मद्रास), ३—लार्ड माउण्टबेटन (गवर्नर जनरल), ४—माननीय श्री राजगोपालाचारी (पश्चिमी बगाल) ५—माननीया सरोजिनी नायडू (युक्तप्रान्त)

खडे हुए १—माननीय सर अकबर हैदरी (आसाम), २—माननीय श्री मगलदास पकवासा (मध्यप्रान्त), ३—माननीय श्री चदूलाल त्रिवेदी (पूर्वी पजाब) ४—माननीय श्री माधव श्रीहरि अणे (बिहार), ५—माननीय डाक्टर कैलाशनाथ काटजू (उडीसा)

प्रान्तीय मत्रिमण्डलोंके माननीय प्रधान-मत्री

माननीय बालगगाधर खेर (बबई)

डा० विधानचन्द्रराय (पश्चिमी बगाल)

माननीय प० गोविन्दवल्लभ पत (युक्तप्रान्त)

जम्मू
जालधर
फिल्लौर
मानसरोवर
हरद्वार
दिल्ली
रामपुर
गढमुक्तेश्वर
डिबरुगढ
मथुरा
अयोध्या
मुजफ्फरपुर
शिव सागर
पुष्कर
तेजपुर
कराची
ग्वालियर
प्रयाग
पटना
गौहाटी
सिलचर
इलाहाबाद
काशी
भागलपुर
गया
ढाका
अहमदाबाद
भुज
नोआखाली
पोरबंदर
राजकोट
इन्दौर
त्रिपुरी
राँची
बरकपुर
सूरत
कलकत्ता
वर्धा
कटक
नासिक
पुरी
बम्बई
रंगून
वारंगल
नरसिंहवाडी
बेजवाड़ा
गोकर्ण
मद्रास
मैसूर
श्रीरंगम
रामेश्वरम
कन्याकुमारी
कोलम्बो

अस्थि-प्रवाह-स्थल
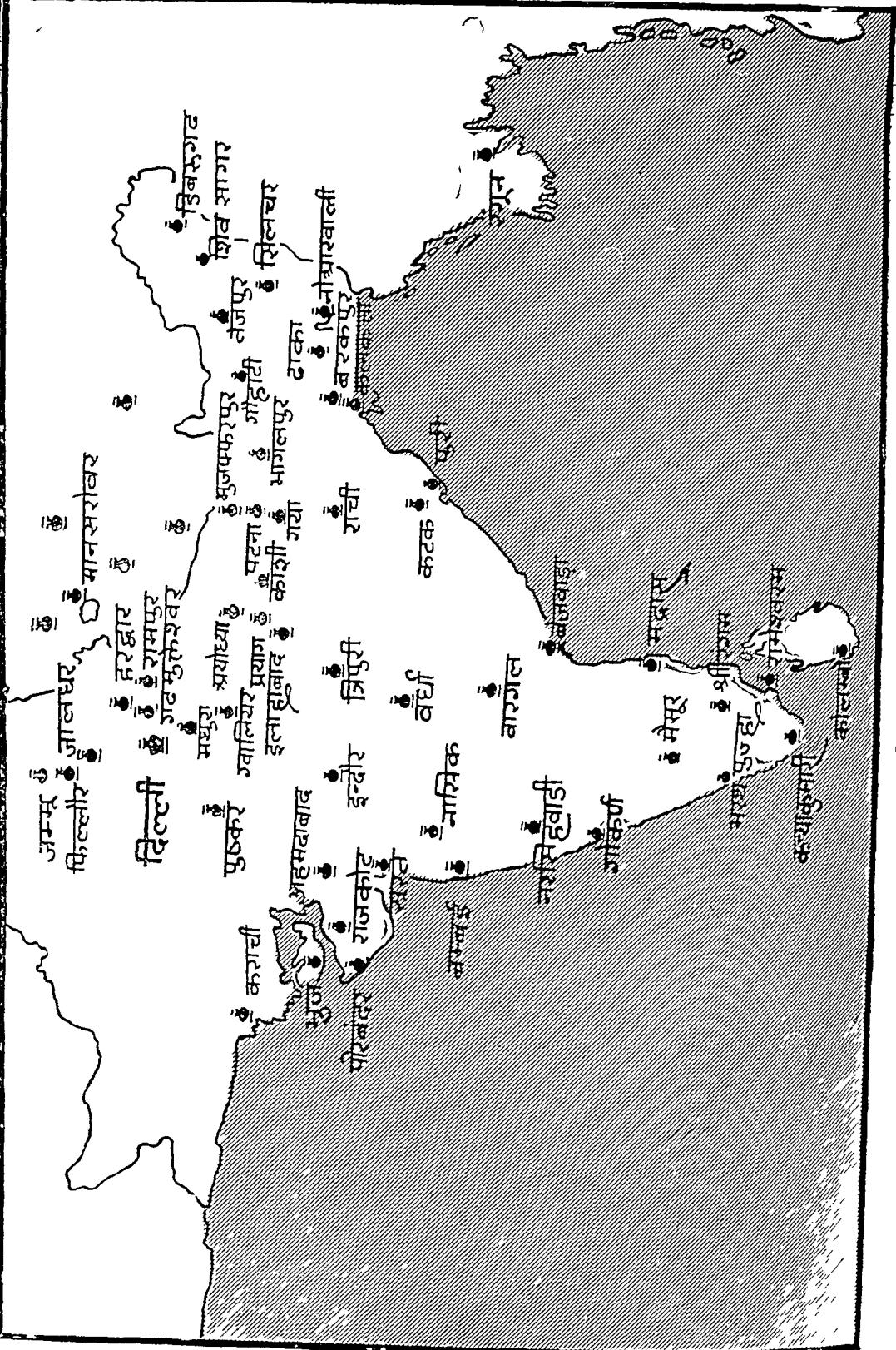
माननीय लक्ष्मण महादेव पाटिल

[आवकारी मत्री वम्बई]

महात्माजीकी इस अमानुषिक हत्याका समाचार सुनकर हृदय स्तब्ध हो गया है। आजके इस सभ्य-युगमे मानव इतना बर्बर, पैशाचिक और पाशव आचरण कर सकता है, इसकी कल्पना भी हृदयने कभी नहीं की थी। अहिंसा और प्रेमके देवदूतका क्रूर हिंसा द्वारा निधन भारतके उज्ज्वल ललाटपर अमिट कलंक है। भारतवासियोंका यह परम कर्तव्य है कि बापूके पावन उपदेशोंपर चलकर इस कलुषके प्रक्षालनका प्रयत्न करे।

❀

माननीय मनछोर साघनजी भाई देसाई

[मत्री वम्बई]

बापूके निधनसे भारत ही नहीं समस्त विश्वकी सर्वश्रेष्ठ विभूति उठ गयी। मानवताके शुभ्र आदर्शोंका चरम विकास जिस महापुरुषके जीवनमे साकार हो गया था उसका इस प्रकार एक धर्मोन्मत्त व्यक्तिकी मूढतासे उठ जाना विश्वकी सबसे बड़ी दुर्घटना है। भगवानसे हमारी प्रार्थना है कि वह अब भी भारतके साम्प्रदायिक विषसे मूर्च्छित मानवोंको ऐसी सुबुद्धि दे जिसमें वे बापूके आदर्शोंका अनुसरण करते हुए कलह-पीड़ित मानवताकी रक्षा करे।

❀

माननीय एम. पी. पाटिल

[कृषि-मत्री वम्बई]

गाधीजी अवतारी पुरुष थे। उनकी हत्या भारतीयोंके ही लिए नहीं, विश्वके प्रत्येक प्राणीके लिए अनिष्टकारी है। उनकी आत्मा हमे बल और साहस प्रदान करे।

माननीय गोविन्द धरमजी वर्तक

[स्वायत्त-शासन मत्री बम्बई]

इससे बढकर हमारे लिए और क्या भीषण कुसम्वाद हो सकता है। उन्हें खोकर आज हमने अपनी अनमोल निधि खो दी है।

❀

माननीय डाक्टर एम. डी. डी. गिलडर

[स्वास्थ्य-मत्री बम्बई]

हन्त, जो न कभी सोचा था, वह हो गया। यह महात्माजीकी हत्या नहीं मनुष्यताकी हत्या है। उन्हे खोकर आज विश्व अनाथ हो गया है।

❀

माननीय गणपति देवजी तपासे

[उद्योग-मत्री बम्बई]

इस अत्यत शोकपूर्ण मृत्युसे न केवल हरिजनोंने अपितु सारी मानवताने अपना सबसे बड़ा मित्र खो दिया। इस हृदय-विदारक दुर्घटनाका सताप शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता। बापूका जीवन और मरण दोनों ही द्वेषपर प्रेमकी अतुलनीय विजयके साक्षी है। दलितोकी सेवा ही उनका धर्म था, चाहे वे दलित किसी भी देशके क्यों न हों।

❀

श्री नूरी

[भूतपूर्व मत्री बम्बई]

महात्मा गांधीने मुसलमानोके लिए अपनेको कुर्बान कर दिया। खिलाफत आदोलनसे लेकर आखिरी दमतक उन्होंने अहिंसाका उपदेश दिया। महात्मा गाधीके दिल्लीमे रहनेसे ही दिल्लीकी स्थिति मुसलमानोंके लिए ठीक हो गयी थी।

श्री ए ए. खाँ

[विरोधी दलके नेता व्यवस्थापिका सभा, बम्बई]

इस पुण्य-आत्माकी अप्रत्याशित और जघन्य हत्यासे जो धक्का मानवताको लगा है, उसके विक्षिप्त प्रभावसे वह अभी मुक्त नहीं हो सकी है। स्वतत्रता और प्रजातंत्र, दोनो हमारे सामने ऐसे चित्र है जिनकी रूपरेखाका अनुमान केवल अनुभवके ही आधारपर हो सकता है। हमारे पास न तो वह अनुभव ही अभी है और न कोई परपरा ही है। जिन यंत्रोंसे इनकी उचित माप की जा सकती है वह हमारे पास नही है। ऐसी स्थितिमें हमे यह पूर्ण आशा थी कि महात्मा गांधी, जिन्होने प्रजातत्रकी नींव डाली है, इतने समयतक जीवित रहेंगे कि इस नींवपर ऐसा महान प्रासाद खड़ा कर सकेंगे जिसका स्थान संसारकी बड़ीसे वड़ी प्रजातंत्रीय व्यवस्थाओमें सम्मानप्रद होगा।

श्री सी. पी. ब्रैम्बल

[यूरोपीय दलके नेता : व्यवस्थापिका सभा, बम्बई]

महात्माजीने शांति-स्थापन कार्यमे बहुत उच्च सेवाएँ की हैं।

माननीय एम. सी. चागला

[विचारपति बम्बई न्यायालय]

एक महान और भयंकर विपत्ति हमपर आ पडी है। हमारे राष्ट्रपिता और हमारी स्वतंत्रताके निर्माता हमारे बीचसे उठ गये। उनका बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय एव परामर्श, उनका निर्देश, उनका सबको अपनानेवाला स्नेह अब हमे न मिल सकेगा और हम उनसे वचित रहेगे। उन्माद और घृणासे वशीभूत होकर नृशंस और भयकर आक्रमण द्वारा उनके अनमोल जीवनका अत कर दिया गया। यह दुर्भाग्य देखिये कि मनुष्योमे सबसे बड़े दयालु, सबसे बडे उदार और सर्वश्रेष्ठ सज्जनका इस प्रकार क्रूरतापूर्ण निधन हुआ।

स्वतंत्रताके लिए काफी खून बहा और अश्रुकण गिरे, कई बलिदान और आत्मसमर्पण हुए, साहस और वीरताके अनगिनत कार्य हुए, किंतु गाधीजीका कार्य सर्वोच्च था। उन्होंने हमारे भाग्यका समुचित निर्माण किया। उन्होंने देखा कि भारत एक महान साम्राज्यके अधीन छटपटा रहा है। उन्होने देखा कि भारतकी जनतामे अनैक्य है, नैतिक पतन है और है निरुत्साह एव निष्क्रियता। उन्होंने कार्यारभ किया और एक पीढीमे ही विश्वके महत्तम राष्ट्रको भारतपरसे अपनी छत्र-छाया हटा लेनेके लिए विवश किया, भारतकी जनताको भयमुक्त कर उसमे आत्म-सम्मानकी भावना भरी और यूनियन जैकके स्थानपर तिरगे झडेको साभिमान लहरा कर दिखला दिया।

उनकी महत्ता इस बातमे है कि उन्होंने हमें खोयी आत्माकी प्राप्तिके लिए प्रेरित किया, हमे अपनी महती परम्पराका ध्यान दिलाया, हममे आत्म-गौरव और स्वाभिमानकी भावना जगायी और देशभक्तिकी प्रज्ज्वलंत ज्योति पुनः प्रकाशित कर दी।

❀

डाक्टर मुकुन्द रामराव जयकर

[प्रसिद्ध विधान-शास्त्री तथा कुलपति : पूना विश्वविद्यालय]

महात्माजीकी यह जघन्य हत्या उसी हत्याके समान है जैसी ईसाकी हुई थी। इस दृष्टिसे वे दोनों भाई थे और भाईकी तरह ही शहीद हुए। गाधीजीके आदर्शोंका अनुसरण ही उनकी स्मृतिको स्थायी बनानेका सर्वोत्तम साधन है।

❀

श्री रिचार्ड डाइक अकलैण्ड

[आर्क बिशप : बम्बई]

हिन्दके प्रधान मंत्रीने प्रार्थना, त्याग और तपस्याके लिए जो अनुरोध किया है उससे हमारे ईसाई भाइयोंके हृदयस्थ सहानुभूति-पूर्ण ऐक्य भावोंकी जागर्त्ति होगी। शनिवारके दिन अन्य साधारण दिनोंकी अपेक्षा अधिक संख्यामे लोग गिरिजाघरोंमे एकत्र होंगे जो सदा ही निजी पूजाके लिए खुले रहते हैं। यह वह दिवस भी है जब सहस्रों व्यक्ति ईश्वरके सम्मुख तपस्यामे अपने अपराध स्वीकार करते हैं। अब इस अभ्यासका अनुसरण उन उच्च आदर्शोंके प्रति पूर्ण आत्मसमर्पण द्वारा होगा जिनके लिए महात्मा गाधी जीवित रहे और मरे।

श्री ए. पी. सापवाला

[मेयर : बम्बई कारपोरेशन]

गांधीजीका जीवन विलक्षण था, जो केवल भारतके लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानवताके लिए अर्पित था। उन्होंने भारतवासियोंको स्वतंत्रता-प्राप्तिके लिए सत्य और अहिंसाके शस्त्र-प्रयोगकी शिक्षा प्रदान की।

❀

श्री एस. के. पाटिल

[अध्यक्ष : बम्बई प्रांतीय कांग्रेस कमेटी]

गांधीजी शांतिकी अद्वितीय मूर्ति थे। भाग्यके निष्ठुर हाथोंने जिस परिस्थितिमें उन्हें हमारे बीचसे उठा लिया है, उससे हमारा रक्त खौल उठता है। उनका छिन जाना राष्ट्र पर क्रूर वज्रपात है। यह चोट आकस्मिक होनेके कारण और भी अधिक तीक्ष्ण हो गयी है। उनके अभावसे इस देशकी जनताकी मानसिक वृत्तियोंपरसे नियंत्रण उठ गया।

❀

श्रीमती हंसा मेहता

[अध्यक्षा : अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन]

भारतीय स्त्रियाँ अनाथ हो गयीं और उनकी अपूर्णीय क्षति हुई है। महात्माजी आध्यात्मिक नेताओंके प्रकाश थे। भारतीय नारी-समाजकी सच्ची श्रद्धाञ्जलि यह होगी कि हम महात्माजीके बतलाये हुए राज्यका निर्माण करें।

❀

श्री हुसेन भाई ए. लालजी

[प्रसिद्ध उद्योगपति तथा अध्यक्ष : शीया-सम्मेलन]

यह हत्या भारतीय राष्ट्रपर भयंकर क्रूर आघात है। इस लज्जास्पद घटनाका एक ही प्रायश्चित्त हो सकता है और वह यह कि सभी संप्रदाय मिलकर वर्तमान सांप्रदायिक कटुताको मिटा दें।

श्रीमती सोफिया वाडिया

[मन्त्रिणी पी ई एन]

भारतके तथा समस्त विश्वके करोड़ों नर-नारी ऐसे है जिनके हृदय महात्माजीके व्यक्तित्वकी स्नेहपूर्ण पवित्रता और उज्ज्वलतासे एवं उनके जीवन-संदेशके स्फूर्तिदायक उदाहरणोंसे प्रभावित रहे है। हिंसाके एक जघन्य आचरणने बापूकी भौतिक सत्ताका विलोपकर उस पवित्र सदेशके साकार अस्तित्वसे हमें विहीन कर दिया। परंतु ज्यों-ज्यों दिन बीतते जा रहें है, हमें अनुभव हो रहा है कि यद्यपि उनका शरीर नहीं रहा तथापि उनकी आत्माकी सतत गतिशील शक्ति निरंतर सक्रिय है और उनकी अमूर्त्त सत्ता अपने कार्यको आगे बढानेमें तत्पर है।

पूर्ण मनोयोगसे यही हमारा प्रयत्न होना चाहिये कि हम उनके प्रवर्तित कार्यको आगे बढावे। उनके प्रति यही सबसे बडी श्रद्धाञ्जलि होगी, क्योंकि इसी प्रकार हम उनके जीवनके लक्ष्यकी पूर्तिकी ओर बुद्धिमत्ता और निपुणताके साथ बढ सकते है।

भगवानसे हमारी प्रार्थना है कि वह हमें ऐसी शक्ति दे कि बापूके इस बलिदानसे स्फूर्ति पाकर हम सत्यका अन्वेषण करे, सत्यको प्राप्त करे तथा सत्यके साथ जीवन बितावे। भगवान करे, उनकी प्रेममयी स्मृति हमारे हृदयको ऐसी प्रेरणा प्रदान करे जिससे हम शांतिमयी शक्ति और सेवापूर्ण आनद पा सके।

श्री पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास

[प्रसिद्ध व्यवसायी तथा सामाजिक कार्यकर्त्ता बम्बई]

आज गाधीजी नहीं रहे। पर हमे महात्माजीकी उन सेवाओंका ऋण स्वीकार करना चाहिये जो उन्होंने स्वतंत्रताके प्रथम चरणमें अपने अनुपम और दृढ नेतृत्वके कालमें प्रदान की। द्वितीय महायुद्धने सबसे अधिक क्षति नैतिकताको ही पहुँचायी और उसे भारतमें पुनरुज्जीवित करनेका श्रेय महात्माजीको ही है। युग-युग तक विश्व उनको स्मरण करता रहेगा।

श्री सैयद अब्दुला बरेलवी

[प्रसिद्ध पत्रकार और राष्ट्रिय मुसलिम नेता]

यद्यपि सुबुद्धि, स्वार्थ-भावना तथा परिस्थितियोंकी अचूक पुकारने मुसलमानोंको साम्प्रदायिक राजनीतिके त्यागका निर्णय करनेपर बाध्य कर दिया है, तथापि महात्मा गाधीने मुसलमानोंके लिए जो कुछ भी किया है उसके प्रति अपनी कृतज्ञता ही इस निर्णयके लिए उपयुक्त कारण समझा जाना चाहिये।

महात्माजीने अपने जीवनका बलिदान इसलिए किया कि मुसलमान तथा अन्य अल्पसख्यक भारतमे सुरक्षित तथा सम्मानपूर्वक रह सके। उन्होंने सिद्ध कर दिया कि मैं अल्पसख्यकोंका सर्वप्रिय और सबसे बड़ा मित्र हूँ। इधर शताब्दियोंमें उन्हें ऐसा कोई मित्र नहीं मिला था। तो क्या भारतके मुसलमान इतने बेगैरत और इतने अकृतज्ञ होंगे कि अपने सर्वोच्च मित्रको धोखा देंगे और उसके पवित्रतम जीवन-कार्यपर पानी फेर देंगे ?

उनके मनमे इस बातमे तनिक भी शका नहीं है कि यद्यपि भारतमे रहने-वाले अधिकाश मुसलमानोंने पिछले दिनोंमे घोर विचार-हीनताके साथ मुस्लिम लीगका अनुसरण किया और उसके घातक द्वि-राष्ट्रीय सिद्धातको अपने सहयोगसे बलप्रदान किया, परतु अब उन्होंने भलीभॉति अनुभव कर लिया है कि इस द्वि-राष्ट्रीय भावनाका कितना घातक परिणाम हो सकता है। उससे यही निष्कर्ष निकलता है कि एक ही देशमे दो विभिन्न राष्ट्र तबतक नहीं रह सकते हैं जबतक एकके साथ विदेशी जैसा व्यवहार न किया जाय।

अखिल भारतीय काग्रेस कमेटीने महात्मा गाधीके इस प्रस्तावको स्वीकार कर लिया था कि शरणार्थियोंको भारत और पाकिस्तानमे अपने पुराने स्थानोंको वापस लौट जानेमे सहायता दी जाय।

महात्मा गाधीके अतिम अनशनके कारण भारत तथा पाकिस्तान दोनों प्रदेशोंमे वहॉके प्रत्येक सम्प्रदायके रुखमे सुदर परिवर्तन हो चला था, और अब गाधीजीके निधनसे एक अतुलनीय क्षतिका अनुभव दोनों प्रदेश कर रहे है।

इस महान शोकके कारण भारत और पाकिस्तान एक दूसरेके सन्निकट आ गये हैं। अब पाकिस्तान अवश्य महसूस करेगा कि काश्मीरके प्रति हमारी नीति और कार्यका क्या परिणाम हो रहा है। पाकिस्तान अवश्य अपनी कार-वाइयोंको इस तरह बदलेगा जिससे दोनों प्रदेशोंमे ऐसा समझौता हो सके जो उनके लिए सम्मानजनक हो और साथ ही साथ काश्मीर-निवासियोंके लिए भी सतोपप्रद सिद्ध हो सके।

भारत तथा पाकिस्तानके प्रत्येक विचारशील नर-नारीकी यह हार्दिक कामना है कि दोनों देश आपसमे शांति तथा मैत्रीका संवध वनाये रखे और इस प्रकार उन्नतिके मार्गपर चलते रहें जो दोनोंके हितमें सहायक सिद्ध हो। दोनोमेसे कोई भी इस स्थितिमें नहीं है कि उसकी राज्य-व्यवस्थाका आधार केवल धर्म ही बनाया जा सके। अपने ही स्वार्थोंकी सिद्धिके लिए यह निश्चित कर ले कि किसीकी भी राज्य-व्यवस्थाका आधार धर्म न हो सकेगा। वर्तमान संसारमे प्रत्येक प्रगतिशील राज्य अव धर्मके आधारका त्याग कर चुका है और भौतिक हितोकी बुनियादपर ही निर्मित है।

o o o

३० जनवरीको अनुमानकी सीमाओंसे भी कठोरतम कुठाराघात भारतवर्षपर हुआ जब एक हत्यारेने देशकी सर्वश्रेष्ठ संतानपर ही प्रहार किया। महात्मा गाधीके महाप्रयाणके पश्चात् देशमे जो कुछ भी हुआ है और हमने जो कुछ भी देखा या सुना है, उसकी कोई भी मिसाल भारतीय इतिहासमें नहीं मिल सकती है 'किसी भी एक व्यक्तिके निधनके पश्चात् सारे मानव-इतिहासमे इतने ससार-व्यापी विषादका अनुभव नहीं हुआ है, और न इतनी पवित्र तथा वेदनापूर्ण श्रद्धाञ्जलियाँ ही किसीको अर्पित हुई है जितनी महात्माजीको समर्पित की गयीं। उनकी मृत्युसे न केवल भारतको वरन समस्त जगतको जो क्षति पहुँची है वह अपूर्व तथा असीम है।

o o o

महात्माजीके वलिदानने हममेसे प्रत्येकको यह चुनौती दे दी है कि हम अपने पूर्ण प्रयाससे साप्रदायिक वैमनस्यके विषवृक्षको जड़से उखाड़ कर फेक दे। हम महात्माजीके प्रति प्रेम और श्रद्धाका दावा करते हैं,साथ ही हम सव उनकी हत्याके घोर पापके भी भागी हैं। इसलिए इस राष्ट्रीय पापके धव्वेको धो डालनेके लिए, उनके प्रति अपनी श्रद्धा और प्रेमकी वास्तविकता सिद्ध करनेके लिए, तथा उनकी कृतज्ञताका ऋण चुकानेके हित भी, हमारा यह अनिवार्य कर्त्तव्य हो जाता है कि हम राष्ट्रीय ऐक्य और मैत्रीके उस लक्ष्यको प्राप्त कर ले जो उनके जीवन कालमें हमे प्राप्त न हो सका।

o o o

गांधीजीका स्वर्गवास हुए आज पाँच दिन हुए। इन पाँच दिनोंमे जो कुछ हमने देखा, जो कुछ सुना और जो कुछ हुआ उसका उदाहरण इतिहासमे नहीं मिलेगा। यह पहला अवसर है कि एक व्यक्तिकी मृत्युसे दुनियाके हर कोनेमें रंज

और मातमकी एक लहर फैल गयी है और दुनियाके सब बड़े और छोटे देशोंके नेता इस व्यक्तिकी मृत्युपर दुःख प्रगट कर रहे है।

गाधीजीके लिए सारी दुनिया रोती है इसलिए कि करोड़ो व्यक्तियोंको उनसे प्रेम था और अपने दुख और कठिनाईमे वह उनको अपना सहारा समझते थे। आज संसारमे पिछली लड़ाईके कारण और आगे होनेवाली लडाईकी आशंकासे अँधेरा छा गया है। इस अँधेरेमें एक ही रोशनी थी जो गाधीजीकी रोशनी थी जो अहिसाके रास्तेसे शांति और सुखकी ओर ले जाती थी। गांधी-जीने पिछले २५ वर्षों मे इतिहासमे एक नया अध्याय लिखा और वह यह कि अहिसाकी शक्ति हिंसाकी शक्तिसे सहस्रों गुना अधिक है, और एक जाति अहिंसाकी सहायतासे भी अपनी स्वतत्रता जीत सकती है और अपनी दूसरी आकाक्षाओको पूरा कर सकती है।

यह सत्य है कि अहिंसाका प्रयोग गांधीजीने इस देशकी स्वतंत्रताके लिए किया किंतु उनका संदेश केवल भारतवर्षके लिए नही है अपितु सारे ससारके लिए है, जिसका प्रमाण विदेशोसे आयी हुई श्रद्धाञ्जलियोंसे मिलता है। गाधीजीने स्वय अनेक वार कहा है कि मेरा अभिप्राय केवल भारतवर्षको स्वतंत्र करना और इसी देशमे भाई-चारा पैदा करना नहीं है अपितु मै चाहता हूँ कि स्वतंत्र भारतके द्वारा सारे संसारके लोग आपसमे भाईकी भॉति शांति और अहिंसाका जीवन बिताये। गाधीजीकी मृत्युके ठीक एक सप्ताह पहले मुझे उनसे दिल्लीमे बात करनेका अवसर मिला। इनके पिछले व्रतका जो प्रभाव दिल्ली तथा देशके दूसरे प्रातोंपर पड़ा इससे वे बहुत प्रसन्न हुए। फ्रान्सके दो वडे नेताओंने जो उनकी प्रशंसा की थी, उसकी ओर मैने उनका ध्यान दिलाया और कहा—'गाधीजी,आपको यूरोप और अमेरिका जाना चाहिये, क्योंकि वहॉके लोग आपकी शिक्षा अपनानेके लिए तैयार है।' गांधीजीने उत्तर दिया—'हॉ मै भी जानता हूँ और मेरा विचार भी यूरोप और अमेरिका भ्रमण करनेका है किंतु इस समय मै पाकिस्तान जानेका विचार कर रहा हूँ।'

गांधीजी हम लोगोंसे इस प्रकार हिल मिल गये थे कि हममेसे हर एक उनकी मृत्युको अपनी निजी हानि समझ रहा है।

हमारे मुल्कका कोई नगर, कोई गॉव, कोई महल या कोई झोपड़ी ऐसी न थी जहॉ उनका प्रभाव न था। कोई छोटी या वड़ी समस्या ऐसी न थी जिसे उन्होंने इस प्रकार नही सुलझाया जो सारे देशको स्वीकार न हो। कोई छोटी या वड़ी ऐसी शिकायत न थी जो उन्होंने सुनी और जिसे दूर करनेकी चेष्टा नहीं की। हम गफलतकी नींदमे सो रहे थे, गांधीजीने हमे जगाया। इंडियन नेशनल कांग्रेस पहले केवल पढ़े-लिखे लोगोंका संघ था। गांधीजीने इसे क्रांतिकारी जनताका सगठन

वनाया। उन्होंने हममे नयी वीरता, निर्भयता और स्वावलंबनको जन्म दिया और सत्याग्रहका ऐसा अनमोल अस्त्र दिया जिसकी सहायतासे पच्चीस सालकी अवधिमे हमने अपने देशको स्वाधीन बना लिया।

हममेंसे बहुत लोग किसान और मजदूर है। गाधीजी स्वयं अपनेको किसान कहते थे और समझ रहे थे कि भारतवर्षकी सच्ची स्वतन्त्रता तभी हो सकती है जब किसान और मजदूरोंकी आर्थिक तथा सामाजिक अवस्था सुधरे और देशसे गरीबी, वेकारी, छूआछूत और मूर्खता दूर हो और हम सब हिन्दू-मुसलमान, सिक्ख, पारसी और ईसाई भाई-भाईकी तरह मिल-जुल कर रहें। स्वतन्त्रता-प्राप्तिके पश्चात् गांधीजीकी सबसे बड़ी शिक्षा यानी अहिंसाको हम लोग भूल गये और साम्प्रदायिकताके विपसे हमने अपना हृदय भर डाला। महात्मा गाधीने अपने जीवनके अतिम महीने इसी विपको मिटानेमे बिताये, यहाँतक कि अपनी जानतक इसके लिए दे दी।

अब हम लोगोका कर्त्तव्य है कि गाधीजीकी आत्माको प्रसन्न रखनेके लिए चेष्टा करे, हम सब हिन्दुस्तानी मिल-जुल कर भाई भाईकी तरह रहे और स्वतत्र भारतमे जनताका राज स्थापित करे जिसमे प्रत्येक धर्मके लोग आनद और शातिसे रहें। हमारे देशके सम्मुख शानदार भविष्य है, मगर शर्त यह है कि गांधीजीने हमे जो शिक्षा दी है उसके अनुसार चले।

❀

श्री अच्युत पटवर्धन

[प्रसिद्ध समाजवादी नेता]

इस महान नेताके उपयुक्त स्मारककी प्रतिष्ठा देशमे उनकी मूर्तियोंकी स्थापनासे नहीं, बल्कि उन उच्च आदर्शोंके अनुसरणमे है जिनके लिए वे जीवित रहे और अंतमे अपने प्राण भी उन्होंने विसर्जित किये।

साम्प्रदायिकताका विष, जिसके कारण पाकिस्तानका विभाजन सम्भव हुआ, अभी हमारे देशके वहुतसे लोगोके हृदयमे विद्यमान है और गांधीजी द्वारा विश्वको प्रदत्त यह महान् संदेश भी, कि अपना घर सँवारनेके लिए दूसरेका घर जलाना ठीक नहीं, हमने भुला दिया है। गाधीजीने इस राष्ट्रके रहनेवाले सभी संप्रदायो एवं जातियोंके नागरिकोंके लिए इस देशको सम्पन्न और सुरक्षित वनानेका प्रयत्न किया। उन्होंने राष्ट्रकी विभिन्न शक्तियोंको एक सूत्रमे आवद्ध किया, अनैक्य दूर किया और उन्हें राष्ट्रहितके कार्यमे नियोजित किया। क्या उनकी मृत्युसे वह सूत्र भंग हो जायगा जिसने सबको संवद्ध कर रखा है।

श्री मीनू आर. मसानी

[प्रसिद्ध भूतपूर्व समाजवादी नेता]

कुछ लोग इस विचारके थे कि देशकी प्रगतिमे गाधीजीको जो कुछ करना था, वह सब वह कर चुके थे। उनका आदर्श और उनका चर्खा प्रगति-विरोधी माना जाता था, पर थोड़े ही दिनोंमे लोगोको स्पष्ट हो गया कि राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रोंमे उनकी एक विशेष देन है। वह इस युगके सबसे बड़े समाजवादी थे और अपने समयसे बहुत आगे थे। हम लोगोंको उद्देश्यतक पहुँचाकर वह चले गये। जैसा प्रधान मंत्रीने कहा है, हम लोगोंको हिंसा, द्वेष तथा धर्मान्धता दूर करनी चाहिये। सैनिकवादका अनुसरण करनेसे देशका सर्वनाश हो जायगा। अब तो उनकी मृत्युके पश्चात् हमे बदल जाना चाहिये और उनके आदर्शोंपर चलकर उनसे शक्ति प्राप्त करनी चाहिये। गाधीजीके आदेशानुसार हमको अन्तर्मुख होना चाहिये।

श्री गंगाधरराव देशपांडे

[कर्नाटकके वयोवृद्ध कांग्रेसी नेता]

मुझे अपनेको हिन्दू कहनेमे शर्म आती है, क्योंकि एक हिन्दूने भारतके भाग्य-विधायक राष्ट्रपिता महात्मा गाधीपर जघन्य आक्रमण किया।

श्री साने गुरुजी

[प्रसिद्ध समाजवादी नेता और लेखक]

हमे सत्य और अहिंसाके उस सिद्धांतके ऊँचे महत्त्वपर जोर देना चाहिये, जिसके लिए गांधीजी जीवित रहे और अंतमे उन्होंने अपने प्राणोंको उत्सर्ग कर दिया।

रावसाहब पटवर्धन

[प्रसिद्ध कांग्रेस नेता]

महात्मा गांधीका अवतार-कृत्य समाप्त हुआ । गांधीजी हम लोगोंको छोड़कर चले गये । आजके भारतका निर्माता तथा युगमें क्रांति उत्पन्न करनेवाला महापुरुष इस संसारसे उठ गया । अपना परम प्रिय पूज्य राष्ट्रपिता हमें अकेला छोड़ कर चला गया ।

गांधीजीकी मृत्युसे दुःखी लाखों व्यक्तियोंके मुखसे अभागे राष्ट्रका दुःख प्रकट हो रहा है। करोडों आँखोंसे अश्रु-प्रवाह हो रहा है । सभी देशोंको एकाकीपनका अनुभव हो रहा है । गाधीजीकी मृत्युसे कितनी हानि हुई है, इसका अभी न तो अनुमान ही है और न होगा ही। गांधीजीको श्रद्धाञ्जलियाँ अर्पित की गयी, उनकी चितापर फूल चढ़ाये गये, उनकी सगमरमरकी धवल मूर्ति वनायी गयी, मदिर बनाया गया और श्रद्धासे यह सब होगा ही। किंतु इससे क्या आप गांधी-भक्त बन जायेंगे। उनके प्रति हम लोगोंने जो विश्वासघात और अपराध किया है उसे दूर करके ही हम सच्चा स्मारक बना सकते है। हमको, आपको और सारे हिन्दुस्तानके लोगोंको 'आर्य' बनानेमें ही उन्होंने प्राण गॅवाये । उनका स्मारक निर्जीव कैसे होगा, वह तो सजीव ही होना चाहिये । नया स्वतंत्र समाज ही उनका सच्चा स्मारक होगा।

श्री आर्देशिर दलाल

[वम्बइके प्रसिद्ध उद्योगपति]

महात्मा गांधीकी हत्या मानव इतिहासमे सवसे महान और निरर्थक अपराध है। उनकी मृत्यु केवल भारतपर ही नहीं वल्कि सम्पूर्ण विश्वपर एक भयकर आपत्ति हैं। उनकी मृत्युसे संसार आधुनिक युगके सवसे महान उपदेष्टासे वचित हो गया है।

❀

सर होमी मोदी

[बम्बईके प्रसिद्ध व्यापारी]

यह बहुत ही हृदय-विदारक समाचार है। इसपर विश्वास नहीं होता कि कोई इस हदतक पागल हो जायगा कि सबसे नेक व्यक्तिपर, जिसे भूमिपर देखकर स्वर्ग भी स्पर्धा करता था, हाथ उठायेगा। आज एक शक्तिशाली प्रभाव वाला व्यक्तित्व उठ गया और भारत तथा सम्पूर्ण विश्व दोनों वस्तुतः निर्धन हो गये।

❁

सर कावसजी जहाँगीर

[बम्बईके उद्योगपति]

गाधीजीको खोकर भारतने अपना सबसे महान नागरिक खो दिया। गांधीजीके महान चरित्र और कार्योंपर बहुत कुछ लिखा जा सकता है। बहुतसे लोग उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धातोंसे सहमत नहीं थे पर किसीने भी उनके दृढ विश्वासोंकी ईमानदारीमे संदेह नहीं किया। वस्तुतः वे गरीबों, अभाव-ग्रस्तों और पददलितोंके सबसे बड़े रक्षक थे और अंतमे न्यायपूर्ण सिद्धान्तोंमे अपनी पूर्ण आस्था प्रकट करनेके लिए उन्होंने अपना जीवन ही उत्सर्ग कर दिया।

लेडी थाकरसी

[प्रसिद्ध समाजसेविका तथा पूनामें गांधीजीकी आतिथेया]

कोई भी व्यक्ति या जाति अपने आत्मबलसे ही उन्नति कर सकती है। हिन्दू धर्मने जिन दोनोंको धर्म-ज्ञानके लिए अयोग्य बतलाया है, उन दोनों-स्त्रियों और शूद्रों-की बापूने सबसे अधिक सेवा की है। गाधीजीके उपदेशसे स्त्री-समाजने अवमानता और अबलत्वके दुःखसे जागकर सत्ता और सामर्थ्यका अनुभव किया। बापूकी देह आज नहीं हैं पर उनकी विराट् आत्मा आज समस्त भारतमे व्याप्त हे और प्रत्येक भारतीयके हृदयमे वह अजर और अमर रहेगी। बापूने हिन्दको स्वराज्य दिलाया, पर उनके प्रेम और अहिंसाके सिद्धातको ससार भरमे फैलानेका कार्य शेप रह गया है। हमे इस कार्यको संपन्न करनेकी प्रतिज्ञा करनी चाहिये। यही हमारी उनके प्रति वास्तविक श्रद्धाजलि हो सकती है।

श्री शापूरजी बोमानजी बिलिमोरिया

[बंबईके प्रसिद्ध उद्योगपति]

महात्मा गांधीके निधनसे भारतीय राष्ट्रको जो भयंकर और अमिट क्षति पहुँची है उससे समस्त पारसी जातिका हृदय क्षुब्ध है। महात्माजीको खोकर देशने गरीब, पीड़ित तथा दलित मानवताका सर्वश्रेष्ठ रक्षक खो दिया। ईश्वर उनकी आत्माको शांति प्रदान करे।

❀

ख्वाजा गुलाम सैयदैन

[शिक्षा सलाहकार : बम्बई सरकार]

महात्मा गांधीके व्यक्तित्वके अनेक पहलू थे और हर पहलू सुंदर कटे हुए हीरेकी भाँति था, जिस ओर वह घूम जाता ज्योति जगा देता। किंतु हीरा तो बाहरके प्रकाशके सहारे चमकता है पर गांधीजीका व्यक्तित्व स्वयं प्रकाशकी धारा था जिसने हमारे राष्ट्रीय जीवनके कोने-कोनेको प्रकाशित कर दिया और नये ढंगसे, नये रूपसे अबूबिन आदमकी भाँति मनुष्यका धर्म मानव-समाजकी सेवा बताया। स्त्रियाँ रूढ़िगत शृंखलाओंमें बँधी हुई थी। उन्हें स्वतंत्र करके राष्ट्रकी सेवाके लिए साहस प्रदान किया। अछूतोको उन्होंने हरिजन बना दिया अर्थात् जिन लोगोंको छूना मनुष्य अपमान समझता था उन्हें समझाया कि वह भी अन्य प्राणियोंकी भाँति ईश्वरके प्यारे है। हमारी राजनीति जो ऊपरी और दिखावटी वस्तुओंमें उलझी थी उसके मूलकी ओर हमें आकृष्ट किया और राजनीतिक कार्यकर्ताओंको बताया कि तुम्हारा मुख्य कर्त्तव्य जनताकी सेवा और सुधार है। सुषुप्त बुद्धिवालों और पराजित मनोवृत्तिवालोंके हृदयमें स्वतंत्रताकी लगन लगायी और इसके लक्ष्यतक पहुँचानेके लिए अहिंसा और सत्याग्रहका मार्ग दिखाया अर्थात् लड़ो किंतु हाथमें शक्तिकी तलवार और बलिदानकी ढाल लो, लड़ो, किंतु हृदयमें घृणा न हो, लड़ो, किंतु स्मरण रखो कि लड़ाई अन्याय, अहिंसा, झूठ और दासताके विरोधमें है, मनुष्यके विरोधमें नहीं। क्योंकि अत्याचार करनेवालेको भी हमारी सेवा और सहानुभूतिकी आवश्यकता है। लड़ो, और यदि अहिंसा अपनी सारी शक्तिके साथ तुमपर झपटे तो वीरोंकी भाँति

गोलियाँ सीनेपर खाओ, पीठपर नहीं। गांधीजीने हमें यह सब कुछ न केवल बताया और सिखाया अपितु स्वयं करके दिखाया।

सच तो यह है कि भारतकी बीसवी शती महात्माकी शती है। जब देशके हिन्दू, मुसलमान और सिक्खोंने शिष्टता, प्रेम, सहानुभूति और आपसदारीकी सारी शिक्षा भुला दी और खूनकी होली खेलनी प्रारंभ कर दी, जब इनकी पुकारपर, जो सत्यकी पुकार थी, लोगोंने ध्यान नही दिया तब इनका सहानुभूति-पूर्ण हृदय तड़प उठा—क्या मेरा देश हिंसाके रास्तेपर चलकर नष्ट हो जायेगा? नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता। इसने हिन्दुस्तान और पाकिस्तानको इस आगसे बचानेके लिए इस अंतिम लड़ाईमें सब वस्तुएँ यहाँतक कि अपने प्राणोंकी भी बाजी लगा दी।

बम्बई असेम्बलीका प्रस्ताव

भारतीय राष्ट्रके पिता, भारतीय स्वाधीनताके जनक, प्रेम शांति तथा भ्रातृत्वके देवदूत महात्मा गांधीके निधनपर हम अपना हार्दिक शोक प्रकट करते है। उन्होंने अपना जीवन मानवताकी सेवाके लिए अर्पित कर दिया था तथा मानवताकी राजनीतिक तथा अन्य समस्याओंको सुलझानेके लिए अहिंसाके सिद्धांतका प्रतिपादन ही नहीं किया वरञ्च स्वयं उस सिद्धांतपर चलकर उसकी उपयोगिता प्रदर्शित की।

विगत तीस वर्षोंसे भारतके सार्वजनिक जीवनके अनेक क्षेत्रोंमें उनकी जो अद्वितीय देन है उसने उनको मानवजातिके उन महान उपकारियोंकी श्रेणीमे रख दिया है जो यद्यपि संसारसे उठ गये है तथापि संसारके विभिन्न भागोंमे असंख्य प्राणियोंके जीवनका निर्माण कर रहे है। ऐसे महान तथा श्रद्धेय व्यक्तिकी हत्यासे बढकर और दूसरी कौन दुर्घटना हो सकती है। यह असेम्बली मानवताके प्रति इस क्रूर तथा घृणित अपराधकी तीव्र निंदा करती है।

हम अब भी अपना शोक, रोष और हिंसाके रूपको उलटकर संतोष करना चाहते है। हमारी प्रकृतिको दूषित करनेवाले इन पापोंसे हमें सदा सावधान रहना चाहिये। इस अपूर्ण ससारमें हम राजकीय दमनका परित्याग नहीं कर सकते, पर हम लोगोंको स्वीकार करना चाहिये कि सद्भावनासे सद्भावना होती है। पापका एकातिक शसन महात्माजीकी शिक्षा द्वारा ही हो सकता है। शांति और सद्भावनाके लिए युद्ध और युद्धकी तैयारियोकी बड़ी-बड़ी बाते की जाती है, पर तेलकी आहुतिसे अग्नि शात नहीं हो सकती। क्या हम दिवंगत नेताके प्रेमके संदेशको स्मरण रखेंगे। क्या हम उनके उपदेशोंको स्मरण रखेंगे—प्रेम करना सीखो और बदलेमें प्रेम मिलेगा। अपना प्रेम बढ़ाओ, इससे प्रेम बढ़ेगा और तुम्हारी ओर आयेगा। यह ऐसी नीति है जिसे कोई विधान या तर्क बदल नहीं सकता।

० ० ०

अब कार्य समाप्त हो गया। ससार आज अपनेको खोयासा, भयकर रूपसे खोयासा, महसूस कर रहा है। गत ३० जनवरीके शामको ५ बजे बापूका प्राणपखेरू उड़ गया। नश्वर शरीर हमारे साथ रहा और चेहरेकी मुस्कराहटने कुछ समयतक लोगोंको भ्रममे रखा, पर शनिवार ३१ जनवरीको हम लोगोने अपनी धार्मिक रीतिके अनुसार अपने प्रिय नेताकी देहको यमुना-तटपर चिताकी लपटोंमें रख दिया। तब अवशेषके लिए हम सभी दौड़ पड़े।

भक्ति-भावके कारण हमे अवशेषमें बापू दिखाई पड़े। पर हमारे पूर्वजो द्वारा निर्धारित रीतिने हमे इस अवशेषको भी प्रवाहित करनेका आदेश दिया। अतः हमने बापूकी अस्थियाँ गंगामें प्रवाहित कर दीं और हम दुःखी हृदयके साथ अपनेको सर्वत्र तिरस्कृत समझ घर लौट रहे है। जिस क्षण बापू धराशायी हुए थे, प्रत्येक दिन, उसी क्षण हम अपने प्रिय गुरु,अपने अजातशत्रु, अपने सत्य-धर्म पराक्रमके बारेमे सोचे, जो अनगिनत नर-नारियोंके पथ-प्रदर्शक थे और जिन्होंने निरंतर भय दूरकर प्रेम बढानेकी चेष्टा की।

प्रत्येक दिन शामको ५ बजे प्रत्येक भारतीय नर-नारी बापूके इंतजारमे समागत नर-नारियोंके दृश्यका स्मरण करे, उनकी मीठी आवाजकी याद करे और महात्माजी जो चाहते थे,जिसके लिए प्रतिदिन प्रार्थना करते थे,उसपर विचार करे। हमे प्रत्येक दिन ठीक इसी समय दो मिनट मौन रहकर भारत भरमे सद्भावना स्थापित करनेकी प्रार्थना करनी चाहिये। अब भी शोक क्रोध और हिंसामे आश्रय पाना चाहता है। इस पापसे हमे सतर्क रहना पड़ेगा। इस संसारमें दमन और सरकारी नियंत्रणसे छुटकारा नहीं मिल सकता। पर हमे स्पष्ट रूपसे अनुभव कर लेना

चाहिये कि सद्भावके द्वारा ही सद्भाव प्राप्त किया जा सकता है। हम अपने प्रिय नेताके उपदेशका अनुसरण कर बुराइयोंपर विजय पा सकते हैं। शांति और सद्भावकी चर्चा चारों ओर बहुत हो रही है, पर आगमें तेल डालकर उसे बुझाया नहीं जा सकता। हम अपने नेताके उपदेश और संदेशको स्मरण रखें। आप प्रेम करना शुरू करें तो दूसरे भी आपसे प्रेम करने लगेंगे। [अस्थि-विसर्जनके दिन

० ० ०

गांधीजीकी हत्याको चार सप्ताह बीत गये। हत्याका आज चौथा शुक्रवार है। इस राष्ट्रीय विपत्तिने भारतीय राजनीतिपर गहरा प्रभाव डाला है। सभी लोगोंमें यह इच्छा बलवती हो गयी है कि जिस हिंदू-मुस्लिम एकताकी बलिवेदीपर गांधीजीने अपनेको चढा दिया उसकी स्थापना ही उनका सर्वोत्कृष्ट स्मारक होगा।

हिंदू-मुस्लिम एकताका अर्थ है हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, सिख, पारसी आदि उन सभी जातियोंकी एकता जो आज भारतमें बसी हुई हैं। भारतके सभी वर्णों और सम्प्रदायोंका राजनीति, संस्कृति आदि समस्याओंपर पहले जो कुछ भी मत रहा हो, गांधीजीकी मृत्युके कारण वे काफी प्रभावित हुए हैं। इस जघन्य हत्याके कारण लोगोंको जो शोक और संताप हो रहा है, यदि उसने क्रियात्मक रूप धारण किया तो गांधीजीकी मृत्युका देशपर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा अपितु यह उन महान पुरुषकी, उनके न रहनेके बाद, एक गौरवपूर्ण विजय होगी। यदि महात्माजीकी आत्मा हमारे हृदयमें व्याप्त हो गयी है तो हमारा शोक मनाना व्यर्थ है। परंतु मानव-सुलभ निर्बलता प्रायः हमारे सभी सुन्दर प्रयासोंको विफल बना देती है। अतः अपना कर्त्तव्य करनेके समय हमें सचेष्ट और सतर्क रहना आवश्यक है। सद्भावना, प्रेम, सत्य, आदिका प्रचार करनेके लिए महात्माजी जिये और उसीके लिए मरे। हमें स्मरण रखना चाहिये कि इन आदर्शोंकी स्थापना केवल कुछ संस्थाओं और संघटनोंमें परिवर्तन करनेसे नहीं होगी, और न यह काम वर्तमान व्यवस्थाका उन्मूलन करनेसे ही होगा। बाह्य आवरणको सुन्दर बना देनेसे ही हमारे उद्देश्य नहीं सिद्ध हो सकते और न आतंक और न भयसे ही हम प्रेम, आदर आदि उन्नत भावोंकी सृष्टि कर सकते हैं। हमारा काम तो उसी समय पूरा हो सकता है जब हमारे हृदयमें घृणाके स्थानपर प्रेम और सद्भावनाका उदय हो। यह उद्देश्य उसी समय सिद्ध होगा जब असंतुष्ट लोग यह कार्य अपने हाथमें लें। 'सम्प्रदायवादका नाश हो' के नारे हम लोगोंका हृदय परिवर्तन नहीं कर सकते। इसका श्रेष्ठ उपाय यही है कि हम अपने कार्योंसे लोगोंका हृदय बदलें।

[२७ फरवरी, १९४८]

माननीय ईश्वरदास जालान

[अध्यक्ष : पश्चिमी बंगाल प्रांतीय व्यवस्थापिका सभा]

महात्माजीका निधन ऐसे समय हुआ जब हमें उनकी बहुत जरूरत थी। उनका व्यक्तित्व ऐसा था, जैसा मानवताके संपूर्ण इतिहासमें दुष्प्राप्य है। ऐसे नेता तो अनेक है, जिन्होंने देशका उद्धार किया है, किंतु उनमेंसे शायद ही किसीने धर्म-रक्षाकी ओर भी ध्यान दिया हो। धार्मिक नेता भी अनेक हुए पर राजनीतिसे उनका कोई संपर्क नहीं रहा। केवल महात्मा गांधीमें ही धर्म और राजनीतिका हम समन्वय देखते है। इस देशमें जो बड़े-बड़े आंदोलन हुए, उनका संचालन गांधीजीने हिंसा और असत्यपर नहीं, बल्कि सत्य, अहिंसा, सुहृदता और सद्भावनाके आधारपर ही किया। यह अनुपम वस्तु है जिसे न केवल भारतीय अपितु समस्त विश्वके लोग सदैव याद रखेंगे। उनकी शिक्षाएँ हमारे लिए ज्योति-स्तंभका काम देंगी।

❀

माननीय विधानचंद्र राय

[प्रधान मंत्री : पश्चिमी बंगाल]

कितना स्तब्धकर समाचार! अहिंसाका युवराज एक हत्यारेकी हिंसाका लक्ष्य हो गया। इससे उत्पन्न शून्यताका माप असंभव है। इस क्षतिका अनुमान कौन कर सकता है। उस प्रिय दिवंगतके सम्मानमें हमको शांति बनाये रखना चाहिये और संसारको दिखला देना चाहिये कि हम उनके सच्चे शिष्य हैं।

० ० ०

अपने देशकी स्वतंत्रता और मानवताकी स्वाधीनताके लिए उन्होंने आजीवन संघर्ष किया। उनका विश्वास था कि हिंसा और रक्तपातसे क्लांत विश्व अंतमें सत्य और अहिंसाके पथका अनुसरण करेगा। साधारण मानवोंकी दुर्बलताओं और त्रुटियोंसे उन्होंने अपना जीवन आरंभ किया। पर धीरे-धीरे जीवनकी सरल किंतु भावुक दृष्टिसे अत्यंत महत्त्वपूर्ण विचारोंपर अपनी कठोर साधनाओंको केंद्रित करते हुए अपने व्यक्तित्वको उन्होंने आमूल परिवर्त्तित कर दिया। अनेक वर्षोंसे आत्मानुशासन और आत्म-शिक्षणके पथपर चलते हुए वे

आगे ही बढते गये। इस भाँति उनकी आत्मामे मनस्तुष्टि और स्वातंत्र्यका ऐसा बल उदित हुआ जो दूसरोंको शाति और स्वाधीनता प्रदान करनेमे सदैव समुत्सुक रहा।

हमारे राष्ट्रमे जो घृणा और हिंसा आज सक्रिय हो रही हैं उनकी एक भयावह और विचारणीय सूचना महात्माजीके इस निधनसे प्रकट होती है। इन शक्तियोंपर शीघ्रसे शीघ्र नियन्त्रण करना और इन्हे विनष्ट कर देना अत्यावश्यक है। इनके प्रतिरोधमे सभी लोगोंको सहायता देनी चाहिये। अब गाधीजी नहीं रहे और न अब उनका स्थान कोई दूसरा ले सकता है। जबतक हम है हमे अपनी सारी शक्ति लगाकर महात्माजीके सदेशको पूर्ण करनेका प्रयत्न करना चाहिये। हमें सत्य और सहिष्णुताका अनुसरण करना चाहिये।

❀

डाक्टर प्रफुल्लचद्र घोष

[भूतपूर्व प्रधान मत्री : पश्चिमी बगाल]

यह कितनी लज्जाकी बात है कि भारतकी स्वतत्रता-प्राप्तिके बाद ही भारत-भाग्य-विधाता महात्मा गाधीकी हत्या एक भारतीय द्वारा हुई। भारतीय जनताके राष्ट्रीय जीवनके विभिन्न क्षेत्रोंमे गाधीजीकी जो बहुमुखी देन है, उसे हम अभी भलीभाँति या पूर्णरूपेण नहीं समझ सके हैं। सत्य और अहिंसाके देवदूत गाधीको किसी भी स्थितिमे हिंसा सह्य न थी। गाधीजीके जो भक्त और शिष्य है उन्हे हिंसाको कदापि प्रोत्साहन न देना चाहिये।

o o o

जनता महात्माजीके बताये आदर्शोंपर, बंधुता, सहिष्णुता एवं शातिपर चले। उनके मार्गपर चलना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धा है। महात्माजी ऐसे समाजकी रचना चाहते थे जिसमे जाति, धर्म तथा स्त्री-पुरुषका कोई भेद न हो और एक वर्ग दूसरेका शोषण न करे।

❀

श्री हसन शहीद सुहरावर्दी

[भूतपूर्व प्रधान-मंत्री : बंगाल]

मुझे ऐसा जान पड़ रहा है जैसे समस्त विश्वका आधार ही ध्वस्त हो गया हो। आज कौन है जो दुखियोंके घावोंपर मलहम लगायेगा। जब कभी दुःखकी घड़ीमें उनके उपदेश और उनके द्वारा पथ-प्रदर्शनके लिए हम उनके पास गये, उन्होंने कभी निराश नहीं किया।

माननीय किरणशंकर राय

[गृहमंत्री : पश्चिमी बंगाल]

हम स्तब्ध है। महान जीवनका महान अंत हुआ। स्वराज्य-प्राप्तिके पश्चात् उन्होंने उस हिंदू-मुस्लिम एकताके लिए आत्म-बलिदान कर दिया जो उनको स्वराज्यके समान ही प्रिय थी। वह इतने महान थे कि उनके लिए यथोचित शोक मनाना भी असंभव है।

माननीय नलिनीरंजन सरकार

[अर्थ-मंत्री : पश्चिमी बंगाल]

मानवमात्रसे सहानुभूति रखनेवाले इस युग के सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति महात्मा गांधी सार्वजनीन थे। गांधीजीके संदेशका मुख्य लक्ष्य यही था कि राजनीतिक स्वतंत्रता तबतक यथेष्ट नहीं है जबतक प्रत्येक साधारण व्यक्तिके जीवनमें आकांक्षाओं और सुख-सुविधाओंमे उसका रूप प्रतिबिंबित न हो जाय। वे जनताके ही थे, उसके अनन्य शुभचिंतक थे।

माननीय राय हरेन्द्रनाथ चौधुरी

[शिक्षा-मत्री · पश्चिमी वगाल]

महात्मा गाधी भारतीय सस्कृतिके सच्चे प्रतिनिधि थे और भारतीय आदर्शोंके पूर्ण अवतार थे। अहिंसा, सत्य और वन्धुत्वका चिरतन भारतीय सदेश गाधीजीकी वाणीमे पूर्ण रूपेण अभिव्यक्त हुआ है। वह अमर हैं।

माननीय नीहारेन्दु दत्त मजूमदार

[न्याय-मत्री · पश्चिमी वगाल]

ऐसा कोई भी व्यक्ति न होगा जो यह समाचार सुनकर व्यथित न हुआ हो। गाधीजी हमारे देशकी शोभा थे, विभूति थे और नेता थे। उन्हें खोकर वसुधराने अपना एक अनमोल रत्न खो दिया।

माननीय के० पी० मुखर्जी

[श्रम-मत्री : पश्चिमी वगाल]

क्या मनुष्य इतना नीच हो सकता है कि विश्वकी विभूति, मानवताके अलकार और भारतके निर्माता महात्मा गाधीकी हत्या कर डाले। यह असह्य है। इसपर विश्वास नहीं होता। गाधीजी शोषितों, पीड़ितों और निम्न वर्गके व्यक्तियोंकी सुख-सुविधाके साथ प्रत्येक व्यक्तिका हित-चिंतन करनेवाले थे। उनसे भी कोई बुरा मानकर ऐसा कुत्सित कर्म करेगा, यह अकल्पनीय है।

माननीय यादवेन्दु पंजा

[कृषि-मंत्री : पश्चिमी बंगाल]

इस संवादपर विश्वास नहीं होता। गांधीजी भारतके भाग्य-विधायक और निर्माता तो थे ही, वह विश्वभरके शुभचिंतक और मानवताके प्रेमी थे। उनकी हत्या करनेवाला नराधम ही हो सकता है।

❀

माननीय प्रफुल्लचन्द्र सेन

[मंत्री पूर्ति-विभाग : पश्चिमी बंगाल]

क्रांतिकारियोंके मूर्धन्य महात्माजीकी मृत्यु वैभवमयी हुई। उनकी सहज मृत्युसे विश्वकी नैतिक-शिला इतनी डॉवाडोल न हुई होती जितनी इस मृत्युसे हुई। भारतीय-स्वतंत्रताके लिए ही गांधीजीका जन्म नहीं हुआ बल्कि विश्वकी एक नयी व्यवस्थाके लिए उनका जन्म था। जीवनके प्रत्येक अंगपर गांधीजीने अपनी छाप छोड़ी है। भले ही कुछ दिनोंतक प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ प्रतिवर्त्ती रहें पर उनकी मृत्युसे उत्पन्न शक्तियाँ एक नयी व्यवस्थाका सर्जन करेंगी।

० ० ०

महात्माजी अमर हैं। उनका संपूर्ण जीवन भारतके लिए एक संदेश था। उनकी मृत्युसे उनके आदर्शोंने सभी विरोधिनी शक्तियोंपर विजय प्राप्त की है और मुझे विश्वास है कि समयपर उन्हीं सिद्धांतोंकी आधार-भूमिपर एक नये समाजकी प्रतिष्ठा होगी। जिस सिद्धांतके लिए वे जिये और मरे वह एक दिन अवश्य ही सफल होगा।

❀

माननीय विमलचन्द सिन्हा

[मन्त्री उद्योग और यातायात विभाग : पश्चिमी बंगाल]

बिना महात्माजीके भारतका स्वरूप-चिंतन अत्यंत कठिन था। हमें आज इस बातकी शपथ ले लेनी चाहिये कि हम इस देशमें सांप्रदायिकताको कभी बढ़ने नहीं देंगे।
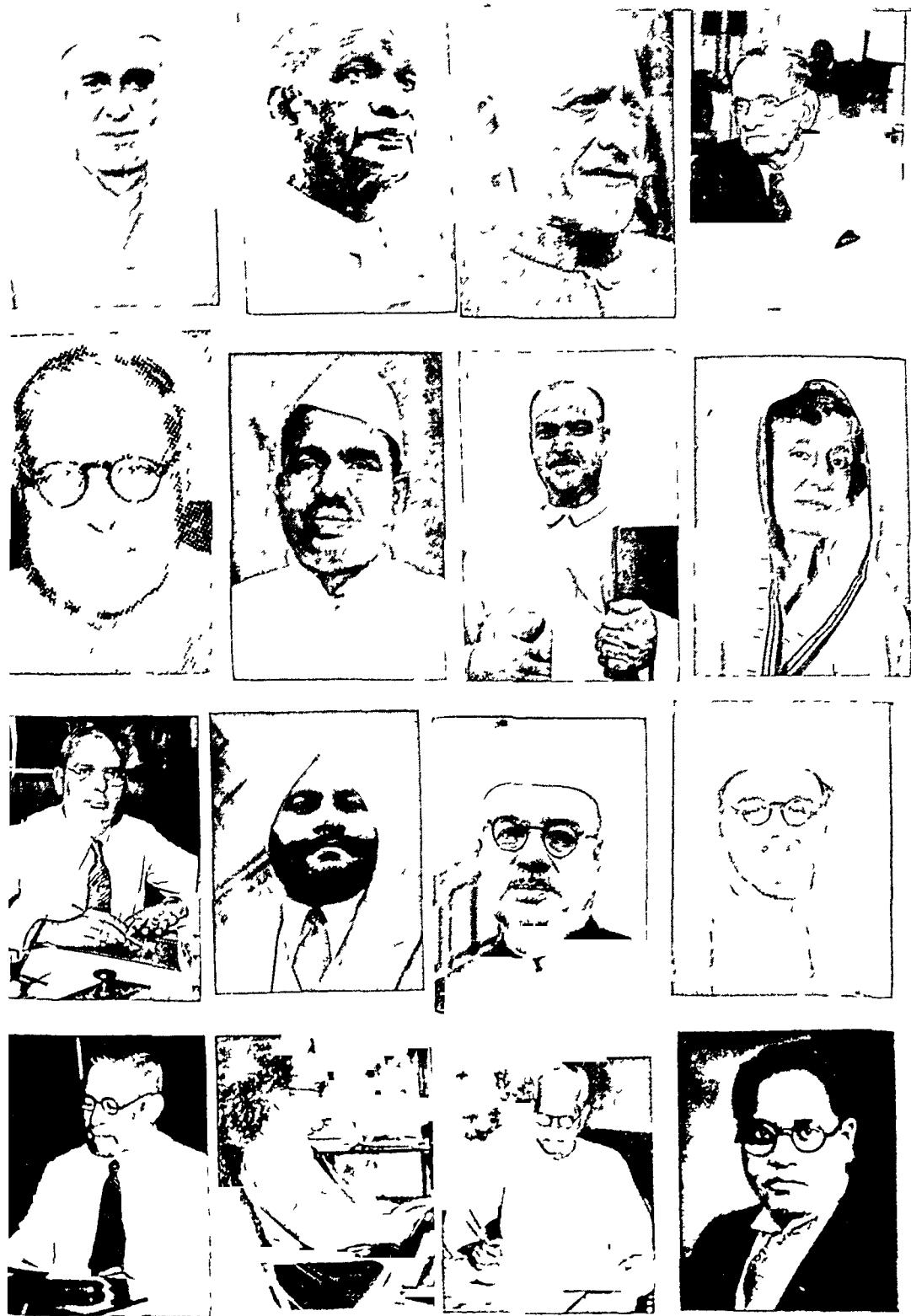
केन्द्रीय मंत्रिमण्डलके माननीय सदस्य प्रथम पंक्ति—१—पं० जवाहरलाल नेहरू, प्रधान मन्त्री, २—सरदार वल्लभभाई पटेल, उप-प्रधान मन्त्री, ३—मौलाना अबुल कलाम आजाद (शिक्षा), ४—श्री एन गोपालस्वामी एयगर। द्वितीय पंक्ति, ५—श्री क्षितीशचन्द्र नियोगी (पुनर्वासन), ६—श्री जगजीवनराम (श्रम) ७—डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी (उद्योग तथा पूर्ति), ८—राजकुमारी अमृतकौर (स्वास्थ्य), तृतीय पंक्ति ९—श्री षण्मुखम् चेट्टी (अर्थ) १०—सरदार बलदेवसिंह (रक्षा), ११—श्री जयरामदास दौलतराम (खाद्य) १२—श्री रफी अहमद किदवई (डाक-तार), चतुर्थ पंक्ति, १३—डाक्टर जान मथाई (यातायात), १४—श्री सी एच भाभा (व्यापार); १५—श्री विष्णु नरहरि गाडगिल (विद्युत तथा खान), १६—डाक्टर भीमराव अम्बेडकर (कानून)

युक्तप्रान्तीय सरकारका मंत्रिमंडल

श्री सम्पूर्णानन्द

प० श्रीकृष्णदत्त पालीवाल

श्री लालबहादुर शास्त्री
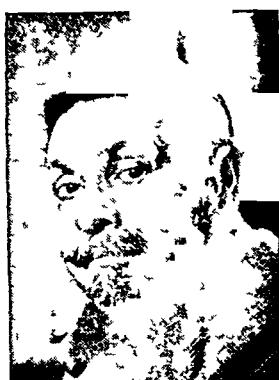
श्री एन० ए० शेरवानी

श्री चन्द्रभान गुप्त
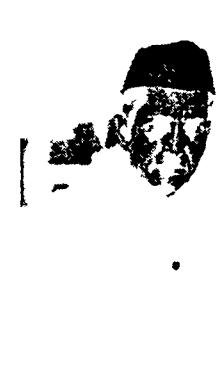
श्री आत्माराम गोविन्द खेर

ठाकुर हुकुम सिंह

श्री गिरधारी लाल

हाफिज मुहम्मद इब्राहिम

प० केशवदेव मालवीय

माननीय एच. सी. नस्कर
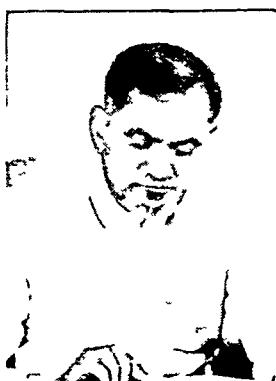
[मंत्री जंगल विभाग: पश्चिमी बंगाल]

महात्मा गांधीके आकस्मिक निधनपर मैं अखिल भारतीय हरिजन संघकी ओरसे परमात्मासे प्रार्थना करता हूँ कि उनकी दिवंगत आत्माको सद्‌गति प्रदान करे। परिगणित जातिवाले उनके आदर्शोंसे अनुप्राणित होकर उनके अपूर्ण कार्योंको पूरा करें, मैं यही चाहता हूँ।

० ० ०

महात्मा गांधीको अमर बनानेका सर्वोत्तम उपाय यह है कि हम उनके सिद्धांतोंपर चलें। हमारी अदूरदर्शिता ही गांधीजीकी मृत्युका कारण है। वर्षोंसे हमने साम्प्रदायिकताका विष फैलाया और वह महात्माजीकी मृत्युका कारण हुआ।

महात्माजी आजीवन हिंदू-मुस्लिम एकताके समर्थक थे और शोषण-विहीन समाजकी स्थापना करना चाहते थे। हम अपने हृदयका शोधन करें, हिंसा तथा असत्यको दूर करें और परस्पर प्रेम करना सीखें। हमें ऐसे समाजकी स्थापनाके लिए प्रयत्नशील होना चाहिये जिसमें एक मनुष्य दूसरेका शोषण न करे। यदि हम ऐसा नहीं कर सकते तो हमें लज्जित होना चाहिये और महात्माजीके देशके निवासी होनेका गौरव त्याग देना चाहिये।

❀

श्री मुहम्मद अली

[भूतपूर्व मंत्री: बंगाल]

महात्मा गांधीकी मृत्युके कारण जो हानि हुई है उस अपार दुःख, असह्य वेदना और अपूरणीय क्षतिको व्यक्त करनेके लिए समुचित शब्द ही नहीं बने हैं। अनाथ भारतका हृदय विदीर्ण हो उठा, जनताकी आँखोंमें आँसू छलछला आये और सहानुभूतिमें सारा विश्व रो पड़ा। इतिहासमें ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिलता जिसके निधनपर इतना विश्वव्यापी शोक मनाया गया हो। आइये, अब हम अपने हृदय-मंदिरमें शांति, सद्भावना, प्रेम और स्नेहकी उनकी अमर शिक्षाओं-को बिना किसी भेदभावके प्रतिष्ठित करें।

श्री ए. एफ. एम. अब्दुर्रहमान

[मुसलिम लीगी दलके नेता : पश्चिमी बंगाल]

धर्म तथा पवित्रताका पथ प्रकाशित करनेवाली ज्योति बुझ गयी।

❀

सर आर्थर ट्रेवर हेरिस

[प्रधान न्यायाधीश : प्रधान न्यायालय, कलकत्ता]

गांधीजीका वध करनेवाली गोलियोंकी प्रतिध्वनि जगतके सभी देशोंमें व्याप्त हो गयी। सभ्य जगतमें यह बात मान ली गयी है कि गांधीजीकी दुःखद मृत्युसे शांति एवं न्यायके पक्षको गहरा धक्का लगा है। भारतके सभी लोगोंको उनकी आकस्मिक मृत्यु असह्य हो गयी है। विपत्तिमें धैर्य्य, सरलता, विनय, दयालुता, सहनशीलता और सत्य उनके विशेष गुण थे।

भारतकी स्वतन्त्रता उनकी देन है। जगतके पवित्र शहीदोंमें उनको स्थान मिल गया है। आदर्शोंके लिए वे मरे। उनके जीवनकी पवित्रता हमारा पथ-प्रदर्शन करे और हम उनके आदर्शोंको पूर्ण करनेमे समर्थ हो।

सर प्रमथनाथ बैनर्जी

[कुलपति : कलकत्ता विश्वविद्यालय]

निराश हृदयके अंतरालसे निकले हुए आँसू अबतक सूखे नहीं हैं। आज विश्वका कण-कण रो रहा है। नगर और प्रासाद, गाँव और वृक्ष, झोपड़ियाँ और राजमहल, दरिद्र और वैभवशाली, सभी एक स्वरसे रो रहे है। मानवताके सर्वोत्तम पुत्रके निधनपर जो क्रंदन आज सबके कंठसे फूट पड़ा है, उसमे तनिक भी कृत्रिमता नहीं है। विश्वकी जो उच्च और धार्मिक भावनाएँ सृष्टिके आदिकालसे कलुषित शक्तियोंके विरुद्ध संघर्ष करती आयी है, महात्मा गांधी उन सबके मूर्तिमान प्रतीक थे।

बिना किसी भेदभावके वे समस्त मानवताके सर्वप्रथम सबसे बड़े सेवक थे। उन्होंने भारतीय दर्शनोंका तत्त्व पूर्णतः अनुभव किया था। दो महा-युद्धोंने धरतीपर जिस क्रूरता, हिंसा और निरंकुशताका सर्जन किया है और उसके कारण जिस अन्धकारसे आज सारा संसार आच्छन्न है, उसमें प्रकाश-पुंजकी भाँति अवतरित होकर पथभ्रष्ट मानवताको सच्चा मार्ग दिखानेका श्रेय केवल महात्माजीको ही प्राप्त है। आज दो सहस्राब्दी पूर्व ईसाकी मृत्युकालसे 'सत्य क्या है' की जो समस्या पश्चिमने विश्वके सामने रखी थी, पूर्वके इस महर्षिने उसका समाधान उपस्थित किया। उनके लिए ईश्वर ही सत्य था और सत्य ही ईश्वर। हमने जो पाप आज किया है, केवल पश्चात्तापसे उसका प्रायश्चित्त नहीं हो सकता। गौतम और ईसा जिस भाँति युग-युगसे पूजित होते आ रहे हैं, वैसे ही बापू भी पूजित होंगे और यदि मानव उनके उपदेशोंपर चल सका तो यहीं पृथ्वीपर स्वर्गीय नन्दन-काननकी सुख-शांतिका साम्राज्य छा जायगा।

० ० ०

बापूने हमें वह मार्ग दिखाया जिसपर हमें भविष्यमें चलना चाहिये। विश्वके अभ्युत्थान और कल्याणका केवल वही एक मार्ग सदैव रहेगा जिसका उन्होंने उपदेश दिया है।

❀

आचार्य क्षितिमोहन सेन

[आचार्य शान्ति निकेतन]

आजका दिन प्रार्थना तथा आत्म-शुद्धिका है, जिससे जीवनमें हमारी श्रद्धा हो कि वह मृत्युसे बड़ा है। जो राष्ट्रीय दुर्घटना हुई है और जिसने हम सबको सतप्त कर दिया है उसके उत्तरदायित्वसे हम लोग अलग नहीं हो सकते। प्रत्येक व्यक्ति, जो घृणा और लालचके पापमें सम्मिलित है, इसमें सहायक हुआ है। हत्यारा उस हिंसाका प्रतीक मात्र है जो देशमें व्याप्त हो रही है। मनसे, वचनसे, कर्मसे हिंसाको त्यागनेके पश्चात् ही हमें गांधीको श्रद्धाञ्जलि अर्पित करनेका अधिकार है। यदि आत्मा अमर है तो गांधी मर नहीं सकते।

❀

श्री सुधीर चन्द्र राय चौधरी

[मेयर : कलकत्ता कारपोरेशन]

ऐसे संकटपूर्ण समयमें जब मानव जातिको उनकी सबसे अधिक आवश्यकता थी, महात्माजीका महाप्रयाण केवल किसी एक राष्ट्रकी विपत्ति नहीं है वरन् समस्त विश्वकी सबसे बड़ी शोकपूर्ण दुर्घटना है।

ऐसे महापुरुषकी स्तुति करना सर्वथा असंभव है जो स्तुति-प्रशंसासे भी ऊपर था और जिसका नामोच्चारणमात्र लाखों-करोड़ों मनुष्योंके लिए स्तुतिका मूलमंत्र था। कवीन्द्र रवीन्द्र जैसे प्रतिभाशाली कविके द्वारा ही ऐसे सर्वोच्च अलौकिक महापुरुषके चरित्र-सौंदर्यका शब्द-चित्रांकन किया जा सकता है। उनके जीवनमे जो युग-प्रवर्त्तक घटनाएँ भरी पड़ी थी उनका रहस्य उद्घाटित करनेके लिए बासफोल्डके समान भाषापर अधिकार होना आवश्यक है और उनके सामाजिक तथा राजनीतिक सेवाओंकी घोषणा करनेके लिए एडमण्ड वर्कके समान वक्तृत्व-शक्तिकी आवश्यकता है।

❀

सर अब्दुल हलीम गजनवी

[भूतपूर्व मेयर कलकत्ता]

असत्पर सत्की, हिंसापर अहिंसाकी तथा नृशंसतापर दया और उदारताकी विजयका अंतिम अभिनय दिखानेके लिए गांधीजीने अपना जीवन आहुत कर दिया।

विश्वका सर्वश्रेष्ठ मानव आज चला गया। इस उन्मत्त संसारमें, जहाँ प्रत्येक क्षण विनाशके अधिक शक्तिशाली साधनोंके आविष्कारका प्रयत्न होता रहता है, यह विचित्र महापुरुष, यह स्थितप्रज्ञ हमारे बीच करुणापूर्ण स्नेह और वीरतापूर्ण साधुताका संदेश लेकर आया। उनकी वाणीका महत्त्व न समझनेके कारण अधिकतः लोगोंने उन्हे पागल समझा। आज उनके निधनके बाद उनका तात्पर्य लोग धीरे-धीरे समझ रहे है। इसी कारण उनका जीवन एक महाकाव्य है जो उनकी मृत्युमे निहित है। भावी युगके निरंतर चिंतनके लिए यह एक महत्त्वपूर्ण विषय है और उसका चिंतन करते हुए हम आजतक जितने उपदेशक महात्मा हो चुके है उन सबके संदेशामृतका पान कर सकते है।

इस हृदय-विदारक समाचारसे भयंकर धक्का लगा है। समवेदनाके लिए शब्द ही नहीं मिलते। महात्माजी मरे हैं अमर होनेके लिए ।

❀

मानवीय सैयद बदरुदुजा

[भूतपूर्व मेयर : कलकत्ता]

एक विनम्र मुसलमान होनेके नाते आज उस महात्माकी स्मृतिमे अपनी अश्रुधाराकी श्रद्धाञ्जलि समर्पित कर रहा हूँ जो वर्तमान युगमे हिंदके मुसलमानोंका सबसे बडा शुभचिंतक था।

किसी भी राष्ट्रके इतिहासमे ऐसे क्षण आ जाया करते है जब आँसुओंकी मौन श्रद्धाञ्जलि अभिव्यक्तिसे अधिक भावाभिव्यंजक होती हैं। आदर्श और उज्ज्वलचरित बापूके जीवनकी आकस्मिक और शोकपूर्ण समाप्तिने हमारे जीवनमे आज वैसा ही क्षण ला दिया है।

इस महापुरुषमे न जाने क्या अलौकिक आकर्षण था, अद्भुत मोहक शक्ति थी जिसके कारण चालीस करोड जनताके हृदयकी अभिलषित स्वतंत्रता बापूके जीवनमे ही हमे प्राप्त हो गयी। उनकी मृत्युसे विश्वकी सर्वश्रेष्ठ विभूति उठ गयी। स्वातन्त्र्य-संग्राममे जिस प्रणालीकी सहायतासे उन्होंने सफलता प्राप्त की, विश्व-स्वातन्त्र्यके इतिहासमे वह अभूतपूर्व घटना है। वे शांति, सत्यता और प्रेमके साकार प्रतीक थे। अहिंसा और करुणा उनके जीवनकी स्फूर्ति थी।

हम मुसलमानोंके लिए तो वे पथ-प्रदर्शक, बधु और सबसे बड़े उपदेष्टा थे। साम्प्रदायिक विद्वेषके विरुद्ध लडते हुए उन्होंने अपने जीवनकी आहुति दे डाली। उनके जीवनकी महत्ता उनके दीर्घ जीवनमे नहीं है वरन् उन अनेक लक्ष्योंकी साधना है, जिनमे उनके जीवनका प्रत्येक क्षण निरत था, जिनमें उन्हे अद्भुत सफलता प्राप्त हुई और जिन क्षणोंमे पीड़ित मानवताके कष्ट-निवारणमे करुणार्द्र चित्तसे वे लगे रहे। उनके शरीरका अंतिम रक्त-कण भी इसीलिए बहा। उनकी मृत्यु शहीदोंके समान हुई। उच्च आदर्शोंको प्रतिष्ठित करनेके लिए संघर्ष करते हुए वे मरे। हमारी कामना है कि उनके रक्तकी यह आहुति उच्च आदर्शोंकी स्थापना करनेमे सफल हो।

❀

आदरणीय लार्ड बिशप फास वेस्टकाट

[भूतपूर्व मेट्रोपालिटन : पश्चिमी बंगाल]

महात्मा गांधीकी क्रूर हत्याका समाचार सुनते ही हम शोकाभिभूत हो गये है। इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती कि कैसे महात्माजी जैसे संत महापुरुषको मारनेकी कोई व्यक्ति इच्छा कर सका होगा, जिसका सारा जीवन अपने देशवासियोंकी कल्याण-साधनमें बीतता था और जो सभी भाँति उनकी सहायता करनेकी चिंता किया करता था। कुछ दिनों पूर्व, जब मै दिल्लीमें था, मैने उन्हें देखा था। जिस समय मै उनसे भेंट करने गया था उस समय वह नयी दिल्लीकी सीमापर हरिजनोंके लिए बने हुए एक छोटेसे घरमें रहते थे। कुछ दिनोंसे वह बिड़ला-भवनमें रहने लगे थे, जो भवन उस हरिजन बस्तीवाली कुटीसे भिन्न था। पर, मै समझता हूँ, वहाँ रहनेका यह कारण था कि उन्हें नेताओंका सदा निरीक्षण करते रहनेकी आवश्यकता पड़ा करती थी और यह कार्य हरिजनोंके मकानमें रहकर संभव नहीं था!

० ० ०

कितनी मूर्खतापूर्ण यह हत्या थी। उस मनुष्यकी हत्या जिसके जीवनका लक्ष्य दलितों, पीड़ितों और अस्पृश्योंकी सहायता करना था, जिसके जीवनका ध्येय कष्ट सहकर भी सेवा करना था!

किंतु इसी रीतिसे संसार महापुरुषोंके साथ व्यवहार करता आया है। ईसाका शूलीपर चढ़ाया जाना इस बातका प्रतीक है कि संसार महात्माओंके साथ कैसा व्यवहार करता है।

❀

"अहिंसा सत्यकी गवेषणाका अधिष्ठान है। अहिंसा और सत्य एक दूसरेके साथ इस तरह गुथे हुए हैं कि उनको खोलकर अलग अलग करना बहुत मुश्किल है। वे सिक्केकी दो बाजुओंके समान हैं, बल्कि यों कहिये कि वे एक धातुकी गोल चिकनी और बिना छापवाली चक्रीकी दो बाजुएँ हैं। कौन कह सकता है कि उनमेंसे कौन सी सीधी और कौन सी उलटी हैं? फिर भी अहिंसा साधन है और सत्य साध्य। साधनाका साधनत्व इसीमें है कि वह अव्यवहार्य न हो। इसलिये अहिंसा हमारा परम धर्म है। यदि हम साधनकी रक्षा करें तो आज नहीं तो कल हम साध्यको प्राप्त कर ही लेंगे।" —गांधीजी

❀

श्री सुरेन्द्र मोहन घोष

[अध्यक्ष : प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी, पश्चिमी बंगाल]

महात्माजीकी हत्याके समाचारसे आज समस्त राष्ट्र स्तब्ध हो गया है। एक विक्षिप्त मनुष्यने आज विश्वको सर्वश्रेष्ठ महामानवसे विहीन कर दिया। महात्माजीने अपने नश्वर शरीरकी मृत्युको सदैव उपेक्षाकी दृष्टिसे देखा और अब उनकी आत्मा भी सदाके लिए मृत्युको तुच्छ समझेगी। उन्होंने केवल स्वतन्त्रता ही नहीं, वरन् बहुत कुछ दिया। उन्होंने मानवको उसकी विनष्ट नवचेतना फिरसे प्रदान की। हमारे सामने उन्होंने नये आदर्श और नयी सामाजिक भावना प्रतिष्ठित की। इन सबसे बढ़कर उन्होंने साधारणसे साधारण व्यक्तिको भी मानवताके उच्च स्तरपर ला खड़ा किया। कवीन्द्र रवीन्द्रके शब्दोंमे कह सकते हैं—'जिसकी हमने हत्या कर डाली, वही हमारा पथ-प्रदर्शन करेगा।' अपनी सदेहशीलताके कारण हमने उनका महत्त्व समझनेमे भूल की, अपने क्रोधके कारण हमने उन्हे मार डाला, पर अब हम लोग उनके प्रति अपने प्रेमके कारण उनका गौरव समझेंगे, क्योंकि उनकी साक्षीभूत आत्मा हम सबमे व्याप्त हो गयी है। इस भॉति वे मृत्युञ्जय हो गये हैं।

श्री कालीपदो मुखर्जी

[मंत्री प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी, पश्चिमी बंगाल]

भारतीय इतिहासकी इस सकटापन्न स्थितिमे महात्माजीका अभाव घातक सिद्ध हो सकता है। वह राष्ट्रके पिता ही नहीं थे, वरन् निकटतम मित्र और परामर्शदाता भी थे। उन्होंने ही हमे विजयकी शुभ घडीतक पहुँचाया। अहिंसा, सत्य और सत्याग्रहका अमोघ अस्त्र उन्होंने हमे प्रदान किया, तथा चतुर गुरुकी भॉति स्वातंत्र्य-सग्राममे लड़नेवाले देशको उस अस्त्रका उचित प्रयोग करना सिखाया। उन्होंने सारे विश्वको दिखला दिया कि घातक शस्त्रास्त्र और हिंसा ही ऐसे साधन नहीं है जिनसे देश स्वाधीनता प्राप्त कर सकता है।

इसलिए भारतवर्षको महात्मा गाधी और उनकी युद्ध-कलापर महान गर्व है। खेद है कि महात्माजी अपने लगाये हुए वृक्षको फला-फूला हुआ न देख सके। उनके स्वराज्यका चित्र किसान-प्रजा-मजदूर-राजका था। वे धनिकोंके

कारण उत्पन्न होनेवाले संकटसे पूर्णतः परिचित थे, इसलिए आर्थिक विकासके क्षेत्रमे भी उनकी योजना अहिसा और सत्यके सहारे ऐसी स्थिति उत्पन्न करनेकी थी जिसमें ऊँच-नीचका भेदभाव न रह जाय, जिसमे एक दूसरेका शोषण न हो सके। सभव था, आर्थिक-क्षेत्रमे भी उनके साधन सफल होते किंतु ईश्वरकी इच्छा कदाचित् कुछ और ही रही।

महात्माजी समस्त मानवताके मित्र और शुभचिंतक थे, किंतु हरिजनोंपर उनका ध्यान विशेष था। पीड़ितोंकी रक्षा उनका धर्म था। आधुनिक युगके मनुष्योंमे महात्माजी मानव शरीरमें विश्व-बंधुत्व और शांतिके साक्षात् अवतार थे। अपने लक्ष्यकी सिद्धिके लिए उन्होंने अपना जीवन बलिदान कर दिया। अनेक बार अनशन कर उन्होंने अपने प्राणोंकी बाजी लगा दी। नोआखाली, बिहार, कलकत्ता, दिल्ली, चाहे जहाँ कही भी एक मनुष्यने दूसरे मनुष्यसे घृणा दिखाई, उनकी आत्माको समान पीड़ा हुई। स्वतंत्रता प्राप्त करनेके पश्चात् अपने लक्ष्य और साम्प्रदायिक-ऐक्यकी प्राप्तिमे उन्होंने अपनी आहुति दे दी। यह शानदार जीवनका शानदार अंत था। इसलिए हमे पूर्ण विश्वास है कि इस शहीदका खून जिस उद्देश्यकी पूर्तिमे बहा है, वह निरर्थक न जायगा और शांति, मैत्री एवं सहिष्णुतासे पूर्ण एक नये युगका आरम्भ करनेमे सफल होगा।

सर बी० पी० राय

[भूतपूर्व अध्यक्ष: भारतीय नेशनल लिबरल फेडरेशन तथा बंगाल कौंसिल]

महात्माजी शहीदोंके समान मरे। उनका जीवन अहिंसाके यज्ञमे आहुत हो गया। हमें सच्चे हृदयसे प्रार्थना करनी चाहिये कि उनका पावन आदर्श अंततः सफल हो और शीघ्र ही विभक्त भारतको एक करे। उनके चले जानेपर भी उनका जीवन भविष्यत् और वर्तमानके करोड़ो भारतवासियोंको चिर कालतक स्फूर्ति प्रदान करता रहेगा। भारत एक स्वरसे घोषित करेगा—'गांधीजी मर गये, फिर भी वे अमर हैं।'

सैयद नौशेर अली

[अध्यक्ष : जमैयत-उल्-उलेमा-हिन्द, बगाल]

भारतकी राजनीतिक स्वतंत्रता और आध्यात्मिक उन्नतिकी चेष्टामे महात्मा गाधी जिये और मरे। वे केवल भारतकी ही नहीं समस्त विश्वकी मानवताके लिए एक वरदान थे।

माननीय रोवेन हाज

[अध्यक्ष यूरोपियन-सघ]

महात्मा गाधीके मर्मस्पर्शी मृत्यु-समाचारसे यूरोपियन समाज स्तब्ध है। आशा है, भविष्यमे सभी जातियाँ मेलसे रहेंगी और गाधीजीकी सत्य-अहिंसाकी सिद्धिके लिए प्रयत्नशील होंगी।

महात्मा गाधीसे बढकर मानवताका कोई दूसरा प्रेमी नहीं था और अहिंसाका उनका सिद्धांत संसारके लिए एक नया आदर्श है।

श्री के. एन. दलाल

[अध्यक्ष : नोआखाली पीडित-सहायता-समिति]

महात्माजीके अपूर्ण कार्योंको पूरा करनेका उत्तरदायित्व आज उन लोगोंका सर्वश्रेष्ठ कर्त्तव्य हो गया है जो उनके बाद बचे हुए हैं। गाधीजी वर्तमान युगके सर्वश्रेष्ठ उद्धारक थे। उनके आदर्शोपर चलना ही उस दिवगत आत्माके प्रति सबसे बडी श्रद्धाञ्जलि होगी।

"सत्य असत्यपर विजय प्राप्त करता है, प्रेम द्वेषको परास्त करता है और ईश्वर निरतर शैतान के दाँत खट्टे करता है।" —गाधीजी

❀

श्री रामानन्द दास

[मंत्री : अखिल भारतीय दलितजाति-संघ]

महात्मा गांधीका यह अप्रत्याशित निधन सामान्यतः समस्त विश्वकी और विशेषतः भारत तथा पाकिस्तानकी अपूर्णीय क्षति है। भारतके आठ करोड़ हरिजन आज बापूके इस दुःखद और असामयिक महाप्रयाणसे अनाथ हो गये है। महात्माजी निश्चय ही इस युगके सर्वश्रेष्ठ महापुरुष थे।

श्रीमती रेणुका राय

[विधान-परिषद्की सदस्या तथा प्रसिद्ध नेत्री]

यद्यपि बापू अब शारीरिक रूपसे हमारे बीच नहीं है, तथापि उनकी अमर आत्मा हमारे साथ रहेगी। वह अंधकारपूर्ण संकट-कालमे भी हमारा मार्ग प्रकाशित करती रहेगी, हमे सान्त्वना देगी तथा सामयिक विपत्तियोंसे हमें मुक्त करेगी। भारत आदि कालसे बड़े-बड़े ऋषियों, महात्माओं और दार्शनिकोकी भूमि रहा है। आध्यात्मिक विकास ही इसके गौरवका कारण रहा है, किंतु महात्मा गाधी ही एक ऐसे व्यक्ति हुए जिन्होंने समस्त संसारको बतलाया कि राज-कार्य और राजनीतिमें भी सत्य और नैतिकताके आधारका त्याग नहीं होना चाहिये।

अब महात्माजीके अभावमें हमारा यह सर्वप्रथम कर्त्तव्य हो जाता है कि हम अपना हृदय टटोले, साहस और निष्ठासे अपने मतभेदोंको दूर कर ऐक्य स्थापित करे और बापूके मार्गका अनुसरण कर उनका जीवन-लक्ष्य सांप्रदायिक मैत्री प्राप्त करे। नारी होनेके नाते भारतकी समस्त देवियोंसे मेरा अनुरोध है कि जिस महात्माका संदेश शताब्दियोंके रूढिगत बंधनों और अंध-परम्पराओंकी कठोर दीवारको भी भेदकर उनतक पहुँचा है, उस महात्माकी पुकारको वे अनसुनी न करे। उनके कार्योंको पूरा करनेके प्रयासमे ही लगकर हम उनकी स्मृतिका उचित सम्मान कर सकेंगे।

❀

सुश्री लीला राय

[प्रसिद्ध क्रान्तिकारिणी तथा मजदूर नेत्री]

समस्त विश्वकी दृष्टिमे महात्माजी शाति और बंधुत्वके साकार प्रतीक थे। अपने अहिंसा-सिद्धातमे बल और साहसका संचार कर महात्माजीने अंग्रेजोंको भारत छोडनेके लिए विवश कर दिया। राष्ट्रकी जनताका आज यह प्रमुख कर्त्तव्य है कि बापूकी पुण्यस्मृतिमे देशको साम्प्रदायिकतासे दूर रखे।

❀

श्री हेमन्त कुमार बोस,

[प्रसिद्ध काग्रेस नेता]

उन्होने भू-लुण्ठित राष्ट्रका उत्थान किया। उनकी मृत्युके कारण भारतके धवल कीर्तिपर धब्बा लगा है। विश्व-शातिके लिए गाधीवादके अतिरिक्त और कोई दूसरा मार्ग नहीं है।

श्रीमती ई एम. रिकेट्स

[एंग्लो-इन्डियन नेत्री : कलकत्ता]

महात्माजीके हृदयमे सत्यके प्रति निष्ठा एव विश्वास इतना प्रबल था कि कोई भी उससे प्रभावित हुए विना नहीं रह सकता था। उनका विरोध-पक्ष स्वयं समाप्त हो जाता था। हम लोग, जो उनकी विजयपर विजय देख चुके है, विश्वास करते है कि वह अजेय ही नहीं थे किंतु अमर भी है।

❀

कलकत्ता विश्वविद्यालय

[सिनेटका प्रस्ताव]

विश्वविद्यालयकी यह सिनेट विश्ववन्ध सर्वश्रेष्ठ मानव-संतानके निधन-पर गंभीर शोक प्रकट करती हुई उनकी स्मृतिमें अपनी विनम्र और सम्मानपूर्ण श्रद्धाञ्जलि अर्पित करती है। महात्माजीने जो अनंत प्रकाश दान किया है वह भारतको अहिंसा, सत्य, शांति और सद्भावनाके पथपर अग्रसर करनेमे, ईश्वर करे, सफल हो।

❀

पश्चिमी बंगाल सरकारका प्रस्ताव

"पश्चिमी बंगालकी सरकार विश्वकी समस्त मानवताके शुभचिंतक महात्मा गांधीकी हत्याकी भर्त्सना करती है। हमारी क्षति महान है, हम असहाय हो गये हैं। हमारी प्रिय मातृ-भूमिको आर्थिक तथा सामाजिक स्वतत्रता दिलानेवाला, हमारा पथ-प्रदर्शक, हमारा हितैषी, हमारा उपदेष्टा हमसे खो गया। ईश्वर उनकी आत्माको शांति प्रदान करे, भारतको अपने लक्ष्यकी ओर ले जानेमे मार्ग-दर्शक हो। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने दैनिक जीवनमें महात्माजीके सत्य तथा उदारताके संदेशका हम पालन करेंगे।

पश्चिमी बंगालकी सरकार भारत-सरकारके निश्चयसे सहमत है कि हिंसा तथा घृणाको,जो शताब्दियोंसे देशमें सजीव हो रही है, जिनसे देशकी स्वतत्रता सकटमे हैं और जो हमारे देशको कलंकित कर रही है, नष्ट करना चाहिये। सरकार पश्चिमी बगालकी जनतासे प्रार्थना करती है कि इस कार्यमे सरकारकी सहायता करे। सरकारको विश्वास है कि पश्चिमी बगालके निवासी सरकारसे इस बातमे सहमत होंगे कि इन शक्तियोंका निश्चित रूपसे न्यायपूर्वक दमन किया जाय और उनसे निवेदन करती है कि वह कानूनको अपने हाथोंमें न लेकर सरकारसे सहयोग करे।

भारत-सरकारने निश्चय किया है और पश्चिमी बंगालकी सरकार भी इससे सहमत है कि किसी प्रकारकी निजी सेना इस प्रांतमे नहीं संघटित की जा सकती। सरकार जनतासे, विशेषतः सरकारी कर्मचारियोंसे, निवेदन करती है कि वे इस नीतिको कार्यान्वित करनेमे सरकारका साथ दें।"

अनुक्रमणिका